ISSN: 2348-5558

शिक्षा संवाद

शैक्षिक विमर्श एवं साहित्य की पत्रिका

वर्षः 9/ अंकः 01-02/ जनवरी-दिसम्बर, 2022
सयुंक्त अंक

सम्पादकीय सलहाकारः डॉ. चाँद किरण सलूजा
सम्पादकः डॉ. वीरेंद्र कुमार चंदोरिया
सह- सम्पादकः पूजा सिंह

संवाद शिक्षा समिति, दिल्ली का प्रकाशन

शिक्षा संवाद

शैक्षिक विमर्श एवं साहित्य की पत्रिका

ISSN: 2348-5558

(Peer-Reviewed)
Refereed Journal

अर्ध-वार्षिक

वर्ष: 9/ अंक: 01-02/ जनवरी-दिसम्बर, 2022
सयुंक्त अंक

प्रकाशन की तिथि
31 दिसम्बर, 2022

सम्पादकीय सलहाकार
डॉ. चाँद किरण सलूजा

सम्पादक
डॉ. वीरेंद्र कुमार चंदोरिया

सह- सम्पादक
डॉ. पूजा सिंह

संवाद शिक्षा समिति, दिल्ली का प्रकाशन, दिसम्बर-2022

पत्रिका के सर्वाधिकार शिक्षा संवाद के पास है। इस पत्रिका का गैर-व्यावसायिक उपयोग किया जा सकता है। ऐसा करते हुए सम्पादक व प्रकाशक का ज़िक्र करना ज़रूरी है। इसके अलावा किसी अन्य उपयोग के लिए, मसलन, पाठ की रीमिक्सिंग, उसमें बदलाव या उसे आधार बनाते हुए कुछ करने के लिए प्रकाशक व सम्पादक से अनुमति लेना ज़रूरी है।

शिक्षा संवाद

शैक्षिक विमर्श एवं साहित्य की पत्रिका

वर्ष: 9/ अंक: 01-02/ जनवरी-दिसम्बर, 2022

सयुंक्त अंक

संरक्षक: अध्यक्ष, संवाद शिक्षा समिति

सम्पादकीय सलहाकार: डॉ. चाँद किरण सलूजा

सम्पादक: डॉ. वीरेंद्र कुमार चंदोरिया

सह- सम्पादक: पूजा सिंह

सम्पादन मण्डल : सदस्य

प्रो. लोकनाथ मिश्रा, मिज़ोरम विश्वविद्यालय, मिज़ोरम

डॉ. आभा श्री, सह-आचार्या,मिज़ोरम विश्वविद्यालय, दिल्ली

डॉ. तुषार गुप्ता, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश

डॉ. प्रवीण कुमार, श्री राम इंस्टीट्यूट ऑफ टीचर एडुकेशन, दिल्ली

डॉ. रितेश सिंह, इंस्टीट्यूट ऑफ होम इक्नॉमिक्स, दिल्ली विश्वविद्यालय

डॉ. हेदर अली, शिक्षा संकाय,मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, तेलंगाना

संपर्क

शिक्षा संवाद

RZ-673/135, गली न. 19A, साध नगर, पार्ट -2, पालम कालोनी, नई दिल्ली 110045.

दूरभाष - 09868210822. (सम्पादक), ई मेल - sheakshiksamwad@gmail.com

सदस्यता राशि

	व्यक्तिगत	संस्थागत
एक प्रति	250	350
वार्षिक (2 प्रतियाँ)	400	600
दो -वर्षीय (4 प्रतियाँ)	800	1200
तीन वर्षीय (6 प्रतियाँ)	1000	1600
आजीवन (प्रकाशन तक)	15000	20000

शिक्षा संवाद की सदस्यता के लिय केवल बैंक ड्राफ्ट या चेक के माध्यम से 'संवाद शिक्षा समिति' दिल्ली के नाम भेजें।

आवरण चित्र : पूजा ने इंटरनेट और केनवा की मदद से बनाया है।

पाठकों एवं लेखकों हेतु दिशानिर्देश एवं शोध नियमावली

शिक्षा संवाद

शैक्षिक विमर्श एवं साहित्य की पत्रिका

'समकक्ष व्यक्ति समीक्षित जर्नल'

(PEER REVIEWED-REFEREED JOURNAL)

ISSN: 2348-5558

शोध आलेख भेजने संबंधी ज़रूरी निवेदन

शिक्षा संवाद अर्ध-वार्षिक पत्रिका है। इसका प्रकाशन संवाद शिक्षा समिति, नई दिल्ली करती है। एक वर्ष में दो सामान्य अंक 30 जून, और 31 दिसम्बर को प्रकाशित किए जाते हैं। रचना प्रकाशन हेतु स्वीकृत हुई या नहीं इसकी जानकारी प्रकाशन की तारीख के पंद्रह दिन पहले ही दी जाती है इससे पूर्व नहीं। ज्यादा जानकारी के लिए नीचे कुछ सामान्य सूचना इस प्रकार है-

(1) **आलेख का क्षेत्र:** शिक्षा और साहित्य

(2) **प्रकाशन का स्वरुप:** हमारी पत्रिका वर्तमान प्रकाशन तक केवल प्रिंट वर्जन में ही उपलब्ध है। हम छापकर कोई या किसी भी प्रकार का पीडीऍफ़ वर्जन भी नहीं भेज पाते हैं। सदस्यता के अनुसार तथा मांग के अनुरूप ही प्रतियां हम छपवाते हैं जिन्हें आपको प्रकाशक से खरीदनी होती है। हमारी पत्रिका कोई भी इम्पेक्ट फेक्टर स्केल अभी तक जनरेट नहीं किया गया है।

(3) **सामान्य अंक / विशेषांक:** हम हमेशा सामान्य अंक ही प्रकाशित करते हैं। भविष्य में विशेषांक प्रकाशित करने की योजना आवश्य है। जब भी विशेषांक लाने की योजना होगी तो पाठकों एवं लेखकों को पत्रिका के माध्यम से सूचित किया जाएगा।

(4) **तकनीकी पक्ष:** एक बार यदि आपकी कोई रचना शिक्षा संवाद के किसी अंक में प्रकाशित होती है तो उसके तुरंत बाद वाले अंक में आपकी रचना प्रकाशित नहीं होगी। हम 'एक वर्ष - एक रचना' की नीति का अनुसरण करते हैं। ऐसा करके हम अधिक लेखकों तक तथा अधिक पाठकों तक अपनी पहुँच बना सकते हैं। कुछ अन्य तकनीकी पक्ष जिनका ध्यान रखा जन चाहिए-

- भाषा : केवल हिंदी (नोट : शिक्षा संवाद में अंग्रेजी में आलेख नहीं छापे जाते हैं)
- फॉण्ट : केवल Unicode-kokila
- फॉण्ट साइज़ : 18

- सन्दर्भ : एंड नोट (फूट नोट अस्वीकार्य हैं।)
- फाइल : वर्ड 2007 - 2010
- पीडीऍफ़ फाइल नहीं भेजें।
- आलेख वाट्स एप पर स्वीकार नहीं कर सकेंगे।
- स्पेसिंग : Top 1 cm, Bottom 1 cm, Left 1 cm, Right 1 cm
- शोध-सार : 150 शब्द
- 'बीज शब्द/ Key Words' : न्यूनतम 5
- आलेख के अंत में निष्कर्ष अवश्य हो।
- सन्दर्भ में लिखने का नियम: APA 6 केवल
- लेखक का नाम, पद, पता, ई-मेल, मोबाइल नंबर आलेख के अंत में ज़रूर लिखें।
- हमारा ई-मेल पता है : shaikshiksamwad@gmail.com
- वर्तनी की अशुद्धियों का विशेष ध्यान रखें। आलेख में वर्तनी की अशुद्दियां होने पर आलेख अस्वीकृत होने के सर्वाधिक अवसर मौजूद रहते हैं।

(5) **संलग्न / Attachments**

- आलेख की मौलिकता और अप्रकाशित होने का सत्यापन। आप लेख भेजते समय लेख के साथ ही ई-मेल में ही लिखकर भेज सकते हैं अथवा प्रयास करें की यूजीसी द्वारा मान्यता प्राप्त किसी Plagrismsoftwere से प्राप्त रिपोर्ट संलग्न करें तो बेहतर होगा
- आपका फोटो और आलेख में शामिल फोटो, सारणियाँ, टेबल्स, ग्राफ आदि अलग से अटैच करके भेजें।
- आपका कोई एक पहचान पत्र जिसमें फोटो लगा हुआ हो।

(6) **प्राथमिकता**: सबसे पहले आलेख शामिल करते समय हम अपनी पत्रिका के सदस्यों को प्राथमिकता देते हैं। आपका आलेख स्वीकृत होने पर ही हम सदस्य बनने की अपील आपको भेजेंगे।

(7) **अंतिम निर्णय:** सामग्री चयन, सम्पादन और प्रकाशन का अंतिम निर्णय सम्पादक मंडल का रहेगा। हम आपकी रचना में सम्पादन के दौरान अपनी तरफ से कोई अंश जोड़ेंगे नहीं पर कुछ अंश ज़रूरत के अनुसार काट-छाँट करते हुए हटा सकेंगे। शोध पत्रों के मामले मे समीक्षकों की समीक्षा अनुसार ही निर्णय नैया जाएगा।

(8) **स्वैच्छिक:** आपको अपनी शिक्षा संवाद के प्रकाशित एक अंक या चयनित रचनाएँ पढ़कर एक पृष्ठ की लिखित टिप्पणी भेजनी होगी कि इस पत्रिका को लेकर आपकी राय क्या है? ताकि हम यह जान सकें कि आप पत्रिका की वैचारिकी से परिचित हैं कि नहीं।

(9) चयन का प्रोसेज:

Screening

शिक्षा संवाद में सबसे पहले प्राप्त रचना को सम्पादक द्वारा स्क्रीन करके चुना जाता है। इस स्तर पर रचना अस्वीकृत होते ही लेखक को तुरंत जवाबी ई-मेल भेजते हैं। हमारे यहाँ यह स्क्रीनिंग कहलाता है।

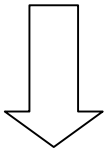

Review Process

चयनित रचनाओं को सम्बंधित एक्सपर्ट या एक्सपर्ट के पैनल के पास भेजा जाता है जो कंटेंट पर फाइनल निर्णय लेते हैं। इसे रिव्यू कहते हैं। जानकार व्यक्ति अपनी सीमाओं को स्वीकारते हुए रचनाकार के लिए संक्षिप्त टिप्पणी के साथ आलेख को स्वीकृत या अस्वीकृत करता है। यह निर्णय अनंतिम माना जाता है।

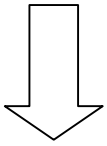

Proof Reading

तीसरी स्टेज पर हमारे सह-सम्पादक फोर्मेट और कंटेंट संबंधी अपडेट के लिए लेखक से सम्पर्क करके रचना को छपने योग्य बनाते हैं। यहाँ रचनाकार को गुणवत्ता के लिहाज से पत्रिका का सहयोग करना होता है। यहाँ भी गुणवत्ता बनाए रखने के क्रम में आलेख को ज्यादा दिक्कतभरा होने पर अस्वीकृत किया जा सकता है।

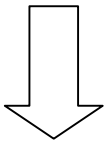

Ready to Print

यहीं अंतिम रूप से चयनित रचना की प्रूफ रीडिंग की जाती है। अंक छपने की तारीख से दस दिन पहले सभी रचनाएँ तकनीकी टीम के पास प्रकाशन हेतु भेजी जाती है। इस पूरी प्रक्रिया के बारे में सम्बंधित लेखक को लगातार अपडेट करने का प्रयास करते हैं। अंक छपने के बाद लेखक को प्रकाशित रूप को चेक करने के लिए ईमेल से शेयर किया जाता है। सभी की संतुष्टि के बाद अनुक्रमणिका जारी की जाती है।

प्रूफ हेतु ध्यान रखने योग्य बातें

1. सबसे उपर पहले विधा का नाम लिखें जैसे - कविता, शोध आलेख, आलेख, साक्षात्कार या कहानी आदि।
2. पहली पांच पंक्तियों में ही अगर वर्तनी की भारी अशुद्धियाँ हैं तो आलेख का अस्वीकृत होना तय हो जाएगा।
3. शुरुआती रिव्यू में भी चयन का एक ज़रूरी आधार वर्तनी की शुद्धता है।
4. रचना का शीर्षक और लेखक का केवल नाम लिखकर बोल्ड कर दें।
5. 'शोध सार' को बोल्ड करें।
6. 'बीज शब्द' को बोल्ड करें।
7. प्रत्येक पैरेग्राफ के बाद एक इंटर का गेप रखें।
8. पैरेग्राफ की शुरुआत में एक टैब लगाएं।
9. पूरे आलेख में किसी तरह की फोर्मेटिंग से बचें।
10. गणित के अंक अंतर्राष्ट्रीय मानक संख्या 1,2,3,4,5,6,7,8,9,10, में ही लिखें।
11. प्रत्येक सन्दर्भ जब हू-ब-हू कहीं से लिया गया है तो "...." कौमा के अंदर लिखें। संदर्भ समाप्त होने पर संदर्भ संख्या लिखें जैसे 1,2,3,4,5,6,7,8,9,10, और इसका विस्तृत संदर्भ आलेख के अंत में उसी क्रम से सूचीबद्ध करें।
12. आलेख की वर्ड फाइल में अपना खुद का फोटो इन्सर्ट न करें।
13. प्रत्येक वाक्य की समाप्ति पर पूर्ण विराम चिहन अंतिम शब्द के तुरंत बाद चिपका हुआ हो न कि एक स्पेस के बाद। इसी तरह अल्प विराम (,) भी शब्द से चिपका हुआ हो और उसके बाद एक स्पेस ज़रूर हो।
14. ( ) के बीच लिखे शब्दों से यह कोष्ठक एकदम सटे हुए हों।
15. (-) योजक चिहन के दोनों तरफ के शब्द योजक चिहन से सटे हुए हों न कि एक स्पेस के बाद।
16. प्रत्येक शब्द के बीच सिंगल स्पेस हो न कि इससे ज्यादा अनावश्यक स्पेस।
17. आलेख में ज़रूरी सन्दर्भ के अलावा अनावश्यक अंग्रेजी शब्दों के इस्तेमाल से बचना चाहिए।
18. 'मूल आलेख' शब्द बोल्ड करें।
19. आलेख में जितने भी उप-शीर्षक आते हैं उन्हें बोल्ड किया जा सकता है।
20. कवितांश के अलावा किसी भी रेफरेंस को बोल्ड नहीं करना हैं ।
21. आलेख के अंत में 'निष्कर्ष' ज़रूर लिखना है।
22. याद रहे शोध-सार और निष्कर्ष में किसी भी रेफरेंस का उपयोग नहीं करना वह एकदम आपकी अपनी भाषा में हों तो बेहतर रहेगा।
23. शोध आलेख न होकर साधारण आलेख होने परशोधसार बीज-शब्दनिष्कर्ष आदि तकनिकी पक्षों से छूट मिलेगी।
24. 'सन्दर्भ' बोल्ड करके लिखें और सूची बनाकर समस्त संदर्भ पुस्तक के लेखक का नाम, लेखक का उपनाम, पुस्तक का नाम, प्रकाशक का नाम, प्रकाशन वर्ष, पृष्ठ संख्या क्रम से लिखें।
25. आलेख के अंत में पांच पंक्ति का पता लिखना हैं जहां क्रम से अपना नाम, पद, संस्था, शहर, ई-मेल, मोबाइल नंबर बोल्ड अक्षरों में लिखना हैं।
26. पूरेआलेख का फॉण्ट एक ही तरह का 'Unicode-Kokila' हो और साइज़ भी एक जैसी ही '18' रखनी है।
27. पूरा आलेख 'जस्टिफाइड' हो न कि लेफ्ट या राईट अलाइनमेंट के साथ।
28. सन्दर्भ लिखने में हमारी नियमावली का पालन शत प्रतिशत करना ही है।

अनुक्रम

लेखकों हेतु दिशानिर्देश 3

संपादकीय/संवाद

- पूजा सिंह 9

संवाद

- राजस्थान की रजत बुँदे : अनुपम मिश्र 11

कहानी

- सुल्ताना का सपना: रुकय्या सखावत हुसैन 22

आलेख

- अस्मिता, भाषा और सत्ता : वीरेंद्र कुमार चंदोरिया 38
- एआई –उपयोग और निहितार्थ : नैन्सी सिंह 48
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020: समग्र और बहु-विषयक शिक्षा : शिखा वाजपई 62

अनुभव

- उड़ता जा रहा हूँ ! : रामवृक्ष बेनीपुरी 74

कविता

- किरोव हमारे साथ हैं : निकोलाई तिखोनोव 80

इस पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के हैं। संपादन मंडल और पत्रिका से जुड़े सदस्यों की इन विचारों से सहमति हो यह ज़रूरीनहीं है।

संवाद

साहित्य जीवन को सुंदर और उपयोगी बनाता है क्योंकि यह न केवल मनोरंजन का स्रोत होता है, बल्कि यह हमारे विचारों, भावनाओं और दृष्टिकोणों को भी विकसित करता है। साहित्य हमें एक नया दृष्टिकोण देता है, जिससे हम अपनी दुनिया को और बेहतर तरीके से समझ सकते हैं। इसके माध्यम से हम न केवल दूसरों के अनुभवों से जुड़ते हैं, बल्कि अपने स्वयं के अनुभवों को भी समझने की क्षमता प्राप्त करते हैं। कविता, कथा, नाटक, और उपन्यास जैसे साहित्यिक रूप हमारे मन में संवेदनाओं और विचारों की गहरी छाप छोड़ते हैं। साहित्य हमारे समाज की झलक प्रस्तुत करता है और हमें उसकी सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धारा से परिचित कराता है। यह हमें मानवता की मूलभूत भावनाओं जैसे प्रेम, करुणा, संघर्ष, और साहस से जोड़ता है। जब हम साहित्य पढ़ते हैं, तो हम न केवल दूसरे लोगों के जीवन के बारे में समझते हैं, बल्कि अपने जीवन की दिशा और उद्देश्य को भी पहचान पाते हैं। यह एक तरह से हमें अपने आंतरिक संघर्षों से बाहर निकलने का मार्ग दिखाता है और जीवन के कठिन क्षणों में भी आशा की किरण को प्रज्वलित करता है। इसके अलावा, साहित्य शिक्षा का भी एक महत्वपूर्ण साधन है। यह सोचने की क्षमता को विकसित करता है और हमारी बौद्धिक यात्रा को प्रेरित करता है। साहित्य में निहित विचार और दर्शन हमें आत्मविकास के लिए प्रेरित करते हैं और जीवन के विभिन्न पहलुओं पर गहरे विचार करने के लिए उकसाते हैं। इस प्रकार, साहित्य जीवन को न केवल सुंदर बनाता है, बल्कि उसे एक उद्देश्यपूर्ण और संतुलित दिशा में आगे बढ़ाने का भी कार्य करता है। साहित्य जीवन को सुंदर और उपयोगी बनाने का एक और महत्वपूर्ण कारण यह है कि यह व्यक्ति के आत्मविश्वास को बढ़ाता है और उसके मानसिक विकास में सहायता करता है। जब हम साहित्य पढ़ते हैं, तो हम न केवल शब्दों और विचारों से जुड़े होते हैं, बल्कि हमारी कल्पना और संवेदनशीलता भी जागृत होती है। साहित्य मानव मस्तिष्क के उन छिपे हुए पहलुओं को उजागर करता है जिन्हें हम अपनी सामान्य दिनचर्या में अनदेखा कर देते हैं। यह हमारी सोच को विस्तारित करता है और हमें जीवन के अलग-अलग पहलुओं को गहरे स्तर पर समझने का अवसर प्रदान करता है। इसके माध्यम से हम दुनिया के विभिन्न हिस्सों के बारे में जानते हैं, विभिन्न संस्कृतियों, विश्वासों और जीवनशैली से परिचित होते हैं। यह हमारे दृष्टिकोण को व्यापक बनाता है और हमारे सामाजिक और सांस्कृतिक समझ को समृद्ध करता है। साहित्य के द्वारा हम न केवल अतीत और वर्तमान के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं, बल्कि हम भविष्य के लिए भी तैयार होते हैं। यह हमें अपने समाज की समस्याओं पर विचार करने और उन्हें हल करने के उपायों के बारे में सोचने के लिए प्रेरित करता है। साहित्य का एक और महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यह हमारी भाषा और संवाद की क्षमता को भी सुधारता है। साहित्यिक रचनाएँ हमें न केवल शब्दों का सही प्रयोग सिखाती हैं, बल्कि यह हमारी लेखन और बोलचाल की शैली को भी उन्नत करती हैं। जब हम साहित्यिक कृतियों

का अध्ययन करते हैं, तो हम भाषा की बारीकियों और शैली के बारे में अधिक जानते हैं, जो हमें प्रभावी संवाद करने में मदद करता है। इस प्रकार, साहित्य जीवन को उपयोगी बनाता है क्योंकि यह व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों स्तरों पर हमें बेहतर इंसान बनने की दिशा में मार्गदर्शन करता है।

साहित्य जीवन को केवल आनंदित नहीं करता, बल्कि यह हमारे व्यक्तित्व के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह हमारे आत्म-संवेदन और सामाजिक उत्तरदायित्व को जागृत करता है, जिससे हम एक सकारात्मक और सशक्त समाज के निर्माण में योगदान दे सकते हैं। साहित्य जीवन के हर पहलु को छूता है और उसे बेहतर बनाने की दिशा में कार्य करता है।

इस बार भी यह पत्रिका का सयुंक्त अंक है। हम गुणवत्ता पूर्ण अच्छे लेखों की कमी से जूझ रहें हैं। इसी कड़ी में संवाद के इस अंक में हमने प्रयास किया है कि हम अलग साहित्यक विचारों को पाठकों के सामने रखें। इस अंक में हम संवाद के अंतर्गत इस बार गांधीवादी लेखक अनुपम मिश्र जी का लेख राजस्थान की रजत बुँदे आपके सामने रख रहे हैं। अनुमपम जी ने जल संरक्षण पर बहुत काम किया। इसी कड़ी में रुकय्या सखावत हुसैन की कहानी जो सुल्ताना का सपना है। अस्मिता, भाषा और सत्ता नाम से लेख वीरेंद्र कुमार की कलम से लिखा गया है। इससे अगला लेख एआई और उसके उपयोग पर रोशनी डालता है जो शिक्षा में इससे उत्पन्न नए अवसरों को तलाशने की पृष्ठभूमि से संबन्धित है जो कि राजेन्द्र कुमार ने लिखा है। शिखा ने नई शिक्षा नीति की पर लेख लिखा है। इस बार अनुभव के अंतर्गत रामवृक्ष बेनीपुरी जो की प्रसिद्ध साहित्यकार रहे हैं का यात्रा अनुभव उड़ता जा रहा हूँ। अंत में निकोलोई की एक सुदर कविता ‘किरोव हमारे साथ है’ शामिल की गई है।

अब दो शब्द आपसे आप हमे इस पत्रिका को बेहतर बनाने के लिए, अपने विचारों को रखने और अपने अनुभवों को सांझा करने के लिए सहयोग कर सकते हैं। हम आपसे अनुरोध करते है कि आप हमे पत्रिका के इस अंक पर अपने विचारों से अवगत कराएं। इसके लिए आप हमे पत्र द्वारा, इ-मेल द्वारा या दूरभाष पर भी संपर्क कर सकते हैं। पत्रिका आपके सहयोग से चलती है इसलिए आप अपने मित्रों को, शिक्षकों को बच्चों को पत्रिका के बारे में बताएं , उनसे पत्रिका को पढ़ने को कहें और आप उन्हे पत्रिका उपहार स्वरूप भी दे सकते हैं। आप पत्रिका की सदस्यता अवश्य लें। अगले अंक की प्रतीक्षा के साथ धन्यवाद।

आपकी
पूजा सिंह

शिक्षा संवाद
2022, 9 (1-2): 11-20
ISSN: 2348-5558
©2022, संपादक, शिक्षा संवाद, नई दिल्ली

संवाद

राजस्थान की रजत बूँदें

अनुपम मिश्र

अनुपम जी ने परंपरागत जल स्रोतों के पुनरुद्धार और जल-संरक्षण के लिए जमीन स्तर बहुत काम किया। इनकी पुस्तक 'आज भी खरे हैं तालाब' काफी प्रसिद्ध रही है। अनुपम जी ने 'गाँधी मार्ग' पत्रिका के संस्थापक-संपादक के रूप ख्याति प्राप्त की। अनुपम जी एक गांधीवादी पर्यावरणविद् थे। वह वर्ष 2016 में हमें अपने रचना संसार में छोडकर चले गए। आज हम उन्हीं के लेख राजस्थान की रजत बुँदे का अंश प्रस्तुत कर रहें हैं। यह अंश एनसीईआरटी की कक्षा ग्यारह की पाठ्यपुस्तक से साभार लिया गया है।

पसीने में तरबतर चेलवांजी कुंई के भीतर काम कर रहे हैं। कोई तीस-पैंतीस हाथ गहरी खुदाई हो चुकी है। अब भीतर गर्मी बढ़ती ही जाएगी। कुंई का व्यास, घेरा बहुत ही संकरा है। उखरूँ1 बैठे चेलवांजी की पीठ और छाती से एक-एक हाथ की दूरी पर मिट्टी है। इतनी संकरी जगह में खोदने का काम कुल्हाड़ी या फावड़े से नहीं हो सकता। खुदाई यहाँ बसौली से की जा रही है। बसौली छोटी डंडी का छोटे फावड़े जैसा औज़ार होता है। नुकीला फल लोहे का और हत्था लकड़ी का।

कुंई की गहराई में चल रहे मेहनती काम पर वहाँ की गर्मी का असर पड़ेगा। गर्मी कम करने के लिए ऊपर ज़मीन पर खड़े लोग बीच-बीच में मुट्ठी भर रेत बहुत ज़ोर के साथ नीचे फेंकते हैं। इससे ऊपर की ताज़ी हवा नीचे फिकाती है और गहराई में जमा दमघोंटू गर्म हवा ऊपर लौटती है। इतने ऊपर से फेंकी जा रही रेत के कण नीचे काम कर रहे चेलवांजी के सिर

पर लग सकते हैं इसलिए वे अपने सिर पर काँसे, पीतल या अन्य किसी धातु का एक बर्तन टोप की तरह पहने हुए हैं। नीचे थोड़ी खुदाई हो जाने के बाद चेलवांजी के पंजों के आसपास मलबा जमा हो गया है। ऊपर रस्सी से एक छोटा-सा डोल या बाल्टी उतारी जाती है। मिट्टी उसमें भर दी जाती है। पूरी सावधानी के साथ ऊपर खींचते समय भी बाल्टी में से कुछ रेत, कंकड़-पत्थर नीचे गिर सकते हैं। टोप इनसे भी चेलवांजी का सिर बचाएगा।
चेलवांजी यानी चेजारो, कुंई की खुदाई और एक विशेष तरह की चिनाई करने वाले दक्षतम लोग। यह काम चेजा कहलाता है। चेजारो जिस कुंई को बना रहे हैं, वह भी कोई साधारण ढाँचा नहीं है। कुंई यानी बहुत ही छोटा-सा कुआँ। कुआँ पुंलिंग है, कुंई स्त्रीलिंग। यह छोटी भी केवल व्यास में ही है। गहराई तो इस कुंई की कहीं से कम नहीं। राजस्थान में अलग-अलग स्थानों पर एक विशेष कारण से कुंइयों की गहराई कुछ कम ज़्यादा होती है।

कुंई एक और अर्थ में कुएँ से बिलकुल अलग है। कुआँ भूजल को पाने के लिए बनता है पर कुंई भूजल से ठीक वैसे नहीं जुड़ती जैसे कुआँ जुड़ता है। कुंई वर्षा के जल को बड़े विचित्र ढंग से समेटती है—तब भी जब वर्षा ही नहीं होती! यानी कुंई में न तो सतह पर बहने वाला पानी है, न भूजल है। यह तो 'नेति-नेति' जैसा कुछ पेचीदा मामला है।

मरुभूमि में रेत का विस्तार और गहराई अथाह है। यहाँ वर्षा अधिक मात्रा में भी हो तो उसे भूमि में समा जाने में देर नहीं लगती। पर कहीं-कहीं मरुभूमि में रेत की सतह के नीचे प्रायः दस-पंद्रह हाथ से पचास-साठ हाथ नीचे खड़िया पत्थर की एक पट्टी चलती है। यह पट्टी जहाँ भी है, काफ़ी लंबी-चौड़ी है पर रेत के नीचे दबी रहने के कारण ऊपर से दिखती नहीं है।

ऐसे क्षेत्रों में बड़े कुएँ खोदते समय मिट्टी में हो रहे परिवर्तन से खड़िया पट्टी का पता चल जाता है। बड़े कुँओं में पानी तो डेढ़-सौ, दो-सौ हाथ पर निकल ही आता है पर वह प्रायः खारा होता है। इसलिए पीने के काम में नहीं आ सकता। बस तब इन क्षेत्रों में कुइयाँ

बनाई जाती हैं। पट्टी खोजने में पीढ़ियों का अनुभव भी काम आता है। बरसात का पानी किसी क्षेत्र में एकदम 'बैठे' नहीं तो पता चल जाता है कि रेत के नीचे ऐसी पट्टी चल रही है।

यह पट्टी वर्षा के जल को गहरे खारे भूजल तक जाकर मिलने से रोकती है। ऐसी स्थिति में उस बड़े क्षेत्र में बरसा पानी भूमि के रेतीले सतह और नीचे चल रही पथरीली पट्टी के बीच अटक कर नमी की तरह फैल जाता है। तेज़ पड़ने वाली गर्मी में इस नमी की भाप बनकर उड़ जाने की आशंका उठ सकती है। पर ऐसे क्षेत्रों में प्रकृति की एक और अनोखी उदारता काम करती है।

रेत के कण बहुत ही बारीक़ होते हैं। वे अन्यत्र मिलने वाली मिट्टी के कणों की तरह एक दूसरे से चिपकते नहीं। जहाँ लगाव है, वहाँ अलगाव भी होता है। जिस मिट्टी के कण परस्पर चिपकते हैं, वे अपनी जगह भी छोड़ते हैं और इसलिए वहाँ कुछ स्थान ख़ाली छूट जाता है। जैसे दोमट या काली मिट्टी के क्षेत्र में गुजरात, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार आदि में वर्षा बंद होने के बाद धूप निकलने पर मिट्टी के कण चिपकने लगते हैं और धरती में, खेत और आँगन में दरारें पड़ जाती हैं। धरती की संचित नमी इन दरारों से गर्मी पड़ते ही वाष्प बनकर वापस वातावरण में लौटने लगती है।

पर यहाँ बिखरे रहने में ही संगठन है। मरुभूमि में रेत के कण समान रूप से बिखरे रहते हैं। यहाँ परस्पर लगाव नहीं, इसलिए अलगाव भी नहीं होता। पानी गिरने पर कण थोड़े भारी हो जाते हैं पर अपनी जगह नहीं छोड़ते। इसलिए मरुभूमि में धरती पर दरारें नहीं पड़तीं। भीतर समाया वर्षा का जल भीतर ही बना रहता है। एक तरफ़ थोड़े नीचे चल रही पट्टी इसकी रखवाली करती है तो दूसरी तरफ़ ऊपर रेत के असंख्य कणों का कड़ा पहरा बैठा रहता है।

इस हिस्से में बरसी बूँद-बूँद रेत में समा कर नमी में बदल जाती है। अब यहाँ कुंई बन जाए तो उसका पेट, उसकी ख़ाली जगह चारों तरफ़ रेत में समाई नमी को फिर से बूँदों में

बदलती है। बूँद-बूँद रिसती है और कुंई में पानी जमा होने लगता है—खारे पानी के सागर में अमृत जैसा मीठा पानी।

इस अमृत को पाने के लिए मरुभूमि के समाज ने ख़ूब मंथन किया है। अपने अनुभवों को व्यवहार में उतारने का पूरा एक शास्त्र विकसित

किया है। इस शास्त्र ने समाज के लिए उपलब्ध पानी को तीन रूपों में बाँटा है।
पहला रूप है पालरपानी। यानी सीधे बरसात से मिलने वाला पानी। यह धरातल पर बहता है और इसे नदी, तालाब आदि में रोका जाता है। यहाँ आदि शब्द में भी बहुत कुछ छिपा है। उसका पूरा विवरण आगे कहीं और मिलेगा।

पानी का दूसरा रूप पातालपानी कहलाता है। यह वहीं भूजल है जो कुँओं में से निकाला जाता है।

पालरपानी और पातालपानी के बीच पानी का तीसरा रूप है, रेजाणीपानी। धरातल से नीचे उतरा लेकिन पाताल में न मिल पाया पानी रेजाणी है। वर्षा की मात्रा नापने में भी इंच या सेंटीमीटर नहीं बल्कि रेजा शब्द का उपयोग होता है। और रेजा का माप धरातल पर हुई वर्षा को नहीं, धरातल में समाई वर्षा को नापता है। मरुभूमि में पानी इतना गिरे कि पाँच अंगुल भीतर समा जाए तो उस दिन की वर्षा को पाँच अंगुल रेजो कहेंगे। रेजाणीपानी खड़िया पट्टी के कारण पातालीपानी से अलग बना रहता है। ऐसी पट्टी के अभाव में रेजाणीपानी धीरे-धीरे नीचे जाकर पातालीपानी में मिलकर अपना विशिष्ट रूप खो देता है। यदि किसी जगह भूजल, पातालीपानी खारा है तो रेजाणीपानी भी उसमें मिलकर खारा हो जाता है।

इस विशिष्ट रेजाणीपानी को समेट सकने वाली कुंई बनाना सचमुच एक विशिष्ट कला है। चार-पाँच हाथ के व्यास की कुंई को तीस से साठ-पैंसठ हाथ की गहराई तक उतारने वाले चेजारो कुशलता और सावधानी की पूरी ऊँचाई नापते हैं।

चेजो यानी चिनाई का श्रेष्ठतम काम कुंई का प्राण है। इसमें थोड़ी-सी भी चूक चेजारो के प्राण ले सकती है। हर दिन थोड़ी-थोड़ी खुदाई होती है, डोल से मलबा निकाला जाता है और फिर आगे की खुदाई रोक कर अब तक हो चुके काम की चिनाई की जाती है ताकि मिट्टी भसके, धँसे नहीं।

बीस-पच्चीस हाथ की गहराई तक जाते-जाते गर्मी बढ़ती जाती है और हवा भी कम होने लगती है। तब ऊपर से मुट्ठी भर-भर कर रेत नीचे तेज़ी से फेंकी जाती है—मरुभूमि में जो हवा रेत के विशाल टीलों तक को यहाँ से वहाँ उड़ा देती है, वही हवा यहाँ कुंई की गहराई में एक मुट्ठी रेत से उड़ने लगती है और पसीने में नहा रहे चेलवांजी को राहत दे जाती है। कुछ जगहों पर कुंई बनाने का यह कठिन काम और भी कठिन हो जाता है। किसी-किसी जगह ईंट की चिनाई से मिट्टी को रोकना संभव नहीं हो पाता। तब कुंई को रस्से से 'बाँधा' जाता है।

पहले दिन कुंई खोदने के साथ-साथ खींप2 नाम की घास का ढेर जमा कर लिया जाता है। चेजारो खुदाई शुरू करते हैं और बाक़ी लोग खींप की घास से कोई तीन अंगुल मोटा रस्सा बटने लगते हैं। पहले दिन का काम पूरा होते-होते कुंई कोई दस हाथ गहरी हो जाती है। इसके तल पर दीवार के साथ सटा कर रस्से का पहला गोला बिछाया जाता है और फिर उसके ऊपर दूसरा, तीसरा, चौथा—इस तरह ऊपर आते जाते हैं। खींप घास से बना खुरदरा मोटा रस्सा हर घेरे पर अपना वज़न डालता और बटी हुई लड़ियाँ एक दूसरे में फँस कर मज़बूती से एक के ऊपर एक बैठती जाती हैं। रस्से का आख़िरी छोर ऊपर रहता है।

अगले दिन फिर कुछ हाथ मिट्टी खोदी जाती है और रस्से की पहले दिन जमाई गई कुंडली दूसरे दिन खोदी गई जगह में सरका दी जाती है। ऊपर छूटी दीवार में अब नया रस्सा बाँधा जाता है। रस्से की कुंडली को टिकाए रखने के लिए बीच-बीच में कहीं-कहीं चिनाई भी करते जाते हैं।

लगभग पाँच हाथ के व्यास की कुंई में रस्से की एक ही कुंडली का सिर्फ़ एक घेरा बनाने के लिए लगभग पंद्रह हाथ लंबा रस्सा चाहिए। एक हाथ की गहराई में रस्से के आठ-दस लपेटे खप जाते हैं और इतने में ही रस्से की कुल लंबाई डेढ़ सौ हाथ हो जाती है। अब यदि तीस हाथ गहरी कुंई की मिट्टी को थामने के लिए रस्सा बाँधना पड़े तो रस्से की लंबाई चार हज़ार हाथ के आसपास बैठती है। नए लोगों को तो समझ में भी नहीं आएगा कि यहाँ कुंई खुद रही है कि रस्सा बन रहा है!

कहीं-कहीं न तो ज़्यादा पत्थर मिलता है न खींप ही। लेकिन रेजाणीपानी है तो वहाँ भी कुंइयाँ ज़रूर बनती हैं। ऐसी जगहों पर भीतर की चिनाई लकड़ी के लंबे लट्ठों से की जाती है। लट्ठे अरणी, बण (कैर), बावल या कुंबट के पेड़ों की डगालों3 से बनाए जाते हैं। इस काम के लिए सबसे उम्दा लकड़ी अरणी की ही है पर उम्दा या मध्यम दरजे की लकड़ी न मिल पाए तो आक तक से भी काम लिया जाता है।

लट्ठे नीचे से ऊपर की ओर एक दूसरे में फँसा कर सीधे खड़े किए जाते हैं। फिर इन्हें खींप की रस्सी से बाँधा जाता है। कहीं-कहीं चग की रस्सी भी काम में लाते हैं। यह बँधाई भी कुंडली का आकार लेती है, इसलिए इसे साँपणी भी कहते हैं।

नीचे खुदाई और चिनाई का काम कर रहे चेलवांजी को मिट्टी की ख़ूब परख रहती है। खड़िया पत्थर की पट्टी आते ही सारा काम रुक जाता है। इस क्षण नीचे धार लग जाती है। चेजारों ऊपर आ जाते हैं।

कुंई की सफलता यानी सजलता उत्सव का अवसर बन जाती है। यों तो पहले दिन से काम करने वालों का विशेष ध्यान रखना यहाँ की परंपरा रही है, पर काम पूरा होने पर तो विशेष भोज का आयोजन होता था। चेलवांजी को विदाई के समय तरह-तरह की भेंट दी जाती थी। चेजारो के साथ गाँव का यह संबंध उसी दिन नहीं टूट जाता था। आच प्रथा4 से उन्हें वर्ष-भर के तीज-त्योहारों में, विवाह जैसे मंगल अवसरों पर नेग, भेंट दी जाती और फ़सल आने पर खलियान में उनके नाम से अनाज का एक अलग ढेर भी लगता था। अब सिर्फ़ मज़दूरी देकर भी काम करवाने का रिवाज आ गया है।

कई जगहों पर चेजारो के बदले सामान्य गृहस्थ भी इस विशिष्ट कला में कुशल बन जाते थे। जैसलमेर के अनेक गाँवों में पालीवाल ब्राह्मणों और मेघवालों (अब अनुसूचित जाति के अंतर्गत) के हाथों से सौ-दो-सौ बरस पहले बनी पार या कुंइयाँ आज भी बिना थके पानी जुटा रही हैं।

कुंई का मुँह छोटा रखने के तीन बड़े कारण हैं। रेत में जमा नमी से पानी की बूँदें बहुत धीरे-धीरे रिसती हैं। दिन भर में एक कुंई मुश्किल से इतना ही पानी जमा कर पाती है कि उससे दो-तीन घड़े भर सकें। कुंई के तल पर पानी की मात्रा इतनी कम होती है कि यदि कुंई का व्यास बड़ा हो तो कम मात्रा का पानी ज़्यादा फैल जाएगा और तब उसे ऊपर निकालना संभव नहीं होगा। छोटे व्यास की कुंई में धीरे-धीरे रिस कर आ रहा पानी दो चार हाथ की ऊँचाई ले लेता है। कई जगहों पर कुंई से पानी निकालते समय छोटी बाल्टी के बदले छोटी चड़स का उपयोग भी इसी कारण से किया जाता है। धातु की बाल्टी पानी में आसानी से डूबती नहीं। पर मोटे कपड़े या चमड़े की चड़स के मुँह पर लोहे का वज़नी कड़ा बँधा होता है। चड़स पानी से टकराता है, ऊपर का वज़नी भाग नीचे के भाग पर गिरता है और इस तरह कम मात्रा के पानी में भी ठीक से डूब जाता है। भर जाने के बाद ऊपर उठते ही चड़स अपना पूरा आकार ले लेता है।

पिछले दौर में ऐसे कुछ गाँवों के आसपास से सड़कें निकली हैं, ट्रक दौड़े हैं। ट्रकों की फटी ट्यूब से भी छोटी चड़सी बनने लगी हैं।

कुंई के व्यास का संबंध इन क्षेत्रों में पड़ने वाली तेज़ गर्मी से भी है। व्यास बड़ा हो तो कुंई के भीतर पानी ज़्यादा फैल जाएगा। बड़ा व्यास पानी को भाप बनकर उड़ने से रोक नहीं पाएगा।

कुंई को, उसके पानी को साफ़ रखने के लिए उसे ढककर रखना ज़रूरी है। छोटे मुँह को ढँकना सरल होता है। हरेक कुंई पर लकड़ी के बने ढक्कन ढँके मिलेंगे। कहीं-कहीं खस

की टट्टी की तरह घास-फूस या छोटी-छोटी टहनियों से बने ढक्कनों का भी उपयोग किया जाता है। जहाँ नई सड़कें निकली हैं और इस तरह नए और अपरिचित लोगों की आवक-जावक भी बढ़ गई है, वहाँ अमृत जैसे इस मीठे पानी की सुरक्षा भी करनी पड़ती है। इन इलाक़ों में कई कुंइयों के ढक्कनों पर छोटे-छोटे ताले भी लगने लगे हैं। ताले कुंई के ऊपर पानी खींचने के लिए लगी घिरनी, चकरी पर भी लगाए जाते हैं।

कुंई गहरी बने तो पानी खींचने की सुविधा के लिए उसके ऊपर घिरनी या चकरी भी लगाई जाती है। यह गरेड़ी, चरखी या फरेड़ी भी कहलाती है। फरेड़ी लोहे की दो भुजाओं पर भी लगती है। लेकिन प्रायः यह गुलेल के आकार के एक मज़बूत तने को काटकर, उसमें आर-पार छेद बनाकर लगाई जाती है। इसे ओड़ाक कहते हैं। ओड़ाक और चरखी के बिना इतनी गहरी और संकरी कुंई से पानी निकालना बहुत कठिन काम बन सकता है। ओड़ाक और चरखी चड़सी को यहाँ-वहाँ बिना टकराए सीधे ऊपर तक लाती है, पानी बीच में छलक कर गिरता नहीं। वज़न खींचने में तो इससे सुविधा रहती ही है।

खड़िया पत्थर की पट्टी एक बड़े भाग से गुज़रती है इसलिए उस पूरे हिस्से में एक के बाद एक कुंई बनती जाती है। ऐसे क्षेत्र में एक बड़े साफ़-सुथरे मैदान में तीस-चालीस कुंइयाँ भी मिल जाती हैं। हर घर की एक कुंई। परिवार बड़ा हो तो एक से अधिक भी।

निजी और सार्वजनिक संपत्ति का विभाजन करने वाली मोटी रेखा कुंई के मामले में बड़े विचित्र ढंग से मिट जाती है। हरेक की अपनी-अपनी कुंई है। उसे बनाने और उससे पानी लेने का हक़ उसका अपना हक़ है। लेकिन कुंई जिस क्षेत्र में बनती है, वह गाँव-समाज की सार्वजनिक ज़मीन है। उस जगह बरसने वाला पानी ही बाद में वर्ष-भर नमी की तरह सुरक्षित रहेगा और इसी नमी से साल- भर कुंइयों में पानी भरेगा। नमी की मात्रा तो वहाँ हो चुकी वर्षा से तय हो गई है। अब उस क्षेत्र में बनने वाली हर नई कुंई का अर्थ है, पहले से तय नमी का बँटवारा। इसलिए निजी होते हुए भी सार्वजनिक क्षेत्र में बनी कुंइयों पर ग्राम समाज का अंकुश लगा रहता है। बहुत ज़रूरत पड़ने पर ही समाज नई कुंई के लिए अपनी स्वीकृति देता है।

हर दिन सोने का एक अंडा देने वाली मुर्ग़ी की चिरपरिचित कहानी को ज़मीन पर उतारती है कुंई। इससे दिन भर में बस दो-तीन घड़ा मीठा पानी निकाला जा सकता है। इसलिए प्रायः पूरा गाँव गोधूलि बेला में कुंइयों पर आता है। तब मेला-सा लग जाता है। गाँव से सटे मैदान में तीस-चालीस कुंइयों पर एक साथ घूमती घिरनियों का स्वर गोचर से लौट रहे पशुओं की घंटियों और रंभाने की आवाज़ में समा जाता है। दो-तीन घड़े भर जाने पर डोल और रस्सियाँ समेट ली जाती हैं। कुंइयों के ढक्कन वापस बंद हो जाते हैं। रात-भर और अगले दिन-भर कुंइयाँ आराम करेंगी।

रेत के नीचे सब जगह खड़िया की पट्टी नहीं है, इसलिए कुंई भी पूरे राजस्थान में नहीं मिलेगी। चुरू, बीकानेर, जैसलमेर और बाड़मेर के कई क्षेत्रों में यह पट्टी चलती है और इसी कारण वहाँ गाँव-गाँव में कुइयाँ-ही-कुइयाँ हैं। जैसलमेर जिले के एक गाँव खड़ेरों की ढाणी में तो एक सौ बीस कुंइयाँ थीं। लोग इस क्षेत्र को छह-बीसी (छह गुणा बीस) के नाम से जानते थे। कहीं-कहीं इन्हें पार भी कहते हैं। जैसलमेर तथा बाड़मेर के कई गाँव पार के कारण ही आबाद हैं और इसीलिए उन गाँवों के नाम भी पार पर ही हैं। जैसे जानरे आलो पार और सिरगु आलो पार।

अलग-अलग जगहों पर खड़िया पट्टी के भी अलग-अलग नाम हैं। कहीं यह चारोली है तो कहीं धाधड़ो, धड़धड़ो, कहीं पर बिट्टू रो बल्लियों के नाम से भी जानी जाती है तो कहीं इस पट्टी का नाम केवल 'खड़ी' भी है।
और इसी खड़ी के बल पर खारे पानी के बीच मीठा पानी देती खड़ी रहती है कुंई।

*****

स्रोत :पुस्तक : वितान (भाग- 1) (पृष्ठ 9) रचनाकार : अनुपम मिश्र प्रकाशन : एन.सी. ई.आर.टी संस्करण : 2006 से साभार प्रकाशित

This page is intentionally left blank

शिक्षा संवाद
2022, 9 (1-2): 22-37
ISSN: 2348-5558
©2022, संपादक, शिक्षा संवाद, नई दिल्ली

कहानी

सुल्ताना का सपना

रुकय्या सखावत हुसैन

अचरज की बात नहीं कि इस कथा को पढ़ कर आज भी पुरुषवादी मानसिकता वाले लोग महिलाओं को उपन्यास पढ़ने से मना करें। और यही इसकी ताकत है। इसीलिए आज भी यह उपन्यास उतना ही उपयोगी और जरूरी है।

एक शाम अपने कमरें में आराम कुर्सी पर पसरी मैं यूँ ही भारतीय महिलाओं के हालात के बारे में सोच रही थी। मुझे याद नहीं कि मैं ऊँघ रही थी या नहीं, पर यह जरूर याद है कि मैं जगी हुई थी। मैंने तारों भरे आकाश को देखा, हीरे की तरह हजारों-हजार जगमगाते तारे।

अचानक एक महिला मेरे सामने खड़ी हो गयी। वह अंदर कैसे आई, मुझे याद नहीं। मैंने उसे अपनी सहेली, सिस्टर सारा समझा।

‘‘गुड मार्निंग,’’सिस्टर सारा ने कहा। मैं धीमे से मुस्कुराई क्योंकि मुझे पता था कि अभी सुबह नहीं, बल्कि तारों भरी रात है। मैंने उसकी बात का जवाब दिया, ‘‘तुम कैसी हो?’’ ‘‘शुक्रिया, मैं ठीक हूँ।’’ तुम बाहर आकर मेरे बगीचे को देख सकती हो क्या?’’

खुली हुई खिड़की से एक बार फिर मैंने चाँद को देखा और सोचा कि इतनी रात गये बाहर जाने में कोई नुकसान नहीं है। उस समय सभी पुरुष गहरी नींद में थे और मैं बड़े आराम से सिस्टर सारा के साथ टहलने जा सकती थी।

जब हम दार्जिलिंग में थे तो अक्सर मैं सिस्टर सारा के साथ टहलने जाया करती थी। तब हम अक्सर हाथों में हाथ डाले बोटानिकल गार्डन में घूमते हुए खुले दिल से बातें किया करते थे।

मैंने कल्पना की कि सिस्टर सारा शायद ऐसे ही किसी बगीचे की सैर कराने के लिए मुझे लेने आयी हैं। मैं झपटकर तैयार हो गई और उनके साथ बाहर निकल पड़ी।

चलते हुए मुझे हैरत हुई जब मैंने पाया कि वहाँ तो पूरी सुबह हो चुकी है। शहर जाग चुका था और सड़कों पर लोगों का सैलाब उमड़ रहा था। मुझे यह सोचकर शर्म आ रही थी कि मैं भरी दोपहरी सड़क पर चल रही थी, हालांकि वहाँ एक भी मर्द दिखायी नहीं दे रहा था।

चलते हुए कुछ लोगों ने मुझ पर फिकरे कसे। हालांकि मैं उनकी भाषा नहीं समझ पायी फिर भी मैं यह तो समझ ही गयी कि वे मेरा मजाक उड़ा रही हैं। मैंने अपनी सहेली से पूछा, ''ये क्या कह रही हैं।''

''औरतें कह रही हैं कि तुम बड़ी मर्दाना लगती हो।''

''मर्दाना?'' मैंने कहा, ''वे क्या कहना चाह रही हैं?''

उनका मतलब है कि तुम मर्दो की तरह शर्मीली और डरपोक हो। ''मर्दों की तरह शर्मीली और डरपोक?'' यह निरा मजाक था। मैं बिलकुल घबरा गयी जब मैंने पाया कि मेरी सहेली सिस्टर सारा नहीं बल्कि कोई अजनबी है। ओह, मैं कितनी बेवकूफ हूँ जो इस अजनबी महिला को सिस्टर सारा समझ बैठी।

हम दोनों हाथों में हाथ लिए चल रहे थे। उसने मेरे हाथों की कंपकंपाहट महसूस की।

''प्यारी, क्या मामला है?'' अपनेपन के साथ उसने पूछा। ''मुझे बड़ा अजीब लग रहा है।'' मैंने कुछ-कुछ माफी माँगने के अंदाज में कहा। ''मैं परदे में रहने वाली औरत हूँ और बिना परदे के चलने की मुझे आदत नहीं है।'

तुम्हें इस बात के लिए डरने की जरूरत नहीं है कि यहाँ कोई मर्द आ जाएगा। पाप और खतरे से मुक्त यह महिलाओं का देश है।

धीरे-धीरे मैं दृश्य का आनन्द लेने लगी। निश्चय ही यह बेहद भव्य था। मैं घास की एक पट्टी को शनील की कालीन समझ बैठी। उस पर चलने पर ऐसा अहसास हो रहा था, जैसे मैं मखमल की कालीन पर चल रही हूँ। जब मैंने नीचे देखा तो पाया कि उस रास्ते पर तो गहरी काई और घास जमी है।

''यह कितनी अच्छी है,'' मैंने कहा।

''तुम्हें यह अच्छी लगी?'' सिस्टर सारा ने पूछा। (मैं उन्हें सिस्टर सारा बुलाती रही और वे मुझे मेरे नाम से पुकारती रही)

''हाँ, बहुत ज्यादा, लेकिन मैं नाजुक और सुन्दर फूलों को कुचलना नहीं चाहती।'' ''चिन्ता न करो प्यारी सुल्ताना, ये जंगली फूल हैं। तुम्हारे चलने से खराब नहीं होंगे।''

मैंने तारीफ करते हुए कहा, ''यह पूरी जगह एक बगीचे की तरह लग रही है। तुमने एक-एक पौधे को कितनी खूबसूरती से सँवारा है।''

''तुम्हारे कलकत्ता को भी इससे बेहतर बगीचा बनाया जा सकता है, बशर्ते तुम्हारे देश के लोग ऐसा करना चाहें।''

''उनके पास करने के लिए बहुत-सी दूसरी चीजें जो होती हैं, इसलिए वे बागवानी पर इतना ध्यान देना वक्त जाया करना समझेंगे।''

''इससे बेहतर बहाना उन्हें नहीं मिलेगा,'' मुस्कुराते हुए उसने कहा।

मुझे यह बात जानने की बेहद इच्छा हो रही थी कि सारे के सारे मर्द कहाँ गये। चलते हुए लगभग सौ महिलाओं से मेरी भेंट हुई थी लेकिन एक भी मर्द दिखाई नहीं दिया।

''सारे मर्द कहाँ गए? मैंने उनसे पूछा।''

‘‘अपनी सही जगह पर, जहाँ उन्हें होना चाहिए।’’

‘‘मेहरबानी करके मुझे बताओ कि ‘‘अपनी सही जगह’’ से तुम्हारा क्या मतलब है।’’

‘‘ओह, अब मुझे अपनी गलती समझ आयी, तुम्हें हमारे तौर-तरीके नहीं पता, तुम तो पहली बार यहाँ आयी हो। हम अपने आदमियों को अन्दर बन्द करके रखते हैं।’’

‘‘ठीक वैसे ही जैसे हम औरतों को जनाना घर में बन्द रखते हैं?’’

‘‘कितनी मजाकिया बात है,’’ मैं ठठा कर हँसी। सिस्टर सारा भी हँस पड़ी। ‘‘लेकिन प्यारी सुल्ताना, इन मासूम औरतों को बन्द रखना और मर्दों को खुला छोड़ना, कितनी नाइंसाफी है।’’

‘‘क्यों, चूँकि हम लोग कुदरती तौर पर ही कमजोर हैं, इसलिए हमारा जनानखाने से बाहर रहना सुरक्षित नहीं है।’’

‘‘हाँ सड़कों पर रहना तब तक सुरक्षित नहीं है जब तक कि वहाँ मर्द होते हैं।’’ क्या यह कुछ ऐसा नहीं है, जैसे बीच बाजार में कोई जंगली जानवर घुस आये?

‘‘बिल्कुल नहीं।’’

सोचो, किसी पागलखाने से कोई पागल बाहर निकल आये और मर्दों, घोड़ों और दूसरे जानवरों के साथ ऊलजलूल हरकत करने लगे तो उसके साथ तुम्हारे देश के लोग क्या करेंगे?

‘‘वे उसे पकड़कर वापस पागलखाना भेज देंगे।’’

‘‘शुक्रिया! और तुम ये नहीं सोचती कि समझदार आदमी को अन्दर रखने और पागल आदमी को बाहर रखने में ही अक्लमंदी है?’’

‘‘बिल्कुल नहीं।’’ मैं धीरे से हँसी।

‘‘तुम्हारे देश में तो मर्द इस तरह के काम करते ही रहते हैं। मर्द जो इस तरह के काम करते ही रहते हैं, या फिर उनमें इस तरह के खुराफात करने की कुव्वत होती है, वे आजाद घूमते हैं जबकि महिलाएँ अन्दर बन्द रहती हैं! घर से बाहर इस तरह के गैर जिम्मेदार मर्दों पर तुम कैसे भरोसा कर सकती हो?’’

‘‘सामाजिक मसलों में हमारा कोई दखल नहीं है। भारत में मर्द भगवान और स्वामी होते हैं। उन्होंने अपने पास सारी शक्तियाँ और विशेषाधिकार रखे हुए हैं और औरतों को जनानखाने में बन्द कर दिया है!’’

‘‘तुमने अपने को जनानखाने में बन्द कैसे रहने दिया?’’

‘‘क्योंकि इससे बचा नहीं जा सकता। मर्द औरतों से ज्यादा ताकतवर हैं।’’

‘‘शेर आदमी से ज्यादा ताकतवर होता है, पर इंसान उसको अपने ऊपर हावी नहीं होने देता। तुमने अपने अधिकारों को लेकर बहुत लापरवाही बरती है। अपने फायदे से आँखें फेरकर अपने कुदरती अधिकारों को भी खो दिया।’’

‘‘लेकिन सिस्टर सारा, अगर हम सारे काम खुद ही कर लेंगी तो मर्द क्या करेंगे?’’

‘‘उन्हें कुछ नहीं करना चाहिए। माफ करना, वे कुछ करने के काबिल नहीं हैं। उन्हें पकड़ो और जनानखाने मे बन्द कर दो।’’

‘‘पर क्या उन्हें पकड़कर चारदीवारी के अन्दर कैद करना आसान होगा? मैंने कहा। ‘‘और

अगर हम यह कर पाने में कामयाब भी होती हैं तो क्या उनके सियासी और दूसरे कारोबार भी उनके साथ जनानखाने के अन्दर नहीं चले जायेंगे?''

सिस्टर सारा ने कोई जवाब नहीं दिया। वे सिर्फ हल्का सा मुस्कुरायीं। शायद उन्हें लगा हो कि मुझ जैसी कुँए की मेंढक से बहस करने से क्या फायदा।

तब तक हम सिस्टर सारा के घर पहुँच गये थे। वह दिल के आकार के एक बगीचे में बना था। वह लोहे की नालीदार छत वाला बँगला था। वह हमारी बेहतरीन इमारत से ज्यादा ठंडा और अच्छा था। मैं बता नहीं सकती कि वह कितना साफ-सुथरा था। शानदार फर्नीचर और बेहतरीन सजावट की तो बात ही क्या।

हम किनारे ही बैठ गये। बैठक से वह कसीदाकारी का एक टुकड़ा ले आयी और उस पर एक नया डिजाइन बनाने लगी।

''क्या तुम बुनाई और कढ़ाई का काम जानती हो?''

''हाँ, जनानखाने में इसके अलावा हमारे पास कोई और काम ही नहीं होता।''
''लेकिन हम जनानखाने के मर्दों पर कढ़ाई के मामले में भरोसा नहीं करते, क्योंकि उन्हें तो सुई में धागा डालना भी नहीं आता!'' उसने हँसते हुए कहा।
''क्या तुमने यह सब खुद ही किया है?'' मैंने कढ़ाई किये हुए तिपाई के टुकड़ों की ओर इशारा करते हुए पूछा।

''हाँ''
''यह सब करने के लिए तुम वक्त कहाँ से निकालती हो? तुम्हें ऑफिस का काम भी तो करना होता है या नहीं?''

''अरे, मैं पूरा दिन प्रयोगशाला में ही नहीं चिपकी रहती। मैं अपना काम दो घंटे में ही निपटा लेती हूँ।''

सिर्फ दो घंटे में! तुम कैसे कर पाती हो? हमारे देश में अफसर, मजिस्ट्रेट जैसे लोग सात घंटे काम करते हैं।

‘‘मैंने उन्हें काम करते हुए देखा है। क्या तुम्हें लगता है कि वे पूरे सात घंटे काम करते हैं?’’
‘‘हाँ, बिलकुल!’’

‘‘नहीं प्यारी सुल्ताना, वे नहीं करते। वे अपना समय सिगरेट पीने में बर्बाद करते हैं। कई तो

ऑफिस टाइम में दो से तीन डब्बी सिगरेट पी जाते हैं। वे अपने काम के बारे में बातें ज्यादा करते हैं, काम कम करते हैं। फर्ज करो अगर एक सिगरेट को खत्म होने में आधा घंटा लगता है और एक आदमी दिनभर में बारह सिगरेट पीता है तो तुम ही देखो, दिनभर में वह छ: घंटा सिर्फ सिगरेट पीने में बर्बाद करता है।’’
अलग-अलग मुद्दों पर हुई अपनी बातचीत में मैंने पाया कि उन्हें न तो महामारी होती है और न ही उन्हें उस तरह मच्छर काटते हैं जैसे हमें। मैं यह जानकर हैरान रह गयी कि औरतों के देश में किसी हादसे के अलावा कोई अपनी जवानी में मरता ही नहीं।

‘‘क्या तुम हमारी रसोई देखना पसंद करोगी?’’ उसने मुझसे पूछा।

‘‘खुशी-खुशी,’’ मैंने जवाब दिया और फिर हम रसोई देखने निकल पड़े। जब मैं उसे देखने जा रही थी तब शायद मर्दों से उसकी सफाई करने को कहा गया था। रसोई सब्जियों के एक खूबसूरत बगीचे में थी। हर लता, हर टमाटर मानो अपने में एक गहना लग रहा था। रसोई में कोई चिमनी नहीं दिखाई दी। वह साफ-सुथरी थी और रोशनी से भरपूर थी। उसकी खिड़की पर सुन्दर फूल लगे थे। कोयले और धुँए का कोई निशान नहीं था।

‘‘तुम लोग खाना कैसे बनाती हो?’’ मैंने पूछा

‘‘सूरज की गरमी से। उसने जवाब देते हुए एक पाइप दिखाया जिससे होकर सूरज की घनी

रोशनी और गर्मी गुजरती थी। फिर उसने मुझे तरीका समझाने के लिये कोई चीज पका कर दिखायी।''

''तुम सूरज की रोशनी को कैसे इकट्ठा और जमा करती हो?'' आश्चर्य से मैंने पूछा। ''मुझे थोड़ा बहुत अपने लोगों का इतिहास बताने दो। हमारी मौजूदा महारानी को तेरह साल की उम्र में राजगद्दी मिली। वह सिर्फ दिखावे की रानी थी। देश की असली सत्ता तो प्रधानमंत्री के पास थी।''

''हमारी प्यारी रानी को विज्ञान बहुत अच्छा लगता था। उसने फरमान जारी किया कि उसके देश में सभी लड़कियों को पढ़ाया जाना चाहिए। इस तरह लड़कियों के लिए सरकार ने बहुत सारे स्कूल खोले। औरतों के बीच शिक्षा फैली। कम उम्र में होने वाली शादियाँ भी रुकीं। इक्कीस साल से कम उम्र की लड़कियों की शादी पर पूरी तरह रोक लग गयी। मैं यह बताना चाहती हूँ कि इस बदलाव के पहले हमें सख्त पर्दे में रखा जाता था।''

''यह सब किया कैसे गया?'' मैंने हँसते हुए पूछा।

''पर अलगाव अभी भी उतना ही है।'' उसने कहा। ''कुछ सालों में हमारे पास लड़कियों के लिए अलग विश्वविद्यालय होंगे, जहाँ मर्दों को प्रवेश नहीं मिलेगा।''

''राजधानी में जहाँ हमारी महारानी रहती हैं, वहाँ दो विश्वविद्यालय हैं। इन विश्वविद्यालयों में से एक ने एक निराले गुब्बारे में कई पाइप लगा दिये हैं और इस बन्द गुब्बारे को वे बादलों के ऊपर तैराने में सफल रहे हैं। वहीं जरूरत के हिसाब से वातावरण से पानी को इकट्ठा किया जाता है। अब चूँकि विश्वविद्यालय लगातार पानी इकट्ठा कर रहा था, इसलिए बादल ही नहीं रहे थे। इस तरह लेडी प्रिंसिपल ने बारिश और तूफान को रोक दिया।''

''वाकई! अब मैं समझी कि यहाँ मिट्टी की कोई झोपड़ी क्यों नहीं है!'' मैंने कहा। पर मुझे यह नहीं समझ में आया कि पाइपों में पानी कैसे जमा किया जा सकता है। उसने मुझे समझाने की बहुत कोशिश की लेकिन मेरी खोपड़ी में कुछ भी नहीं घुसा, क्योंकि विज्ञान की मुझे जरा भी समझ नहीं थी... खैर, उसने अपनी बात जारी रखी। ''जब दूसरे विश्वविद्यालयों को इसके बारे में पता चला तो उन्हें बहुत जलन हुई और उन्होंने इससे भी नायाब कुछ करने की

सोची। उन्होंने एक ऐसी मशीन बनायी जिससे वे जितना चाहते, सूरज की उतनी गरमी जमा कर सकते थे। वे उस ताप को जमा कर के रखते और जब जिसको जितना जरूरत होती उतना दे देते।''

''औरतें जब वैज्ञानिक शोध में लगी हुई थीं, तब इस देश के मर्द सेना को ताकतवर बनाने में लगे थे। जब उनको पता चला कि महिला विश्वविद्यालय वातावरण से पानी और सूरज की गर्मी एकत्रित करने में सफल हो गये हैं तो उन्होंने विश्वविद्यालय के सदस्यों का मजाक उड़ाया और इस पूरे काम को ''एक भयानक भावनात्मक दु:स्वप्न'' का नाम दिया।

''वाकई तुमने जो चीजें हासिल की हैं, वे हैरतअंगेज हैं! लेकिन मुझे यह बताओ कि तुम लोग इस देश के मर्दों को जनानखाने में रखने में कैसे सफल हो गये। क्या पहले तुम लोगों ने उन्हें...''

''नहीं।''

''ये तो हो नहीं सकता कि वे खाली और मुक्त हवा का जीवन खुद ही छोड़कर अपने आप को जनानखाने की चहारदीवारी में कैद कर लें! उन पर ताकत का इस्तेमाल किया गया होगा।''

''हाँ, किया गया!''

''किसने किया? महिला सैनिकों ने?''

''नहीं, हथियारों के दम पर नहीं''

''हाँ, यह मुमकिन नहीं था। मर्दों के हाथों में औरतों से ज्यादा ताकत होती है। तब?''
''दिमाग से।''

''हालांकि उनके दिमाग औरतों के दिमाग से ज्यादा बड़े और भारी हैं। क्या ऐसा नहीं है?''
''लेकिन उससे क्या? हाथी का दिमाग भी तो मर्दों के दिमाग से ज्यादा बड़ा और भारी होता है। लेकिन तब भी मर्द हाथी को जंजीरों में कैद कर उसे अपनी इच्छा से काम पर लगा सकते हैं।''

''बिलकुल ठीक, लेकिन मुझे यह बताओ कि वाकई यह सब हुआ कैसे? मैं जानने के लिए मरी जा रही हूँ!''

''औरतों का दिमाग मर्दों के दिमाग की तुलना में अधिक तेजी से काम करता है। दस साल पहले जब सेना के कुछ अफसरों ने हमारी वैज्ञानिक खोजों का ''एक भयानक भावनात्मक दु:स्वप्न'' कहकर मजाक उड़ाया, तब हमारी कुछ युवा महिलाएँ उसके जवाब में कुछ कहना चाहती थीं। लेकिन दोनों महिला प्रिंसिपलों ने उन्हें रोक दिया और कहा कि अगर वे जवाब देना चाहती हैं तो शब्दों से नहीं, बल्कि मौका मिले तो काम से दें। और उन्हें मौके के लिए ज्यादा इन्तजार नहीं करना पड़ा।''

''वाह, कितना शानदार?'' मैंने मन से ताली बजायी। ''और अब वे घमंडी जेंटलमैन स्वयं ही भावनात्मक दु:स्वप्न देख रहे हैं।''

''इसके कुछ समय बाद ही पड़ोसी देशों से कुछ लोग आये और यहाँ बस गये। किसी तरह का राजनीतिक अपराध करने के कारण वे मुसीबत में थे। राजा जो अच्छे शासन के बजाय ताकत के इस्तेमाल में ज्यादा यकीन करता था, उसने हमारी कोमल दिल रानी से निवेदन किया कि वे उनके अफसरों को वापस सौंप दें। रानी ने इनकार कर दिया क्योंकि शरणार्थियों को वापस भेजना उनके उसूल के खिलाफ था। इस इनकार के बाद राजा ने हमारे देश के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी।''

''हमारे मिलिट्री अफसर धड़ाधड़ तैयार हुए और दुश्मन से दो-दो हाथ करने कूच कर गये। हालांकि दुश्मन हमसे ज्यादा ताकतवर थे, फिर भी हमारे सैनिक बहादुरी से लड़े लेकिन उनकी लाख बहादुरी के बावजूद विदेशी फौजों ने हमारे देश पर कब्जा कर लिया।''

''सभी पुरुष युद्ध के मोर्चे पर गये हुए थे, यहाँ तक कि सोलह साल का एक लड़का घर पर नहीं बचा था। हमारे ज्यादातर योद्धा मारे जा चुके थे। बाकी को खदेड़ा जा चुका था और दुश्मनों की फौज राजधानी से पच्चीस मील दूर तक आ पहुँची थी।''

रानी के महल में कुछ समझदार महिलाओं की इस बाबत एक बैठक बुलायी गयी कि देश

को कैसे बचाया जा सकता है। कुछ ने योद्धाओं की तरह लड़ने का सुझाव दिया तो कुछ ने विरोध करते हुए कहा कि औरतों को सैनिकों की तरह तलवार और बन्दूकों से लड़ने का प्रशिक्षण नहीं मिला है और न ही वे हथियारों से लड़ने की अभ्यस्त हैं। कुछ और लोगों ने तो यहाँ तक कह दिया कि वे तो शारीरिक रूप से बेहद कमजोर हैं।

''अगर तुम शारीरिक ताकत से अपने देश को नहीं बचा सकती तो अपनी बुद्धि की ताकत से उसे बचाओ।''
''कुछ पल के लिए मुर्दा चुप्पी छा गई। रानी ने फिर से कहा, ''अगर मेरी मातृभूमि और मेरा सम्मान खो जायेगा तो मैं आत्महत्या कर लूंगी।''

''तब दूसरे विश्वविद्यालय की महिला प्रिंसिपल ने (जिन्होंने सूरज की गर्मी एकत्रित की थी)'' जो पूरी बातचीत के दौरान चुपचाप सुन रही थी, कहा कि राज्य हाथ से जा चुका है, और अब हमें किसी तरह की आशा नहीं करनी चाहिए। हालांकि एक योजना अभी थी जिस पर वह आखिरी बार अमल करना चाहती थीं। अगर वह इसमें भी असफल रहीं तो आत्महत्या के अलावा कोई चारा नहीं बचता। वहाँ उपस्थित सभी लोगों ने प्रण किया कि चाहे कुछ भी हो जाय, वे खुद को गुलाम नहीं होने देंगी।

''रानी ने दिल से उनको धन्यवाद दिया और महिला प्रिंसिपल से अपनी योजना पर अमल करने को कहा। महिला प्रिंसिपल फिर से खड़ी हुई और कहा, ''इससे पहले कि हम बाहर जायें, पुरुषों को जनानखाने में आ जाना चाहिए। परदे के लिए मैं यह प्रार्थना करूंगी।''
''हाँ, बिलकुल, रानी ने जवाब दिया।''

''अगले दिन रानी ने सभी पुरुषों को सम्मान और स्वतंत्रता के लिए जानानखाने में आने को कहा। वे इतने थके हुए और घायल थे कि उन्होंने इस आदेश को एक वरदान की तरह लिया! उन्होंने सर झुकाया और विरोध का एक शब्द कहे बिना जनाने में प्रवेश किया। उन्हें पक्का यकीन हो चला था कि अब देश का कुछ नहीं हो सकता।''

‘‘उसके बाद महिला प्रिंसिपल ने अपनी दो हजार छात्राओं के साथ रणभूमि की ओर कूच किया और उनके वहाँ पहुँचते ही सूरज की संघनित रोशनी और गरमी का रुख दुश्मनों की ओर कर दिया।’’

‘‘इतनी तेज गरमी और रोशनी उनके बर्दाश्त के बाहर थी। वे बुरी तरह घबराकर भागे। उन्हें समझ में ही नहीं आ रहा था कि इस झुलसा देने वाली गर्मी से वे कैसे मुकाबला करें। जब वे अपनी बन्दूकें और गोला बारूद छोड़कर भाग गये, तब हमने उन्हें भी उसी तरह सूरज की गरमी से जला दिया। तबसे किसी ने भी हमारे देश पर हमला करने की जुर्रत नहीं की।’’
‘‘और तब से तुम्हारे देश के मर्दों ने जनानखाने से बाहर निकलने की कोशिश नहीं की?’’
‘‘हाँ, वे आजाद होना चाहते हैं। कुछ पुलिस कमिश्नर और जिलाधीशों ने पत्र लिखे कि सैनिक अधिकारी अपनी नाकामी को देखते हुए निश्चय ही जेल जाने लायक हैं, लेकिन चूँकि उन्होंने कभी भी अपनी ड्यूटी में लापरवाही नहीं बरती है, इसलिए उन्हें सजा नहीं मिलनी चाहिए और उनकी अपील के अनुसार उन्हें उनके विभाग सौंप देने चाहिए।’’
‘‘महारानी ने उन्हें एक पत्र भेजा जिसमें कहा गया था कि भविष्य में यदि उनकी सेवाओं की जरूरत पड़ी तो उनकी सेवा ली जायेगी। तब तक उन्हें वहीं रहना है जहाँ उन्हें रखा गया है। और अब जबकि उन्हें पर्दा प्रथा की आदत हो गयी है, और चूँकि उन्होंने अपने अलगाव (एकाकीपन) पर खीझना छोड़ दिया है, इसलिए हमने भी इस व्यवस्था को ‘‘जनाना’’ की जगह ‘‘मरदाना’’ कहना शुरू कर दिया है।

‘‘पर तुम यह सब कर कैसे पाती हो?’’ मैंने सिस्टर सारा से पूछा। ‘‘चोरी या हत्या के मामले में बिना पुलिस या मजिस्ट्रेट के यह कैसे हो पाता है?’’

‘‘जब से मर्दाना’’ व्यवस्था लागू हुई है तबसे अपराध बन्द हो गये हैं इसलिए अब अपराधी को ढूँढने के लिए हमें पुलिस की जरूरत नहीं रह गयी है और न ही हम यह चाहते हैं कि कोई मजिस्ट्रेट किसी अपराधी पर मुकदमा चलाये।’’

‘‘अरे, यह तो बहुत शानदार बात है। जहाँ तक मैं समझती हूँ, अब किसी अपराधी को दण्डित करना भी बहुत आसान हो गया होगा। तुमने एक भी बूँद खून बहाए बिना अन्तिम

जीत हासिल की है, इसलिए तुम अपराध और अपराधियों को भी उतनी ही आसानी से खत्म कर सकती हो!''

''प्रिय सुल्ताना, तुम यहीं बैठी रहोगी या मेरे साथ पार्लर चलोगी?'' उन्होंने पूछा।

''तुम्हारी रसोई तो महारानी के श्रृंगार-कक्ष से कुछ कम बेहतर नहीं है!'' स्नेहिल मुस्कान के साथ मैंने जवाब दिया, ''लेकिन हमें अब उसे छोड़ देना चाहिए क्योंकि अब वे महाशय मुझे कोस रहे होंगे कि मैंने उन्हें इतने दिन रसोई की ड्यूटी से दूर क्यों रखा।'' हम दोनों ठठा कर हँसे।
''मैं सोच रही हूँ कि घर पर मेरे सारे दोस्त कितना हैरान होंगे, जब उन्हें यह पता चलेगा कि महिलाओं के इस सुदूर देश में महिलाएँ देश पर राज करती हैं और सभी सामाजिक मामलों को निबटाती हैं जबकि पुरुषों को मरदानखाने में बच्चों की देखभाल, खाना बनाने और दूसरे घरेलू कामों के लिए रखा जाता है। यहाँ की बातें सुनकर उन्हें समझ में आयेगा कि खाना बनाना कितना आसान और आनन्ददायी भी हो सकता है!''

''हाँ, उन्हें वह सब बताना जो तुमने यहाँ देखा।''
अब मुझे यह बताओ कि तुम जमीन पर खेती कैसे करती हो और उसे जोतती कैसे हो? दूसरे भारी कामों को कैसे निबटाती हो?

''हमारे खेतों में बिजली से जुताई होती है। उसी से हम दूसरे कठिन काम भी निबटाते हैं। उसे हम हवाई यातायात में भी इस्तेमाल करते हैं। हमारे यहाँ कोई भी रेल या सड़क नहीं है।''
''इसलिए यहाँ कोई रेल या सड़क दुर्घटना नहीं होती'' मैंने कहा। ''पर क्या तुम्हें कभी बारिश के पानी की कमी नहीं महसूस होती?''

''जबसे 'पानी के गुब्बारे' लगाये गये हैं, तबसे कभी नहीं। तुमने देखा न कि उस विशाल गुब्बारे से पाइप किस तरह जोड़े गये हैं। उनकी मदद से जितनी बारिश और जितने पानी की जरूरत होती है उतना हम लेते हैं। हमें कभी बाढ़ या तूफान का भी सामना नहीं करना पड़ता है। प्रकृति हमें अधिक से अधिक जितना दे सकती है, हम उसका फायदा उठाने में लगे हुए हैं। हमारे पास किसी से झगड़ा करने की फुर्सत ही नहीं होती। हर समय हमारे पास कोई न

कोई काम होता है। हमारी महारानी को वनस्पति विज्ञान में खासी दिलचस्पी है। उनकी यह दिली तमन्ना है कि पूरे देश को एक विशाल बगीचे में बदल दिया जाय।''

''विचार तो बहुत शानदार है। तुम्हारा मुख्य भोजन क्या है?''

''फल।''
''गरमी के मौसम में तुम अपने देश को ठंडा कैसे रखती हो? गरमी के मौसम में तो बारिश हमें स्वर्ग के आशीर्वाद की तरह लगती है।''

गरमी जब बर्दाश्त के बाहर हो जाती है, तब हम अपने खुद के बनाये फव्वारों से धरती पर खूब सारी बौछार करते हैं और जाड़े के मौसम में हम अपने कमरों को सूरज की गरमी से गर्म रखते हैं।

उसने मुझे अपना स्नानघर दिखाया जिसकी छत को हटाया जा सकता था। जब भी उसका मन करे, बस छत को हटाकर और फव्वारे का नल खोलकर वह फव्वारे का आनन्द ले सकती थी। (छत किसी बक्से के ढक्कन की तरह थी)

''तुम लोग भाग्यशाली हो! मैं बोल पड़ी। ''तुम्हारी तो इच्छा ही नहीं है। क्या मैं पूछ सकती हूँ कि तुम्हारा धर्म क्या है?''

''हमारा धर्म प्रेम और सच्चाई पर आधारित है। यह हमारा धार्मिक कर्तव्य है कि हम एक-दूसरे से प्रेम करें और पूर्ण सच्चाई के रास्ते पर चलें। अगर कोई व्यक्ति झूठ बोलता है तो...''
''मौत की सजा?''

''नहीं, मृत्युदंड नहीं। ईश्वर ने जिस जीव को बनाया है, खासतौर पर मनुष्य को, उसे मारने में हमें बिल्कुल भी मजा नहीं आता। अपराधी से कहा जाता है कि सबके भले के लिए वह इस देश को छोड़कर हमेशा के लिए चला जाये और फिर कभी न लौटे।''

‘‘किसी अपराधी को क्या कभी माफ नहीं किया जाता?’’

‘‘किया जाता है, अगर उसे वास्तव में अफसोस हुआ हो।’’

‘‘क्या तुम्हें अपने रिश्तेदार के अलावा किसी दूसरे पुरुष को देखने का अधिकार नहीं है?’’

‘‘पवित्र रिश्तों के अलावा किसी को नहीं।’’

‘‘पवित्र रिश्तों का हमारा घेरा बहुत छोटा है, यहाँ तक कि सगे चचेरे-ममेरे भाई-बहनों को भी पवित्र नहीं माना जाता है।’’

‘‘लेकिन हमारा घेरा तो बहुत बड़ा है। दूर का भाई भी सगे भाई जितना ही पवित्र माना जाता है।’’
‘‘यह तो बहुत अच्छी बात है। मैं देख रही हूँ कि आपके देश में पवित्रता का ही बोलबाला है। मैं आपकी शानदार महारानी को देखना चाती हूँ जो इतनी दूर तक सोचती हैं और जिन्होंने ये सारे कानून और नियम बनाये हैं।’’

सिस्टर सारा ने कहा, ‘‘ठीक है।’’

फिर उन्होंने एक तख्ते पर कुछ कुर्सियों को पेंच से कस दिया। इस तख्ते से उसने चिकनी और अच्छी तरह से पालिश की गयी दो गेंदें जोड़ दी। जब मैंने पूछा कि इन गेंदों का क्या काम, तो उन्होंने कहा कि ये हाइड्रोजन गेंदें हैं जो गुरुत्वाकर्षण का मुकाबला करेंगी। अलग-अलग भार के गुरुत्वाकर्षण के खिलाफ अलग-अलग क्षमताओं वाली गेंदें हैं। फिर उन्होंने एयर-कार में पंख की तरह दो ब्लेड लगा दी। उन्होंने बताया कि वे बिजली से चलेंगी। जब हम लोग ठीक से बैठ गये तो उन्होंने एक बटन दबाया और ब्लेड घूमने लगीं। वे तेज और तेज घूमने लगीं। पहले तो हमारी एयर-कार छः-सात फुट ऊपर उठी और फिर उड़ चली। जब तक मुझे समझ में आता कि मेरी सहेली ने मशीन को उल्टी दिशा में खींचकर एयर-कार को

नीचे ला दिया। जब एयर-कार जमीन से लगी, मशीन बंद हो गयी और हम बाहर निकल आये।
मैंने एयर कार से देख लिया था कि महारानी अपनी बेटी (जो चार साल की थी) और अपनी खास सेविकाओं के साथ बगीचे में घूम रही थीं।

''अरे! तुम यहाँ हो'' महारानी ने सिस्टर सारा की ओर देखते हुए कहा। मुझसे महारानी का परिचय कराया गया और उन्होंने बिना किसी तामझाम के मेरा स्वागत किया। महारानी को अपना परिचय देकर मैं बहुत खुश थी। बातचीत के दौरान महारानी ने बताया कि उन्हें अपने नागरिकों के दूसरे देशों के साथ व्यापार करने पर कोई आपत्ति नहीं है। ''लेकिन'' उन्होंने आगे कहा कि उन देशों के साथ किसी भी तरह का व्यापार मुमकिन नहीं था जो अपनी औरतों को जनानखाने में ही रखते हैं और इसलिए वे हमसे साथ व्यापार नहीं कर पातीं। पुरुष हमें नैतिक रूप से संतोषजनक नहीं लगे इसलिए हम उनके साथ किसी भी तरह का लेन-देन नहीं करतीं। हम किसी दूसरे की जमीन नहीं हड़पतीं, हीरे के एक छोटे से टुकड़े के लिए नहीं झगड़तीं भले ही वह कोहिनूर से कई गुना महंगा हो और न ही हम किसी शासक का तख्ता पलट करती हैं। हम ज्ञान के गहरे सागर में डुबकी लगाती हैं और उन कीमती हीरों को ढूँढने की कोशिश करती हैं जिन्हें प्रकृति ने अपने खजाने में हमारे लिए संजोकर रखा है। प्रकृति के उपहारों का जितना अधिक लुत्फ उठा सकती हैं, हम उठा रही हैं। महारानी से मिलने के बाद मैं प्रसिद्ध विश्वविद्यालय देखने गयी जहाँ मुझे उनके द्वारा बनाये गये कुछ उपकरण, प्रयोगशालाएँ और वेधशालाएँ दिखायी गयीं।

अपनी पसंदीदा जगहों को देखने के बाद हम फिर एयर कार में बैठे। लेकिन जैसे ही उसने चलना शुरू किया, पता नहीं, कैसे मैं फिसल कर गिरी और मेरी नींद टूट गयी। अपनी आँख खोलने पर मैंने खुद को आराम कुर्सी में धँसा पाया।

******

सुल्ताना का सपना से साभार, अनुवाद वीरेंद्र कुमार चंदोरिया

शिक्षा संवाद
2022, 9 (1-2): 38-47
ISSN: 2348-5558
©2022, संपादक, शिक्षा संवाद, नई दिल्ली

आलेख

अस्मिता, भाषा और सत्ता

वीरेंद्र कुमार चंदोरिया
शिक्षाशास्त्र विभाग
इलाहबाद विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश
ईमेल –chandoriakr@gmail.com

सार

देश की भिन्न-भिन्न भाषाओं के अस्तित्व संबंधी मुद्दे, भाषा की हैसियत से जुड़े सवाल जिनमें भाषा का समाज-सांस्कृतिक तथा आर्थिक प्रभाव भाषा की गतिशीलता, भाषायी वर्चस्व, भाषा और उसके साथ जुड़ी हुई अस्मिता तथा भाषा का राजनीतिकरण, भाषा को एक ऐसा आधर प्रदान करते है जो सतत परिवर्तनीय और बहु-आयामी हो सकता है। इतना ही नहीं इससे इत्तर भी भाषा के साथ जुड़े हुए ऐसे विषय है जैसे भाषा के धूरवीकरण, वैश्वीकरण तथा भाषा का उपनिवेशवाद, नवउपनिवेशवाद, एवं नव- उदारवाद के साथ रिश्ता, जो हमें भाषा को एक नए ढंग से समझने के लिए प्रेरणा देते रहे है। यदि भारतीय परिवेश और समाज के संदर्भ में बात करे तो भाषा का सवाल महत्वपूर्ण है क्योंकि इसकी बुनियाद स्कूल में है, चूंकि भारत एक बहुभाषिक और बहु-सांस्कृतिक राष्ट्र है इस नाते देश की शिक्षा पद्धति के समक्ष विभिन्न भाषाओं और उनसे जुड़े प्रश्न कई चुनौतियाँ प्रस्तुत करते है। स्कूल एक संस्थानिक हैसियत रखने वाली संस्था होती है इसलिए इस क्षेत्र में क्या, कैसे और किस प्रकार होता है उसे भी अनदेखा नहीं किया जा सकता और इसे अधिक गहराई से जाँचने की जरूरत है। दरअसल भाषा के साथ अस्मिता तथा व्यक्तित्व की धरणाएँ जुड़ी होती है तथा कक्षाओं में हमने पाया है कि शिक्षक जाने-अनजाने अपनी पूर्व धरणाओं के साथ कक्षाओं में आते हैं जिनमें वह तमाम धरणाएँ विश्वास और मूल्य समाहित होते है जिसकी तलहटी में वर्गों, जातियों, समुदायों को ढूँढा जा सकता है जो ज्यादातर आपसी सम्बन्धें में व्याप्त होते है। परिणाम स्वरूप भाषा सत्ता, पहचान और राजनीति के एक ऐसे उपकरण के रूप में कार्य प्रयुक्त होने लगती है जो हमे एक करने के बजाए अलग करने लगती है। प्रस्तुत पर्चे का मूल उद्देश्य इन्ही समीकरणों की तलाश करना है।

कूटशब्द : अस्तित्व, भाषा, सत्ता, स्कूल, पाठ्यक्रम

शिक्षा संबंधी बहसों के मुद्दे अक्सर भाषा से इत्तर इतिहास, राजनीति विज्ञान एवं समाजविज्ञान के संदर्भ में चर्चा होती है और वह भी पाठ्यपुस्तकों पर केन्द्रित कि इनविषयों के शिक्षण के लिए निर्मित पाठ्यपुस्तकें राजनीति, दलगत राजनीति, सेप्रेरित हैं। लेकिन भाषा शिक्षण के संदर्भ में राजनीति के सवाल पर अक्सर चुप्पीनजर आती है। यह मान लिया जाता

है कि भाषा शिक्षण में क्या राजनीतिहोगी! इसलिए भाषा शिक्षण के नजरिए और विषयवस्तु को राजनीति सेजोड़कर देखने के प्रयास भी कम ही हुए हैं। हमे लगता है कि भाषा के शिक्षणको भी राजनैतिक व्यवस्था के संदर्भ में समझा जाना अपेक्षित है। यदि तर्कतःसमझने की कोशिश करे तो, यदि भाषा का शिक्षण शिक्षा व्यवस्था का अंग है और शिक्षा व्यवस्था राज्य की राजनैतिक सोच का अंग है तो लाजमी तौर परभाषा के शिक्षण को भी राजनैतिक सोच से संबद्ध होना चाहिए अर्थात्, इसनजरिए के अनुसार, किसी भाषा का शिक्षण तानाशाही राज्य तथालोकतांत्रिक राज्य में भिन्न होना अपेक्षित है। उदाहरण के लिए, किसी ऐसे देशपर विचार करें जहां किसी धर्म के आधार पर राजनैतिक व्यवस्था की रचनाकी गई हो। ऐसे देश के स्कूलों में भाषा की पढाई से मुख्यतः दो उम्मीदें की जासकती हैं। पहली यह कि भाषा की पढाई के नाम पर उस धर्म की मान्यताएंबताई जाएं पर उनका विश्लेषण नहीं किया जाए। यानी, उस धर्म कीमान्यताओं को आलोचनात्मक चिन्तन के दायरे में लाए बिना उन पर विश्वासकरना सिखाया जाए। दूसरी उम्मीद यह की जा सकती है कि उस धर्म को संदेहके घेरे में लाने वाली बातें भाषा की पढाई का हिस्सा ही न बनें। इन दोनों ही उम्मीदों का शिक्षणशास्त्रीय पहलू यह है कि शिक्षार्थी भाषा काउपयोग याद करने तथा याद किए को व्यक्त करने तक सीमित रखें।ऐसा इसलिए क्योंकि ऐसे देश में माना जाएगा कि पाठों में बताईगई बातें अनिवार्य हैं और इस कारण वे पुनर्विचार से परे हैं। इसकेविकल्प में लोकतंत्र को चाहने वाले देश में दी गई बातों को यादकरने से आगे बढ़कर उन्हें संदर्भ के साथ समझने और जोड़करदेखने की होगी। (रावत,2006)

आमतौर पर स्कूलों में ऐसी पद्धतियां अपनाई जाती हैं जो चिन्तनको हतोत्साहित करती हैं या जिनसे चिन्तन हतोत्साहित हो जाताहै। उनमें से एक पद्धति है तथ्यों और सूचनाओं को अधिक महत्त्वदेते हुए उनके रटने पर जोर देना। यह इस खतरनाक अंधविश्वासपर टिका है कि अधिक तथ्यों के मालूमात होने से ज्ञान हो जाताहै। अनेक छितरे और असंबद्ध तथ्यों को शिक्षार्थियों के दिमाग मेंइकट्ठा कर लेने भर से मान लिया जाता है कि उसे अमुक विषयका ज्ञान हो गया है। बच्चों का समय और शक्ति तथ्यों को रटने में ही चुक जाती है। उनके पास सोचने के लिए बहुत कम समय औरऊर्जा बचती है। निश्चित तौर पर तथ्य रहित चिन्तन काल्पनिकहोता है, लेकिन सूचना चिन्तन की राह में उतनी ही बाधक होतीहै जितना इसका अभाव (फ्राम, 2001, पृष्ठ 214)।

दरअसल लोकतंत्र एक संवाद है। विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनैतिक आदि स्थितियों में संवाद स्थितियों के प्रति बदलतीसमझ संवाद को गति देती है। अलग-अलग स्थितियों के बीचपनपने वाले सूत्र संवाद को ऊर्जा प्रदान करते हैं। ऐसी स्थिति

को ध्यान में रखकर चलने वाली शैक्षिक प्रक्रिया शिक्षार्थियों के बीचसंवाद को जन्म देती है। ऐसी प्रक्रिया में शिक्षक तथा शिक्षार्थी केबीच संवाद के पनपने की गुंजाइश होती है। संवाद के लिएअनिवार्य शर्त है कि बात के संदर्भों को केंद्र में रखा जाए। भाषाके संदर्भ में एक महत्त्वपूर्ण विचार शब्द के अर्थ को संदर्भाधारितमानता है। उदाहरण के लिए, इस वाक्य पर विचार करें- ‘‘खुशकिस्मती से हाथी ज्यादा दूर तक तेज नहीं चल सकते।’’ जब तक संदर्भ नपता हो तब तक इस वाक्य का अर्थ निकालना मुश्किल है। अगरउपरोक्त वाक्य सेपहले कहा जाए- ’’हाथी के बच्चे बड़ों के साथचलने का भरसक प्रयास कर रहे हैं‘‘, तभी पहले वाक्य का अर्थस्पष्ट होगा। लेकिन यदि बात यह हो कि- ’’एक हाथी के पीछे बीसचोर पड़े हैं। खुशकिस्मती से हाथी ज्यादा दूर तक तेज नहीं चल सकते‘‘, तो अर्थ में परिवर्तन आ जाएगा। क्योंकि संदर्भ बदल गयाहै। इसलिए, अर्थ तक पहुंचने के लिए संदर्भ पर विचार करनाआवश्यक है।दरअसल हमारा यह उदाहरण भाषाई ज्ञान से जुड़ा है जो हमें भाषा के भीतरी अर्थ को समझने में सहायता देते हैं (रावत,2006)।

संवाद की यह अवस्था एक ऐसी स्थिति में कमजोर होती है जब संदर्भ के आयाम कमजोर हो या फिर उन्हे ऐसी भाषा से जोड़ा जाए जो अबोध हो, एक उदाहरण लीजिये

दिल्ली के सरकारी स्कूल से इंटरमिडियेट की शिक्षा पूरी करने के बाद दिनेश ने दिल्ली के एक विश्वविद्याल में एएम.एड. विषय में दाखिला लिया. विषय को ठीक से समझने और उसे व्यक्त करने के कारण और अंग्रेजी में हाथ तंग होने के कारण दिनेश ने हिन्दी को परीक्षा के माध्यम के रूप में चुना, लेकिन विश्वविद्याल के नियमानुसार कक्षा का माध्यम अग्रेजी ही रहा, तब तक दिनेश इस बात से अनजान था कि भाषा की भूमिका अभिव्यक्त की सुविधा ही सिर्फ़ नहीं है. शुरुआती दिनों में हिन्दी की पुस्तकों पर आश्रित रहने के बाद पहले ही सेमेस्टर में दिनेश ने अंग्रेजी की भी पुस्तकों का उपयोग किया. दूसरे सेमेस्टर में दिनेश ने सिर्फ़ अंग्रेजी की पुस्तकों का सहारा लिया लेकिन परीक्षा में रीमिक्स यानी हिंग्लिश का प्रयोग किया. दिनेश का नतिज़ा पिछले समेस्टर से बेहतर था. यह किस्सा इसलिये नहीं बताया कि अंग्रेजी के प्रयोग ने दिनेश के अंक को बढ़ा दिया. बल्कि इसलिये कि उसकी समझ में धीरे धीरे आना शुरु हो गया था कि हिन्दी को माध्यम के रूप में उपयोग करने वाले के लिये एएम.एड. उतना स्पेस नहीं दे सकता. स्नातकोत्तर का दूसरा सेमेस्टर उसके प्रथम सेमेस्टर से भी अधिक संघर्षपूर्ण रहा. विषय की सभी शाखाओं के रीडिंग पैकेज अंग्रेजी में थे और उसके जैसे बहुत से छात्रों को

यह मान कर चलना था कि उन्हे इसी माध्यम में चीजों को पढना होगा बेहतर अंक और समझ के लिये. यहां से नयी जद्दोजहद शुरु हुई. पहले रीडींग को पढना, पहले पाठ में केवल अंग्रेजी के जटील शब्दों के अर्थ को जानना, दुसरे में अर्थ को संदर्भ में समझने की कोशिश करना, तीसरे में यह समझना की रीडींग किन पहलुओं को उजागर कर रहा है और चौथे में निहितार्थ समझना. अब सोचिये कि जिस पाठ को अंग्रेजी माध्यम के छात्र एक बार में समझ सकते थे उसे दिनेश को चार बार में समझना पड़ता था. और यह समझ भी संतोषजनक नहीं थी क्योंकि अपरिचित भाषा से प्राप्त ज्ञान कितना सुदृढ़ होगा ? प्रथम सेमेस्टर में हिन्दी माध्यम के अधिकांश छात्र फ़ेल हुए, विवशता में अंग्रेजी को अपना माध्यम बनाये छात्रों में से एक उसकी स्थिति भी अच्छी नहीं थी. पहले से दूसरे सेमेस्टर तक हिन्दी माध्यम के अधिकांश विद्यार्थी या तो इस विषय को छोड़ चुके थे या किसी तरह संघर्षरत थे, पचपन प्रतिशत बनाने के लिये क्योंकि एम.फ़िल. प्रवेश या नोकरी की यह न्युनतम अहर्ता होती है. अब उनका संघर्ष विषय को समझने का नहीं बल्कि अध्ययन को जारी रखने का था. यह पूरा दोष भाषा का नहीं है. परंतु यह प्रश्न तो है कि क्या अधिकांश हिन्दी माध्यम के छात्र कमजोर थे ? वे प्रतिभाशाली नही थे या उनकी असफ़लता का कारण भाषा भी थी. भाषा का यह भेद भाव नया नहीं है.

दिनेश का यह उदाहरण इस बात का द्योतक है कि कैसे आखिर भाषाई सत्ता विशेष प्रकार के ज्ञान का उत्पादन करती है, जो किसी एक खास भाषा के ज्ञान और उसके व वर्चस्व को कायम रखने में मदद करे.

अगर आप थोड़ा ठहर कर विचार करें तो आप उस और अभिमुख हो सकते हैं जहां से आप भारतीय भाषाओं और हिन्दी के रिश्ते को इसी वर्चस्व वाले धरातल पर आंक कर देख सकते है। कहने का अभिप्राय यह है कि वर्चस्व के संबंद में जैसा रिश्ता अंग्रेजी का हिंदी से है ठीक वैसा ही रिश्ता हिंदी का भारतीय भाषाओ से है और अलग अलग भाषाओं का अन्य भाषाओं से भी है। इसका भी उदाहरण देखें-

रिहाना और सुधाकर महाराष्ट्र- कर्नाटक के सीमावर्ती क्षेत्र में कर्नाटक की ओर रहते हैं। इनके परिवार में घर पर सभी मराठी में ही बोलते हैं। ये दोनों एक सरकारी स्कूल में पढ़ते है जहाँ सभी विषय कन्नड़ में पढ़ाये जाते हैं।

स्कूल में रोजाना लगने वाली कक्षाये कन्नड में ही हो इस बात का ख्याल रखा जाता है । इस स्कूल में विरले ही कभी मराठी सुनी जाती हो। वे अपने आप को उस माहोल से अलग और डरा हुआ महसूस करते हैं। उनके परिवार में मनाये जाने वाले त्योहार उनके स्कूल में नहीं मनाये जाते, जैसे उगड़ी। वे बताते है कि प्राय: उन्हे ये महसूस होता है कि उनके परिवार की भाषा व रहन-सहन महत्वपूर्ण नहीं है क्योकि वह स्कूल के अनुसार नहीं है।

दिनेश और रिहाना व सुधाकर की समस्याका मूल एक ही है, इस संबंध में हमे अपने आप से भाषाई पहचान के संबंध में यह प्रश्न करने चाहिए की

- दिनेश को अपनी पढ़ाई जारी रखने और एक ऐसी भाषा में समझ बनाना जो उसकी नहीं है, के लिए इतना संघर्ष क्यो करना पड़ रहा था?
- कर्नाटक के स्कूलों में मराठी माध्यम से और महाराष्ट्र में कन्नड भाषा में पढ़ाई की आज़ादी क्यो नहीं है?
- क्या आप अन्य भाषाओं के संबंध में भी कोई उदाहरण याद कर सकते हैं?
- यह स्थिति विचरण करने वाली आबादी के बच्चों की पहचान को कैसे खत्म कर देती है?
- आप को यह भी विचार करना चाहिए कि समकालीन वैश्विक संदर्भ में क्यो अंग्रेजी की इतनी मांग बढ़ी है ?

वास्तव में भाषा ज्ञान की पद्यति अक्षरमाला से शुरू होती है और जब बच्चा स्कूल की रहस्यमयी दुनिया में कदम रखता है तो उसके द्वारा सीखे जाने वाले पहले शब्द उसके भाषायी और सामाजिक संस्कार बनाते हैं और यदि वे संस्कार किसी एक खास प्रभुत्व का प्रतिनिधित्व करें तो वह शब्द ऐसे राजनैतिक और सामाजिक संस्कारों का निर्माण करते हैं जिनकी उपयोगिकता बेहद संदिग्ध् होती है और यदि भाषायी दृष्टि से कहा जाए तो रूढ़ शब्दों का प्रयोग निर्दोष नहीं हो सकता जो कि अक्सर हमारी चर्चा का हिस्सा बन चुकी है।

भाषा का ऐसा ही रूप इतना रूढ़ हो चुका है कि वह कई बार अलगाव, विषमताओं और प्रभुत्ववादी धरणाओं का निर्माण करता है, वाक्-पटुता तथा शब्द जाल का आडम्बर बहुत तीखा और कई मायनों में बहुत दु:खदायी होता है उदाहरण स्वरूप कपड़े धोने वाले

व्यक्ति को उसके पारम्परिक नाम से बुलाने में कोई हर्ज नहीं है परन्तु बुलाने के ढंग में अंतर हो सकता है अर्थात् भाषा का अलगाववादी प्रयोग, शायद इसी भाषा प्रयोग से उस व्यक्ति को चुभता है और दुःख भी होता है, एक और उदाहरण दूँ तो हिन्दी की पाठ्य पुस्तकों में लगी लक्षमा की कहानी स्कूली लड़कियों में हीन-भावना को पुष्ट करती है, शायद पाठ्यक्रम समिति ने सोचा भी न हो परन्तु उससे उलट आज लड़कियों में लक्षमा नाम को तिरस्कृत और छोटी नजर से देखा जाता है, फिर लक्षमा ही क्यो गीता, चंदरकला, रामकली, मंजु, सुनीता आदि अनेक नाम शब्द ऐसे जिससे लड़कियाँ अपनी पहचान को जोड़ने से अक्सर परहेज करती है, यह फिर वही प्रयोग की दृष्टि से है मसलन नाम में कोई बुराई नहीं परन्तु कहने का सन्दर्भ ही अस्मिता से जुड़ जाता है जो तीखा और दुखदायी हो सकता है। आगे बढ़ने से पहले पाठकों से केवल इतना अनुरोध् आवश्यक है कि वह इस प्रस्तुति के समय संवेदनशीलता जरूर बरते।

भाषाई घेरे में पुष्ट होती वर्गीय संस्कृति जैसा कि मैंने पहले भी कहा की भाषा का आडम्बर और प्रभुत्ववादी स्वरूप बहुत तीखा और दुःखदायी होता है क्योंकि कई बार ऐसे कृत्य और शब्द ठेस पहुंचाते हैं जिससे व्यक्ति तिरस्कृत और दुःखी होता है। मैंने बचपन में एक कहवात सुनी थी कि ‘‘काणें को काणा मत कहो, काणा जायेगा रूठ, चुपके से पूछ ले कैसे गई फूट’’, शायद यह कहावत उस ओर संकेत कर रही है जिसे हम भाषा का व्याकरण कह सकते हैं। कई ऐसी कही और अन कही दास्तान है जिससे यह स्पष्ट होता है कि वर्ग की संस्कृति का फैलाव एक विशिष्ट भाषाई फैलाव से है जिससे न व्यक्ति अथवा मानसिक स्तर पर भी सघन चोट पहुंचती है भाषा की यह वर्गीय संस्कृति कई बार ऐसे ढंग से वितरित होती है जो अनचाहे भी दुःख पहुंचा जाती है।

> एक बार एक कक्षाई अवलोकन के दौरान मैं पाया कि कक्षा में अध्यापिका पंचायती राज से संबन्धित पाठ पर चर्चा कर रही थी तथा पंचायतों में आरक्षण के विषय में बच्चों को पढ़ा रही थी तभी एक सन्दर्भ के दौरान अध्यापिका ने अनुसूचित जाति और जनजाति के उम्मीदवारों को पंचायत में आरक्षण होने की बात कही, उसी दौरान एक बच्चे ने अध्यापिका से पूछा कि मैडम ये आरक्षण क्या है? इस प्रश्न का उत्तर देते हुए अध्यापिका ने बताया कि कुल स्थानों में से कुछ स्थानों पर केवल इन्हीं जातियों के लोग चुनाव लड़ सकते हैं, प्रतिउत्तर में बच्चे ने एक और प्रश्न पूछा मैडम ये कौन होते है; अनुसूचित जाति और जनजाति के लोग ? तब अध्यापिका ने बिना किसी हिचकिचाहट से जवाब दिया कि ‘जो

लोग गरीब और नीची कोम के होते हैं' वही होते थे।ऐसे बच्चों को स्कूल से वर्दी, छात्रावृत्ति भी मिलती है ना वही एससी/एसटी।

यहाँ अध्यापिका ने जो कुछ भी कहा वह सही तो नहीं ठहराया जा सकता परन्तु जिस प्रकार कहा गया शायद वह उस कक्षा में बैठे संबन्धित जाति के उन छात्रों के लिए अत्यंत दुःखदायी जरूर रहा होगा तथा उन बच्चों के लिए आवश्यक तौर पर जिन्होंने अपनी समझ बिल्कुल नए रूप बनाई होगी। अध्यापिका को इसके उलट बड़े ही संवेदनशील तरह से इस मुद्दे से निपटना चाहिए था। जिसकी अपेक्षा हम अध्यापिका से कर सकते है। जैसे कि अध्यापिका को चाहिए था कि वे पंचायत इन समुदायों के प्रतिनिधित्व के विषय पर चर्चा कर सकती थी। जिससे स्थिति अधिक सकारात्मक रूप से स्पष्ट हो सकती थी। अक्सर कक्षाई प्रक्रिया में आप पायेंगे कि हम बच्चों को ऐसे बोलने और वैसे न बोलने की नसीहत देते रहते हैं फिर कक्षा ही क्यों हम घर में भी बच्चों से ऐसी ही उम्मीद करते है। अर्थात् हम बच्चों से ऐसी अपेक्षाएँ रखते हैं की वह एक शालीन और स्वच्छ भाषा; मानकद्ध बोले परन्तु हम यह कभी समझ ही नहीं पाते की हमारे बच्चे या हम वही भाषा का प्रयोग करते हैं जो अक्सर उन्हें परिवेशिक सन्दर्भों से मिलती है। परन्तु हम भूल जाते हैं कि बच्चे कि मातृ भाषा/बोली हमें उसके ओर उसको हमारे नजदीक लाती है, और वह उसी भाषा में अपने आप को सहज महसूस करता है। और जब बच्चा अपनी भाषा बोलता है तो हम समझते हैं कि उसकी भाषा दूसरे दर्जे की है तथा फिर उससे धीरे –धीरे वर्ग की बदबू आने लगती है। ऐसा ही एक उदाहरण मैं आपको यहाँ देना चाहूँगा, वह यह कि

हम में से एक संदस्य कुछ ही दिन पहले प्राथमिक सेवारत् अध्यापकों की एक कार्यशाला में गया वहाँ एक चर्चा के दौरान एक अध्यापक ने कहा कि स्कूल में पढ़ने वाले अधिकतर बच्चे पढ़ना ही नहीं चाहते वह तो बस खेलने और खाने के जिए विद्यालय आते हैं। मुझे यह थोड़ा अटपटा जरूर लगा पर मैंने संवाद को बढ़ाना ही उचित समझा तब मैंने कहा तो क्या हुआ उसकी उम्र। ''वह तो बस खेलने और खाने आते है और वह अधिकतर बच्चे मजदूरों के होते हैं मुझे यह सुनने में अटपटा अवश्य लगा परन्तु मैंने संवाद को आगे बढ़ाते हुए चर्चा जारी रखी तभी उन्होंने पिफर कहा वह बड़े ही गन्दे और हरामी होते हैं और गन्दी-गन्दी गालियाँ निकालते हैं ऐसे बच्चों के साथ हम अपने बच्चों को कैसे पढ़ा सकते हैं पिफर तो हमारे बच्चे भी वैसे ही हो जायेंगे'' जाहिर है।

अध्यापक साहब ने जो भी कहा वह उनकी व्यक्तिगत राय हो सकती है परन्तु उन्होंने जिस लहजे और जिन उपमाओं के साथ कहा उसे एक समाजवादी और समानता पर चलने वाले समाज में उचित नहीं ठहराया जा सकता और जब एक अध्यापक के सन्दर्भ में हो तो यह कतई सही नहीं हो सकता, यह तो केवल बातचीत के दौरान का वर्गान्तर था, वरन् आप समझ सकते हैं कि जब वह विद्यालय में होते होंगे तो उनकी भाषा और व्यवहार उन बच्चों के प्रति कैसा होता होगा जो मूलभूत सुविधओं के अभाव में पहली पीढ़ी के अधिगमार्थी के रूप में पढ़ रहे हैं। मुझे तब और भी अचंभा हुआ जब वहाँ बैठे सभी अध्यापकों ने उस अध्यापक की बातों में हाँ मे हाँ मिलाई, वास्तव में यह समझना अधिक कठिन नहीं हो सकता की शालाओं में पढ़ने वाले बच्चे किस-किस प्रकार की भाषाओं, टिकाओ, टिप्पणियों से दो चार हो रहे होंगे परन्तु उससे उलट अध्यापकों को चाहिए कि वह समझे कि भारत एक बहु सांस्कृतिक देश है और वह जिस विद्यालय में पढ़ाते हैं वह एक भिन्न-भिन्न संस्कृति वाला स्कूल है, जहाँ पर बच्चों की खाने, बैठने, चलने, बोलने, समझने और बात करने की आदते एक जैसी नहीं हो सकती और अधिक व्यापक रूप से तब जब समाज के सबसे निचले तबके जो हाशिए पर जीवन चालित कर रहा है जिसे दो समय का खाना जुटाने के लिए कड़ी मशकत करनी पड़ती है तथा जिनके पास रात गुजारने के लिए बसेरा भी नहीं है उनसे बहुत अधिक अपेक्षाए रखना सही समझदारी नहीं है शायद यह इन अध्यापकों की कुटिल मानसिकता ही है जो मजदूरों के बच्चों को विद्यार्थी नहीं समझते है, मुझे याद है कि मैंने वर्णमाला सीखते हुए 'क्ष' से क्षत्रिय ही पढ़ा था और आज भी वही पढ़ाया जाता है जिससे मेरे मस्तिष्क में क्षत्रिय की तस्वीर बनती है ना कि किसी मजदूर की यह उसी निर्धारित ज्ञान की चाश्नी है जो हमें पंडित शब्द के साथ जी लगाने को मजबूर करती है और यदि जी नहीं लगाया तो मेरी भाषा कुटिल और मुझमें शिष्टाचार नहीं है कि छाप लगा देती है। अब तो वर्ग और हैसियत दोनों समान्तर होते चल रहे है क्योंकि अंग्रेजी भाषा बोलने वाला अधिक शिष्टचारी है और मातृभाषा में बात करने वाला बदतमीज। तभी हमारे समाज में अंग्रंजी के बहुतायत शब्दों का प्रयोग करने के लिए हम बच्चों पर दबाव बनाते हैं यही कारण है कि भाषा वर्ग का परिचायक बनती है तो कही भाषा वर्ग की लकीर खींचती है।

जीरोम ब्रुनर कहते हैं कि बच्चे अपने समाज और संस्कृति को ग्रहण करते हुए बड़े होते है, समाज व संस्कृति उनके सीखने के स्वभाव को निर्धारित करती है। बहुत हद तक उसके इस स्वभाव से निर्धारित होता है कि बच्चा क्या सीखेगा और किन बातों को सीखना उसके लिए आसान होगा। एक शिक्षक के लिए यह महत्वपूर्ण बातें हैं। संस्कृति और शिक्षा के अत:संबंध में भाषा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह एक साधरण बात है, अगर बच्चे को उसकी मातृभाषा में पढ़ाया जाए या मार्गदर्शन किया जाए तो वह उसकी रुचि के अनुसार

चुने गये विषय में अधिक पारंगत होगा। इसके बजाय बच्चे को उसकी मातृभाषा में न पढ़ाया जाए और अन्य भाषा में मार्गदर्शन किया जाए तो उसकी रुचि विषय की जानकारी हासिल करने से हटकर अन्य भाषा को समझने में लग जाएगी। इस अंतरद्वंद से विषय में निपुण होने की बच्चे की संभावनाएँ धूमिल हो जाती है। कुछ लोगों का यह भी मानना हैं कि बच्चे की स्मरण शक्ति वयस्कों से अधिक होती हैं इसलिए बच्चा एक से अधिक भाषाओं को आसानी से ग्रहण कर सकता है। परंतु यह बात अधिक अनुसंधानिक होते हुए भी तर्कसंगत नहीं है, क्योंकि बच्चे के स्कूल में प्रवेश लेने का उद्देश्य विषय की जानकारी पाकर उस विषय में निपुण होना होता है, न की अन्य भाषा सीखने के उद्देश्य से स्कूल में प्रवेश लेता है। अगर स्कूल में प्रवेश लेने का उद्देश्य केवल अन्य भाषा सीखना हो तो बच्चों को अवश्य तीन भाषाओं की जानकारी दी जा सकती है। परंतु विषय की जानकारी के लिए बच्चों की मातृभाषा में ही शिक्षा दी जानी चाहिए। इसी उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए भारतीय संविधान ने कुछ सूचनाएँ दी हैं।

शिक्षा मनुष्य की आंतरिक क्षमता तथा उसके व्यक्तित्व को विकसित करने की प्रक्रिया है। यह उसे समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए समाजीकृत करती है तथा एक उत्तरदायी नागरिक एवं समाज का सक्रिय सदस्य बनाने के लिए व्यक्ति को आवश्यक ज्ञान तथा कौशल उपलबद्ध कराती है सामाजीकरण की एक प्रक्रिया के अंग के रुप में यह नए सदस्यों के मन में समाज की सांस्कृतिक विरासत मानकों एवं मूल्यों को आत्मसात कराती है। सामाजीकरण यह प्राथमिक तथा अनौपचारिक प्रक्रिया है। जिसके अंतर्गत एक व्यक्ति दूसरों की सामजिक अपेक्षाओं के अनुरुप अपने व्यवहारों को ढालता है। इस प्रक्रिया में वह पूर्णत: समाज के संस्कृतिक और व्यावहारिक नियमों को समझने का प्रयास करता है। उद्देश्य की दृष्टि से भारत में शिक्षा की परिभाषा कुछ इस प्रकार से दी जाती थी। "विद्या के उद्देश्य दो थे: तात्विक दृष्टि से सत्या-सत्य का ज्ञान और व्यावहारिक दृष्टि से कर्त्तव्याकर्तव्य का ज्ञान जिसके आधार से मानव अपने जीवन विकास में समन्वय करता था और भाव, ज्ञान, कर्मवृत्ति को मौलिक बनाता था। इसका उपयोग वह समाज के कल्याण में ही लगाता था। जिससे वह शिक्षा ग्रहण से पहले यही मान लेता कि समाज का कल्याण ही शिक्षा का अंतिम उद्देश्य है। आज शिक्षा की परिभाषा भी बदल कई है। शिक्षा का उद्देश्य समाज से दूर होकर स्वयं के विकास और विशिष्ट वर्ग के विकास के लिए हो चुकी है जिसमे भाषा ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

*****

संदर्भ

- फ्राम, एरिक, द फीयर आफ फ्रीडम, रूटलेज, लंदन, 2001।
- रावत, बीरेन्द्र सिंह, लोकतन्त्र और भाषा शिक्षण: कुछ अंतर-संबंध, शिक्षा विमर्श, जनवरी-फरवरी, 2011, दिगंतर, जयपुर।
- सिंह, पुजा., अभिव्यक्ति की तलाश, अंक1, वर्ष-1, शिक्षा संवाद, जनवरी-जून 2014, नई दिल्ली।
- चंदोरीया, वीरेंदर कुमार, भाषा का व्याकरण, अंक1, वर्ष-1, शिक्षा संवाद, जनवरी-जून 2014, नई दिल्ली
- कुमार, दिनेश, बचपन के कंधों पर डुगडुगी, कोंटेपररी डायलोग, अंक 2-3, वर्ष-1, जुलाई- दिसम्बर,2014, संवाद शिक्षा समिति, नई दिल्ली।
- वोलोशिनोव, वी. एन., माक्र्सवाद और भाषा का दर्शन, राजकमल, दिल्ली, 2002।
- जीरू, हेनरी ए., टीचर्स एज इंटेलेक्चुअलस-टूवडर्् ए क्रिटीकलपेड़ागागी आफ लर्निंग, वर्जिन एवं गार्वे, लंदन, 1988।

शिक्षा संवाद
2022, 9 (1-2): 48-60
ISSN: 2348-5558
©2022, संपादक, शिक्षा संवाद, नई दिल्ली

आलेख

एआई : उपयोग और निहितार्थ

नैन्सी सिंह
हिंदी विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय
ईमेल-singhnan99@gmail.com

सार

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) वह क्षेत्र है जिसमें कंप्यूटर और मशीनों को इस तरह से डिजाइन किया जाता है कि वे इंसान जैसी बुद्धिमत्ता प्रदर्शित कर सकें। इसका उद्देश्य मशीनों को ऐसे कार्य करने के लिए सक्षम बनाना है, जो सामान्यत: मनुष्य की मानसिक क्षमता से जुड़े होते हैं, जैसे कि सोच, सीखना, समझना और निर्णय लेना। एआई का इस्तेमाल विभिन्न क्षेत्रों में किया जा रहा है, जैसे स्वास्थ्य देखभाल, शिक्षा, वित्त, और परिवहन में। उदाहरण के लिए, एआई आधारित चिकित्सा प्रणालियाँ रोगों का निदान करने में मदद करती हैं, जबकि शतरंज खेलने वाली मशीनें भी एआई के माध्यम से विकसित की गई हैं।

कूटशब्द: एआई, शिक्षा, स्कूल, समाज, इतिहास।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) वह प्रौद्योगिकी है जो कंप्यूटरों और मशीनों को इंसानों की तरह सोचने, समझने और निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करती है। यह मशीन लर्निंग, डीप लर्निंग, न्यूरल नेटवर्क्स, और प्राकृतिक भाषा प्रोसेसिंग जैसे तकनीकी दृष्टिकोणों का उपयोग करके समस्याओं का समाधान करता है। एआई का उद्देश्य मानव जैसी बुद्धिमत्ता को कृत्रिम रूप से उत्पन्न करना है, ताकि मशीनें स्वचालित रूप से कार्य कर सकें और विभिन्न परिस्थितियों में अपने आप निर्णय ले सकें। इसका उपयोग विभिन्न क्षेत्रों में, जैसे कि चिकित्सा, वित्त, शिक्षा, परिवहन, और मनोरंजन में किया जा रहा है, और यह लगातार हमारे जीवन के हर पहलू को प्रभावित करता जा रहा है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) का आविष्कार एक निश्चित व्यक्ति या समय से जुड़ा नहीं है, बल्कि यह एक विकसित होती हुई प्रक्रिया है, जिसमें कई वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं का योगदान रहा है। हालांकि, एआई की नींव रखी गई थी 20वीं सदी के मध्य में।

- एआई का आरंभ और पहला विचार: एआई के विचार की शुरुआत 1950 के दशक में हुई। ब्रिटिश गणितज्ञ और कंप्यूटर वैज्ञानिक एलन ट्यूरिंग को आमतौर पर "आधुनिक एआई का पिता" माना जाता है। 1950 में, ट्यूरिंग ने "ट्यूरिंग टेस्ट" पेश किया, जो यह निर्धारित करने का एक तरीका था कि क्या मशीनें इंसान जैसी बुद्धिमत्ता प्रदर्शित कर सकती हैं। उनका प्रसिद्ध लेख *"Computing Machinery and Intelligence"* इस दिशा में पहला महत्वपूर्ण कदम था, जिसमें उन्होंने पूछा था, "क्या मशीनें सोच सकती हैं?"

- पहली बार एआई का आविष्कार और प्रयोग: 1956 में, एक महत्वपूर्ण सम्मेलन हुआ जिसे "डार्टमाउथ सम्मेलन" कहा जाता है, जहाँ "आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस" शब्द का पहली बार प्रयोग किया गया था। इस सम्मेलन का आयोजन जॉन मैककार्थी, मार्विन मिंस्की, नाथनियल रोचस्टीन और अन्य प्रमुख गणितज्ञों और कंप्यूटर वैज्ञानिकों ने किया था। इस सम्मेलन में एआई के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा हुई और इसे एक स्वतंत्र क्षेत्र के रूप में स्थापित किया गया।

- प्रारंभिक प्रयोग: एआई का पहला व्यावहारिक उपयोग "न्यूरल नेटवर्क्स" और "प्रारंभिक शतरंज खेल खेलने वाली मशीनों" में किया गया। 1950 और 1960 के दशक में, अलन ट्यूरिंग और जॉन मैककार्थी जैसे वैज्ञानिकों ने शतरंज खेलने वाली पहली मशीनों का निर्माण किया, जो शुरूआत में काफी सरल थीं, लेकिन उन्होंने एआई के संभावित उपयोग का प्रदर्शन किया।

इस प्रकार, एआई का आविष्कार एक समूह प्रयास था, जिसमें कई दशकों तक विभिन्न वैज्ञानिकों ने शोध और विकास किया। एआई का पहला वास्तविक उपयोग 1950 और 1960 के दशक में शतरंज खेल जैसी सरल गतिविधियों में हुआ था, जबकि इसके आधुनिक रूप और उपयोग 21वीं सदी में काफी विकसित हो चुके हैं।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के विकास का इतिहास कई दशकों में फैला हुआ है, और यह तकनीकी प्रगति, शोध और नवाचारों का परिणाम है। यहाँ हम एआई के प्रमुख विकासात्मक चरणों को संक्षेप में देखा जा सकता है -

प्रारंभिक चरण (1950-1960)

- एलन ट्यूरिंग और ट्यूरिंग टेस्ट (1950): एलन ट्यूरिंग ने 1950 में *"Computing Machinery and Intelligence"* नामक लेख में एआई के विचार को प्रस्तुत किया और ट्यूरिंग टेस्ट को परिभाषित किया, जिससे यह निर्धारित किया जा सकता था कि क्या मशीनें इंसान जैसी सोच और समझ प्रदर्शित कर सकती हैं।
- डार्टमाउथ सम्मेलन (1956): 1956 में जॉन मैककार्थी, मार्विन मिंस्की, नाथनियल रोचस्टीन और अन्य वैज्ञानिकों ने *डार्टमाउथ सम्मेलन* का आयोजन किया, जहाँ पर एआई को एक स्वतंत्र शोध क्षेत्र के रूप में परिभाषित किया गया। यहीं से "आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस" शब्द का प्रयोग हुआ।
- प्रारंभिक शतरंज कार्यक्रम: इस समय के दौरान, एआई ने शतरंज जैसी सरल खेलों को खेलने के लिए प्रोग्राम्स विकसित किए। इन्हें ट्यूरिंग और अन्य वैज्ञानिकों ने प्रयोग में लाया, जैसे कि शतरंज खेलने वाली सबसे पहली मशीन।

पहली पीढ़ी का एआई (1960-1970)

- सामान्य समस्या समाधान (General Problem Solver): 1959 में, जॉन मैककार्थी ने "LISP" (LISt Processing) प्रोग्रामिंग भाषा का निर्माण किया, जो बाद में एआई के शोध में प्रमुख रूप से इस्तेमाल हुई। इसी समय के दौरान, क्लार्क गिल्बर्ट और एलन न्यूल द्वारा सामान्य समस्या समाधान प्रणाली (General Problem Solver) विकसित की गई, जो विभिन्न प्रकार की समस्याओं को हल करने के लिए एक सामान्य दृष्टिकोण प्रदान करती थी।
- न्यूरल नेटवर्क्स: 1960 के दशक में, फ्रैंक रोसेनब्लेट ने *पेरसेप्ट्रॉन* नामक पहला न्यूरल नेटवर्क विकसित किया, जो मशीन लर्निंग के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण कदम था। यह शुरुआती मशीन लर्निंग मॉडल था, जो डेटा से सीख सकता था।

बाद की पीढ़ियाँ और शीत युद्ध (1970-1990)

- एआई की "सर्दी" (AI Winter): 1970 के दशक के अंत और 1980 के दशक की शुरुआत में एआई को एक संकट का सामना करना पड़ा, जिसे "AI Winter" कहा गया। यह मुख्य रूप से उम्मीदों और वास्तविक परिणामों के बीच का अंतर था। मशीन लर्निंग और न्यूरल नेटवर्क्स की सीमाएँ और संसाधनों की कमी के कारण एआई अनुसंधान में मंदी आई।
- विशेषज्ञ प्रणालियाँ: 1980 के दशक के मध्य में, एआई में फिर से उन्नति हुई, जब विशेषज्ञ प्रणालियाँ (Expert Systems) विकसित की गईं, जो विशेषज्ञों की तरह विशिष्ट समस्याओं का समाधान करने में सक्षम थीं। इन प्रणालियों का उपयोग चिकित्सा, इंजीनियरिंग, और व्यापार में हुआ। उदाहरण के लिए, MYCIN नामक प्रणाली चिकित्सा निदान में उपयोग की जाती थी।

मशीन लर्निंग और डेटा विज्ञान का उदय (1990-2000)

- मशीन लर्निंग: 1990 के दशक में, मशीन लर्निंग तकनीकों का विकास हुआ, जिसमें एल्गोरिदम डेटा से पैटर्न पहचानने और भविष्यवाणियाँ करने में सक्षम होते थे। सपोर्ट वेक्टर मशीन (SVM) और न्यूरल नेटवर्क्स जैसे नए मॉडल्स ने इस अवधि में लोकप्रियता हासिल की।
- इंटरनेट का प्रभाव: इंटरनेट और डेटा का विस्फोट हुआ, जिससे एआई के लिए डेटा और कंप्यूटिंग संसाधनों की उपलब्धता बढ़ी। इससे एआई के लिए नए अवसर खुले, जैसे कि वेब सर्च इंजन (जैसे Google) और ई-कॉमर्स में सुधार।

डीप लर्निंग और न्यूरल नेटवर्क्स का क्रांतिकारी विकास (2000-2010)

- डीप लर्निंग: 2000 के दशक में डीप लर्निंग (Deep Learning) तकनीकों का विकास हुआ, जिसमें कॉन्वोल्यूशनल न्यूरल नेटवर्क्स (CNNs) **और** रैकरेंट न्यूरल नेटवर्क्स (RNNs) जैसी तकनीकों का इस्तेमाल किया गया। इन तकनीकों ने कंप्यूटर विज़न, भाषाई प्रसंस्करण, और अन्य क्षेत्रों में एआई की क्षमता को बढ़ाया। **एलेक्सनेट**

(AlexNet) ने 2012 में कंप्यूटर विज़न में एक बड़ी क्रांति ला दी, जब इसने इमेज पहचान प्रतियोगिता में पहले स्थान प्राप्त किया।

- वॉयस असिस्टेंट्स और चैटबॉट्स: एआई के उपयोग के साथ वॉयस असिस्टेंट्स जैसे सिरी, अलेक्सा, और गूगल असिस्टेंट का विकास हुआ, जो दैनिक जीवन में हमारे साथ संवाद करते हैं। इसके साथ ही, चैटबॉट्स और प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (NLP) ने मानव-मशीन इंटरफेस को और बेहतर बनाया।

आधुनिक एआई (2010 से वर्तमान):

- स्वायत्त वाहन और एआई का समग्र उपयोग: वर्तमान में, एआई का उपयोग स्वायत्त वाहनों (Self-driving cars), स्वास्थ्य देखभाल, वित्तीय क्षेत्र, मनोरंजन, और स्मार्ट होम जैसी नई तकनीकों में हो रहा है। एआई ने जैसे **गूगल** और **टेस्ला** जैसी कंपनियों में अपने वाहन को स्वायत्त बनाने के लिए महत्वपूर्ण प्रगति की है।

- नैतिक और समाजिक मुद्दे: जैसे-जैसे एआई का उपयोग बढ़ रहा है, इसके नैतिक, सामाजिक, और कानूनी पहलुओं पर चर्चा भी बढ़ रही है। एआई की पारदर्शिता, डेटा सुरक्षा, और कामकाजी श्रेणियों में इसका प्रभाव प्रमुख चिंताएँ बन गई हैं।

एआई का विकास एक दीर्घकालिक और परिष्कृत प्रक्रिया है, जिसमें विभिन्न शोधकर्ताओं और वैज्ञानिकों का योगदान रहा है। यह लगातार विकसित हो रहा क्षेत्र है, और इसके भविष्य में और भी क्रांतिकारी बदलाव आने की संभावना है।

एआई कैसे काम करता है ?

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) विभिन्न तकनीकों का उपयोग करके काम करता है, जिसमें मशीन लर्निंग, डीप लर्निंग और न्यूरल नेटवर्क्स शामिल हैं। सबसे पहले, एआई सिस्टम को बड़े डेटा सेट दिए जाते हैं, जिनसे वह पैटर्न और रिश्ते पहचानने की कोशिश करता है। मशीन लर्निंग में, सिस्टम अपने अनुभव से सीखता है, यानी जितना अधिक डेटा और अनुभव मिलता है, एआई उतना ही बेहतर परिणाम देने लगता है। डीप लर्निंग, जो मशीन

लर्निंग का एक उपक्षेत्र है, एक जटिल संरचना के माध्यम से डेटा का विश्लेषण करता है, जैसे कि न्यूरल नेटवर्क्स, जो मानव मस्तिष्क की तरह कार्य करते हैं। एआई के सिस्टम यह निर्णय लेने के लिए इन पैटर्न और निष्कर्षों का उपयोग करते हैं, ताकि वे अपने कार्यों को स्वचालित रूप से सुधार सकें। इसके अलावा, प्राकृतिक भाषा प्रोसेसिंग (NLP) एआई को मानव भाषा को समझने और उस पर प्रतिक्रिया देने की क्षमता प्रदान करता है। इस प्रकार, एआई लगातार अपने कार्यों में सुधार करता है और नई जानकारी के आधार पर निर्णय लेने की क्षमता विकसित करता है।

एआई के प्रकार

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के मुख्य रूप से तीन प्रकार होते हैं, जो उसके कार्यक्षेत्र और क्षमता के आधार पर वर्गीकृत किए जाते हैं:

- संकीर्ण एआई (Narrow AI) या कमजोर एआई (Weak AI): संकीर्ण एआई वह प्रकार है, जो एक विशिष्ट कार्य को करने के लिए डिज़ाइन किया जाता है। यह मानव बुद्धिमत्ता की केवल एक विशेष सीमा तक नकल करता है और केवल उसी कार्य में कुशल होता है। उदाहरण के तौर पर, वॉयस असिस्टेंट (जैसे कि सिरी या अलेक्सा), चैटबॉट्स, स्पैम फिल्टर, और छवि पहचान सॉफ़्टवेयर संकीर्ण एआई के उदाहरण हैं। यह एआई अपनी क्षमता के दायरे से बाहर कार्य नहीं कर सकता।
- सामान्य एआई (General AI) या मजबूत एआई (Strong AI): सामान्य एआई वह प्रकार है जो मानव जैसी बुद्धिमत्ता को पूरी तरह से नकल करने में सक्षम होता है। यह किसी भी कार्य को सीखने, समझने और समाधान प्रदान करने में सक्षम होता है, जैसे कि मानव मस्तिष्क। वर्तमान में, सामान्य एआई का विकास एक शोध क्षेत्र है और अभी तक इसका व्यावहारिक रूप से विकास नहीं हो सका है। इसका उद्देश्य है, मशीनों को स्वतंत्र रूप से सोचने और निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करना।
- सुपरइंटेलिजेंस (Superintelligence): सुपरइंटेलिजेंस वह स्थिति है जब एआई मानव बुद्धिमत्ता से कहीं अधिक प्रभावी और सक्षम हो जाता है। यह प्रकार मानव से भी अधिक तेज़, बुद्धिमान और शक्तिशाली निर्णय लेने में सक्षम होता है।

सुपरइंटेलिजेंस का विकास वर्तमान में काल्पनिक है, लेकिन यह भविष्य में एक गंभीर चिंता का विषय हो सकता है, क्योंकि इसके परिणाम अनियंत्रित हो सकते हैं।

इन तीनों प्रकारों के विकास के साथ, एआई के क्षेत्र में लगातार शोध और नवाचार हो रहे हैं, और इसका मानव जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ सकता है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) का उपयोग विभिन्न क्षेत्रों में किया जा सकता है, और इसके प्रभाव लगातार बढ़ते जा रहे हैं। यहां कुछ प्रमुख क्षेत्रों का उल्लेख किया गया है जहां एआई का उपयोग किया जा सकता है:

- शिक्षा: एआई को व्यक्तिगत शिक्षा अनुभव देने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है, जैसे कि स्मार्ट ट्यूटरिंग सिस्टम, जो छात्रों के प्रदर्शन के आधार पर पाठ्यक्रम को अनुकूलित करते हैं। एआई चैटबॉट्स और असिस्टेंट्स छात्रों को त्वरित सहायता प्रदान कर सकते हैं, और शिक्षक प्रशासनिक कार्यों में मदद करने के लिए एआई का उपयोग कर सकते हैं।
- स्वास्थ्य देखभाल: एआई का उपयोग चिकित्सा निदान, रोग पहचान, और उपचार योजनाओं में किया जा सकता है। एआई-आधारित टूल्स जैसे कि इमेजिंग सिस्टम्स और रोबोटिक सर्जरी उपकरण, चिकित्सकों को अधिक सटीक और प्रभावी उपचार प्रदान करने में मदद करते हैं। इसके अलावा, एआई महामारी की भविष्यवाणी और दवाओं के विकास में भी सहायक हो सकता है।
- स्वचालित वाहन (ऑटोनोमस वाहन): एआई का इस्तेमाल सेल्फ-ड्राइविंग कारों में किया जा रहा है, जो बिना मानव हस्तक्षेप के सुरक्षित रूप से यात्रा कर सकती हैं। यह परिवहन क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव ला सकता है, जिससे सड़क सुरक्षा में सुधार हो सकता है और ट्रैफिक जाम की समस्या कम हो सकती है।
- वित्तीय सेवाएँ: एआई का इस्तेमाल धोखाधड़ी का पता लगाने, निवेश निर्णय लेने, और जोखिम विश्लेषण में किया जा सकता है। बैंकिंग और वित्तीय संस्थान एआई का उपयोग ग्राहक सेवा, लेन-देन की निगरानी और वित्तीय रिपोर्टिंग को स्वचालित करने के लिए करते हैं।

- उत्पादन और विनिर्माण: एआई का उपयोग उत्पादन प्रक्रियाओं को स्वचालित करने, गुणवत्ता नियंत्रण बढ़ाने, और आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन में किया जा सकता है। रोबोट्स और स्मार्ट मशीनों के माध्यम से मैन्युफैक्चरिंग प्रक्रियाओं में दक्षता बढ़ाई जा सकती है।
- ग्राहक सेवा: एआई-आधारित चैटबॉट्स और वॉयस असिस्टेंट्स का उपयोग ग्राहकों के सवालों का तत्काल उत्तर देने, उत्पादों और सेवाओं के बारे में जानकारी प्रदान करने, और समर्थन सेवा को स्वचालित करने के लिए किया जाता है।
- कृषि: एआई का उपयोग फसल की निगरानी, रोगों का पता लगाने, और कृषि उत्पादों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने में किया जा सकता है। स्मार्ट खेती के उपकरण फसल की वृद्धि, सिंचाई, और कीट नियंत्रण के लिए डेटा-संचालित निर्णय लेने में मदद करते हैं।
- सुरक्षा और निगरानी: एआई का इस्तेमाल सुरक्षा प्रणालियों में, जैसे कि चेहरे की पहचान, शारीरिक गतिविधियों की पहचान, और आपातकालीन स्थितियों में स्वचालित प्रतिक्रिया देने के लिए किया जा सकता है। यह सार्वजनिक और व्यक्तिगत सुरक्षा को बेहतर बनाने में सहायक हो सकता है।
- मनोरंजन और मीडिया: एआई का उपयोग फिल्म, संगीत, और गेमिंग इंडस्ट्री में किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, संगीत सिफारिश प्रणाली, वीडियो गेम्स में स्मार्ट बॉट्स, और वीडियो कंटेंट के लिए स्वचालित संपादन उपकरण एआई का हिस्सा हैं।
- जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण संरक्षण: एआई का उपयोग जलवायु परिवर्तन के प्रभावों का अनुमान लगाने, ऊर्जा खपत को अनुकूलित करने, और पर्यावरणीय संरक्षण में सुधार करने के लिए किया जा सकता है। इसके माध्यम से, प्रदूषण का विश्लेषण, ऊर्जा स्रोतों की दक्षता बढ़ाने, और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए समाधान विकसित किए जा सकते हैं।
- इन विभिन्न क्षेत्रों में एआई का इस्तेमाल मानव जीवन को सरल, सुरक्षित और अधिक प्रभावी बना सकता है।

शिक्षा में एआई की बढ़ती भूमिका

वर्तमान में, प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सबसे महत्वपूर्ण विकासों में से एक है आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई), जो शिक्षा के क्षेत्र में अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज करवा रहा है। एआई के माध्यम से शिक्षा में व्यक्तिगत ध्यान, शैक्षिक सामग्री का अनुकूलन, और प्रशासनिक कार्यों की दक्षता में सुधार संभव हुआ है। इस लेख में हम शिक्षा में एआई के प्रभाव, उसके लाभ, चुनौतियाँ, और भविष्य की संभावनाओं पर शोध आधारित चर्चा करेंगे।

एआई और शिक्षा: एक नया युग

शिक्षा में एआई के उपयोग का उद्देश्य छात्रों की शैक्षिक प्रक्रिया को अधिक व्यक्तिगत, प्रभावी और आकर्षक बनाना है। एआई के माध्यम से निम्नलिखित प्रमुख क्षेत्रों में सुधार देखा जा रहा है:

- वैयक्तिकृत शिक्षा (Personalized Learning): एआई छात्रों की गति, रुचियों और समझ के स्तर के आधार पर व्यक्तिगत शिक्षा अनुभव प्रदान करता है। एआई टूल्स जैसे कि स्मार्ट ट्यूटर और एडुकेशनल चैटबॉट्स छात्रों की प्रगति को ट्रैक करते हैं और उनकी आवश्यकता के अनुसार शैक्षिक सामग्री प्रस्तुत करते हैं। उदाहरण के तौर पर, जब छात्र किसी विशेष विषय में पिछड़ते हैं, तो एआई उन पर अतिरिक्त ध्यान केंद्रित करता है और उन्हें विशेष सहायता प्रदान करता है।
- स्मार्ट शिक्षा सामग्री (Smart Educational Content): एआई, शैक्षिक सामग्री को अनुकूलित करने में मदद करता है। मशीन लर्निंग एल्गोरिदम छात्रों की प्राथमिकताओं और उनकी समझ के अनुसार पाठ्यक्रम सामग्री को अनुकूलित करते हैं। इसके द्वारा, शिक्षक छात्रों के ज्ञान स्तर के अनुसार अनुकूलित पाठ्यक्रम तैयार कर सकते हैं, जिससे अध्ययन की प्रक्रिया अधिक प्रभावी बनती है।
- शिक्षण में आटोमेशन (Automation in Teaching): एआई के माध्यम से शिक्षक अपनी कक्षा में अधिक समय तक सक्रिय रूप से संवाद कर सकते हैं, जबकि प्रशासनिक कार्य जैसे कि परीक्षा मूल्यांकन, छात्रों की प्रगति ट्रैक करना और रिपोर्ट बनाना स्वचालित रूप से किया जा सकता है। इससे शिक्षकों को पढ़ाने पर अधिक

ध्यान केंद्रित करने का अवसर मिलता है और वे छात्रों की समझ को बेहतर तरीके से बढ़ा सकते हैं।

एआई के लाभ

- समय की बचत: शिक्षक के लिए प्रशासनिक कार्यों को एआई द्वारा ऑटोमेट करने से समय की बचत होती है, जिससे वे अपनी कक्षा में अधिक समय दे सकते हैं।
- स्मार्ट फीडबैक: एआई के माध्यम से छात्रों को तत्काल फीडबैक मिलता है, जो उनकी समझ को बढ़ाने में सहायक होता है।
- सार्वभौमिक पहुंच: एआई आधारित शिक्षा प्लेटफ़ॉर्म दुनिया के किसी भी कोने से विद्यार्थियों को उच्च गुणवत्ता की शिक्षा प्रदान करने में सक्षम होते हैं, जिससे शिक्षा का लोकतंत्रीकरण होता है।
- विश्लेषणात्मक क्षमता: एआई विद्यार्थियों के प्रदर्शन का विश्लेषण करता है और यह सुझाव देता है कि किन क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता है। इससे छात्रों और शिक्षकों को उनके प्रदर्शन पर ठोस जानकारी मिलती है।

एआई की चुनौतियाँ

- डेटा सुरक्षा और गोपनीयता: एआई के लिए छात्रों का व्यक्तिगत डेटा आवश्यक होता है। इससे डेटा सुरक्षा और गोपनीयता की समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं।
- अत्यधिक निर्भरता: अत्यधिक एआई पर निर्भरता छात्रों की स्वनिर्भरता और सोचने की क्षमता को प्रभावित कर सकती है।
- शिक्षकों की भूमिका में परिवर्तन: जब शिक्षा के अधिकांश कार्यों को एआई द्वारा किया जाने लगे, तो शिक्षक की भूमिका में बदलाव आ सकता है। इसका असर पारंपरिक शिक्षण पद्धतियों और शिक्षक-शिष्य संबंधों पर हो सकता है।

भविष्य की संभावनाएँ

शिक्षा में एआई की भूमिका भविष्य में और भी महत्वपूर्ण हो सकती है। कुछ संभावनाएँ हैं:

- विस्तृत शिक्षा-प्रौद्योगिकी प्रणाली: आने वाले समय में, एआई अधिक बहु-आयामी शिक्षा-प्रौद्योगिकी प्रणाली का हिस्सा बन सकता है, जो वर्चुअल और ऑगमेंटेड रियलिटी के माध्यम से छात्रों को और अधिक इंटरेक्टिव अनुभव प्रदान करेगा।
- नौकरी और शिक्षा के बीच सामंजस्य: एआई शिक्षा को व्यावसायिक क्षेत्रों के साथ जोड़ने में मदद करेगा, जिससे छात्रों को उद्योग की आवश्यकताओं के अनुसार कस्टमाइज्ड पाठ्यक्रम मिलेंगे।
- नैतिकता और शिक्षा में एआई का संतुलन: भविष्य में एआई को छात्रों की सामाजिक और नैतिक विकास में भी एक अहम भूमिका निभानी होगी। इससे यह सुनिश्चित होगा कि एआई शिक्षा प्रणाली छात्रों को केवल तकनीकी ज्ञान ही नहीं, बल्कि मानवीय मूल्यों को भी समझाने में मदद करेगा।

शिक्षा में एआई की भूमिका बढ़ने के साथ ही यह क्षेत्र तेजी से विकसित हो रहा है। हालांकि इसमें कई चुनौतियाँ हैं, जैसे डेटा सुरक्षा, गोपनीयता, और शिक्षक की भूमिका में परिवर्तन, लेकिन इसके लाभों को नकारा नहीं जा सकता। एआई छात्रों को व्यक्तिगत शिक्षा अनुभव, स्मार्ट फीडबैक और वैश्विक शिक्षा के अवसर प्रदान कर सकता है। यदि इसका सही तरीके से उपयोग किया जाए, तो यह शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव ला सकता है।

क्या एआई मानव के हस्तक्षेप को कम करती है

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) मानव के हस्तक्षेप को कम करने में सक्षम है, लेकिन यह इस पर निर्भर करता है कि एआई का उपयोग किस प्रकार किया जा रहा है और किस संदर्भ में।

- स्वचालन और कार्यों का आधुनिकीकरण: एआई ने कई कार्यों को स्वचालित किया है, जिससे मानव हस्तक्षेप की आवश्यकता कम हो गई है। उदाहरण के लिए, उत्पादन क्षेत्र में रोबोट्स और एआई-संचालित सिस्टम्स ने बहुत से मैन्युअल कार्यों को पूरा करना शुरू कर दिया है, जैसे असेंबली लाइन पर काम करना या गुणवत्ता नियंत्रण करना। इसी प्रकार, वित्तीय सेवाओं में एआई एल्गोरिदम का उपयोग लेन-देन की

निगरानी, धोखाधड़ी का पता लगाने, और निवेश निर्णयों को स्वचालित करने में किया जा रहा है, जिससे मानव हस्तक्षेप की आवश्यकता कम हो रही है।

- डेटा विश्लेषण और निर्णय लेने में सहायता: एआई डेटा का विश्लेषण करके और पैटर्न पहचानकर निर्णय लेने में मदद करता है। उदाहरण के लिए, चिकित्सा क्षेत्र में एआई टूल्स रोगों का निदान करने में डॉक्टरों की मदद कर रहे हैं। यह ऐसे जटिल मामलों को जल्दी और अधिक सटीकता से पहचान सकता है, जिनमें पहले मानव विशेषज्ञता की आवश्यकता होती थी।
- ग्राहक सेवा में एआई: चैटबॉट्स और वॉयस असिस्टेंट जैसे एआई उपकरण ग्राहक सेवा कार्यों को स्वचालित कर रहे हैं। यह साधारण प्रश्नों और अनुरोधों का समाधान बिना मानव हस्तक्षेप के करता है। हालांकि, जटिल मुद्दों के लिए मानव समर्थन की आवश्यकता हो सकती है, लेकिन सामान्य कार्यों में एआई की भूमिका ने मानव श्रम को कम किया है।
- शैक्षिक क्षेत्र में एआई: एआई आधारित टूल्स व्यक्तिगत शिक्षा के अनुभव प्रदान कर सकते हैं, जिससे शिक्षक का हस्तक्षेप कम होता है। उदाहरण के तौर पर, एआई द्वारा संचालित ट्यूटरिंग सिस्टम छात्रों की प्रगति के आधार पर अनुकूलित पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं, जिससे शिक्षक को कम समय में अधिक छात्रों के साथ व्यक्तिगत रूप से काम करने का अवसर मिलता है।

हालांकि, इसके कुछ नकारात्मक पहलू भी हैं:

- मानव कनेक्शन की कमी: एआई द्वारा स्वचालित कार्यों से मानव कर्मचारियों की भूमिका घट सकती है, जिससे बेरोजगारी जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं।
- निर्णय में पारदर्शिता का अभाव: जब एआई बिना मानव हस्तक्षेप के निर्णय लेने लगता है, तो कभीता और जिम्मेदारी के मुद्दे उत्पन्न कर सकता हैकभी यह पारदर्शि-, क्योंकि एआई की कार्यप्रणाली जटिल और समझने में मुश्किल हो सकती है।

एआई मानव हस्तक्षेप को कई क्षेत्रों में कम कर रहा है, लेकिन यह पूरी तरह से मानव को हटाने की बजाय, मानव और मशीन के बीच सहयोग को बढ़ावा दे रहा है। एआई के

माध्यम से मानव अपनी अधिक रचनात्मक और उच्चस्तरीय गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित - कर सकता है, जबकि मैन्युअल और बुनियादी कार्यों को मशीनें संभाल सकती हैं।

निष्कर्ष

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) का भविष्य अत्यंत रोचक और परिवर्तनकारी होने की संभावना है। आने वाले दशकों में, एआई हर क्षेत्र में और भी गहरे स्तर पर एकीकृत होगा, जिससे शिक्षा, चिकित्सा, परिवहन, और कृषि जैसे क्षेत्रों में उल्लेखनीय सुधार होगा। एआई के माध्यम से, स्वचालित निर्णय-निर्माण, व्यक्तिगत अनुभव, और अधिक सटीक विश्लेषण संभव होंगे। साथ ही, एआई की मदद से नई और प्रभावी खोजों की संभावना भी बढ़ेगी, जैसे कि नई दवाइयों का विकास और जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए समाधान। हालांकि, इसके साथ ही एआई के लिए नैतिक और सामाजिक मुद्दे भी उत्पन्न होंगे, जैसे कि डेटा गोपनीयता, बेरोजगारी और निर्णयों में पारदर्शिता की कमी। इस कारण, एआई के विकास को संतुलित और जिम्मेदारीपूर्ण तरीके से नियंत्रित करना आवश्यक होगा ताकि इसके लाभ मानवता के लिए फायदेमंद हों।

संदर्भ

*****

- ट्यूरिंग, ए. एम. (1950). "कंप्यूटिंग मशीनरी और इंटेलिजेंस"। माइंड, 59(236), 433-460।
- मैककार्थी, जे. (1956). "डार्टमाउथ सम्मेलन प्रस्ताव"।
- न्यूवेल, ए., व साइमन, ए. ए. (1972). "मानव समस्या समाधान"।
- रोसेंब्लाट, एफ. (1958). "द पेरसेप्ट्रॉन: ए पर्सीविंग एंड रिकग्नाइजिंग ऑटोमेटन"।
- मिंस्की, एम., & पैपर्ट, एस. (1969). "पेरसेप्ट्रॉन"।
- बोडेन, एम. ए. (2016). "आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस: ए वेरी शॉर्ट इंट्रोडक्शन"।
- लेकुन, वाई., बेंगियो, य., & हिन्टन, जी. ई. (2015). "डीप लर्निंग"। नेचर, 521(7553), 436-444।
- रसेल, एस., व नॉर्विग, पी. (2016). "आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस: ए मॉडर्न अप्रोच"। पियरसन।
- चोललेट, एफ. (2017). "डीप लर्निंग विद पायथन"। मैनींग पब्लिकेशन्स।
- हासिबिस, डी., सिल्वर, डी., व सटन, आर. (2017). "मास्टरिंग शतरंज और शोगी बाय सेल्फ-प्ले विद ए जनरल रिइंफोर्समेंट लर्निंग एल्गोरिदम"। नेचर, 550(7676), 354-359।

This page is intentionally left blank

शिक्षा संवाद
2022, 9 (1-2): 62-72
ISSN: 2348-5558
©2022, संपादक, शिक्षा संवाद, नई दिल्ली

आलेख

राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 : समग्र और बहु-विषयक शिक्षा

शिखा वाजपई
इंस्टीट्यूट ऑफ होम इक्नोमिक्स
दिल्ली विश्वविद्यालय
ईमेल: shikhavajpai@gmail.com

सार

समग्र शिक्षा शारीरिक, भावनात्मक और संज्ञानात्मक क्षमताओं के विकास को संदर्भित करती है। यह व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास को संदर्भित करता है। यह अधिक दार्शनिक विचार है। सामान्य तौर पर , इसका अर्थ है कि अच्छे जीवन की अवधारणा क्या होनी चाहिए। आंतरिक दृष्टि से शिक्षा मूल्यवान है । हालांकि , अच्छे जीवन का एहसास करने के लिए इसका एक महत्वपूर्ण मूल्य भी है । एक लोकतांत्रिक देश में, समग्र शिक्षा नागरिकता मूल्यों को संदर्भित करती है। यह एक महत्वपूर्ण मूल्य के रूप में सहिष्णुता, धर्मनिरपेक्ष मूल्यों और समावेश को संदर्भित करता है। सभी प्रकार की शिक्षा का उद्देश्य, चाहे वह अनुशासनात्मक हो या बहु अनुशासनात्मक, समग्र शिक्षा है अतः समग्रता का अर्थ बहुविषयक नहीं है।

कूटशब्द: समग्र, बहुविषयक, शिक्षा, एनईपी-2020, पाठ्यक्रम।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की एक महत्वाकांक्षी सिफ़ारिश है-'समग्र और बहु-विषयक शिक्षा। इस लेख का मूल उद्देश्य एक प्रारम्भिक एवं परिचय के स्तर पर बहु- विषयक शिक्षा पर चर्चा करना है। साथ ही इस पर्चे का उद्देश्य यह भी है कि उच्च शिक्षा संस्थानों में शिक्षकों के सम्मुख बहु-विषयक शिक्षण के विचार के साथ-साथ शोध एवं ज्ञान निर्माण के लिए एक दृष्टिकोण रखा जा सके। दरअसल राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 का मानना है कि समग्र और बहु-विषयक शिक्षा भविष्य की आवश्यकताओं के ध्यान में रखती है। समग्र और

बहु-विषयक शिक्षा, स्पष्टत: काफी सरल और साधारण दिखाई देती है लेकिन विश्व में जहां भी यह प्रचलन में है उससे प्राप्त अंतर्दृष्टि बताती है कि यह एक जटिल विचार है जिस पर गंभीरता से विचार किया जा सकता है। दरअसल इस विषय पर दो स्तरों पर विचार किया जा सकता है, इनमे से एक -अवधारणा है और दूसरा है- प्रक्रिया। इस लेख में समग्र और बहु-विषयक शिक्षा को दोनों ही स्तरों पर समझने का प्रयास किया गया है।

समग्र, बहुविषयक शिक्षा क्या है ?

राष्ट्रीय शिक्षा नीति का आधार स्तम्भ भारतीय ज्ञान परंपरा है और शिक्षा नीति की सम्पूर्ण सिफ़ारिशों में यह देखने को मिलता भी है। यह नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति अधिक समग्र और बहुविषयक शिक्षा का प्रस्ताव करती है। जैसा की पहले भी बताया गया है। यह भारत की प्राचीन शिक्षा परंपरा को साथ में लेकर चलती है जो समाज-विज्ञान, भौतिक-विज्ञान,मानविकी-अनुशासन, व्यावसायिक और पेशेवर शिक्षा से ज्ञान के सभी क्षेत्रों की व्यापक समझ प्रदान करती है । नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति का दावा है कि ज्ञान की सभी शाखाओं को' कला' माना जाता है, जिसे आधुनिक शिक्षा 'उदार कला' के रूप में दर्शाती है। उपरोक्त अर्थों में समग्र और बहु-विषयक शिक्षा की ओर लौटने का आह्वान किया गया है। एक समग्र और बहु-विषयक शिक्षा का औचित्य रचनात्मकता, आलोचनात्मक सोच, समस्या सुलझाने की क्षमता और मनुष्य की विकासशील क्षमताओं-बौद्धिक, सौंदर्य, सामाजिक, शारीरिक, भावनात्मक और नैतिक को बढ़ाने के संदर्भ में दिया गया है । नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति की बिन्दु संख्या 11 में समग्र शिक्षा, बहु- विषयक शिक्षा और उदार शिक्षा को समानार्थक रूप से संदर्भित किया गया है। समग्र बहुआयामी है, और बहुआयामी समग्र है, और इसके अलावा समग्र और बहुआयामी उदार शिक्षा है। इसके अलावा, इतिहास में दो अलग-अलग समय, प्राचीन और आधुनिक (21 वीं सदी) की तुलना ज्ञान के विकास में दो काल खंडों के गुणात्मक अंतर के भेद किए बिना की जाती है। इससे कुछ प्रश्न उठते हैं :

- ज्ञान किसे कहा जाए ?
- ज्ञान किस तरह से कला है ?
- सभी कलाओं का ज्ञान किस प्रकार समग्र शिक्षा की और ले जाता है ?
- प्राचीन शिक्षा की ओर लौटने का क्या अर्थ है ।

- क्या नीति विशेष ज्ञान के अनुशासनात्मक आधार को समाप्त करने की वकालत करती है जिसे अभी भी दुनिया भर के विश्वविद्यालयों में पसंद किया जाता है।
- क्या नीति न्यून सिद्धांत अभिन्यास या अधिक व्यावहारिक अभिविन्यास या दोनों के मिश्रण की ओर बढ़ने की वकालत करती है ?

विभिन्न शब्दों की व्याख्या अकादमिक मंचों में भिन्न-भिन्न होती है और उन पर समग्र, बहु-विषयक और उदार और उनके बीच अंतसंबंधों की स्पष्ट समझ रखने के लिए वाद-विवाद करने की आवश्यकता होती है। स्पष्टता के लिए, अकादमिक समुदाय में मतभेदों के बावजूद, यहाँ तीन शब्दों- समग्र, उदार और बहु-विषयक शिक्षा के बारे में जानने का प्रयास किया गया है, जो बदले में, शब्दों के अर्थ पर आगे चर्चा कर सकते हैं।

समग्र शिक्षा क्या है ?

समग्र शिक्षा शारीरिक, भावनात्मक और संज्ञानात्मक क्षमताओं के विकास को संदर्भित करती है। यह व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास को संदर्भित करता है। यह अधिक दार्शनिक विचार है। सामान्य तौर पर , इसका अर्थ है कि अच्छे जीवन की अवधारणा क्या होनी चाहिए। आंतरिक दृष्टि से शिक्षा मूल्यवान है। हालांकि , अच्छे जीवन का एहसास करने के लिए इसका एक महत्वपूर्ण मूल्य भी है। एक लोकतांत्रिक देश में, समग्र शिक्षा नागरिकता मूल्यों को संदर्भित करती है। यह एक महत्वपूर्ण मूल्य के रूप में सहिष्णुता, धर्मनिरपेक्ष मूल्यों और समावेश को संदर्भित करता है। सभी प्रकार की शिक्षा का उद्देश्य, चाहे वह अनुशासनात्मक हो या बहु अनुशासनात्मक, समग्र शिक्षा है अतः समग्रता का अर्थ बहुविषयक नहीं है।

उदार शिक्षा क्या है ?

उदार शिक्षा ज्ञान का वैज्ञानिक प्रयास है। यह प्रश्न पूछने और दिमाग की आलोचनात्मक क्षमता विकसित करता है। ज्ञान तब आगे बढ़ता है, जब प्रगति के क्रम में मौजूदा ज्ञान पर प्रश्न उठाया जाता है और इस प्रक्रिया में, एक वैकल्पिक परिकल्पना प्रस्तुत की जाती है और उसकी जांच की जाती है। पुराने ज्ञान पर प्रश्नचिह्न लगाने से नवीन ज्ञान की

स्थापना होती है। उदार शिक्षा छात्रों को एक विशेष विषय के चुनाव के माध्यम से ज्ञान की खोज का अनुसरण करने का विकल्प प्रदान करती है । हालांकि, छात्रों को किसी विशेष विषय के चुनाव को अंतिम रूप देने से पहले उन्हें पता लगाने का अवसर दिया जा सकता है। उदाहरण के लिए, अमेरिका में एक स्नातक उदार शिक्षा एक विशेष अनुशासन के चयन से पहले शुरुआती सेमेस्टर में पसंद के किसी भी विषय को चुनने की अनुमति देती है। भारतीय उच्च शिक्षा में उनकी तरह कोर और ऐच्छिक, मुख्य या लघु का विकल्प है। उदार शिक्षा किस प्रकार समग्र शिक्षा प्राप्त करने में सहायता करती है ? मेरे मत में, यह तर्क की शक्ति पैदा करके ही एक व्यक्ति यह तय कर सकता है कि अच्छा जीवन क्या है जिसे वह महत्व देता है। इसका अर्थ है कि उदार शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति के लिए विशेष रूप से समग्र शिक्षा प्राप्त कर सकती है। समग्रता का कोई पैमाना नहीं हो सकता जो ऊपर से प्रदान किया जा सके। यदि उदार शिक्षा की कसौटी तर्क है, तो यह शिक्षा के दोनों रूपों में हो सकती है-अनुशासनात्मक और बहुविषयक।

बहु-विषयक क्या है?

शिक्षा विभिन्न विषयों का संयोजन बहु-विषयक शिक्षा है। इस शब्द का प्रयोग सामान्य अर्थों में यह इंगित करने के लिए किया जाता है कि विभिन्न विषयों से ज्ञान धाराएं कभी-कभी सामाजिक, आर्थिक और प्राकृतिक घटना को समझने के लिए बेहतर अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकती हैं। विभिन्न विषयों की अंतःक्रिया विभिन्न तरीकों से हो सकती सरल और समग्र एवं बहु-विषयक शिक्षा और एकाधिक प्रवेश निकास जटिल। ज्ञान निर्माण के परिवर्तनशील तरीकों को समझने के लिए इस तरह की अंतःक्रिया की समझ आवश्यक है। 20 वीं शताब्दी में, आधारभूत विषयों जैसे, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान, गणित, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, राजनीति विज्ञान, भूगोल, मनोविज्ञान, भाषा और दर्शन तक सीमित थे। बाद में, ज्ञान की विभिन्न अनुप्रयुक्त शाखाओं की शुरुआत की गई, जैसे इंजीनियरिंग, कानून, चिकित्सा, आदि। धीरे-धीरे, बुनियादी विषयों को पढ़ाने में भी बहु-विषयकता शुरू की गई थी। उदाहरण के लिए, एक स्नातक को अर्थशास्त्र के शिक्षण के लिए गणित और सांख्यिकी के शिक्षण की भी आवश्यकता होती है। गणित और सांख्यिकी के साथ अर्थशास्त्र के संयोजन के साथ, अर्थशास्त्र अधिक विकसित हुआ क्योंकि इसने अर्थशास्त्र को अनुभवजन्य विज्ञान के रूप में विकसित होने दिया और अधिक सटीकता के

साथ अनुमान और पूर्वानुमान में मॉडल बनाने की अनुमति दी। अर्थशास्त्र को विकसित करने में गणित और सांख्यिकी का महत्वपूर्ण सहयोग रहा है।

इस सरल रूप में, 20वीं शताब्दी में बहु-विषयकता बढ़ी और दुनिया भर के विभिन्न विश्वविद्यालयों में एक विषय के भीतर भी पाठ्यक्रम की परिकल्पना की गई। सामान्य तौर में, 20 वीं शताब्दी में बहु- विषयकता बढ़ी और एक विषय के भीतर भी पाठ्यक्रमों को दुनिया भर के विभिन्न विश्वविद्यालयों में परिकल्पित किया गया है। कई उदाहरणों में, एक नए विषय का विकास बहु-विषयक शिक्षा का परिणाम था। उदाहरण के लिए, प्रबंधन एक विषय के रूप में अर्थशास्त्र, वित्त, वाणिज्य, लेखा, मनोविज्ञान, गणित के साथ प्रबंधन के संयोजन के साथ विकसित हुआ। पर्यावरण विज्ञान पर स्नातक कार्यक्रम के एक पाठ्यक्रम में बहु विषयकता स्पष्ट दिखती है, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान, पारिस्थितिकी विज्ञान, जैव-प्रौद्योगिकी, जैव-भूगोल, अर्थशास्त्र का एक संयोजन है। इन उदाहरणों में, हम पाते हैं कि नए बहु-विषयक विषयों का विकास, विषयों के साथ-साथ बहु-विषयक विषयों की परस्पर क्रिया का परिणाम है। इसलिए, बहु-विषयक शिक्षा, जिसे राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में संदर्भित किया गया है, एक ऐसी प्रथा रही है जो बढ़ती विशेषज्ञता के साथ विश्वविद्यालयों में पाठ्यक्रम में विभिन्न तरीकों से विकसित हुई और समस्याओं को हल करने के लिए ज्ञान लागू करने के प्रयास में विकसित हुई।

संक्षेप में, हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 में उल्लिखित समग्र, उदार और बहु - विषयक शिक्षा के बीच एक विश्लेषणात्मक अंतर करने की आवश्यकता है। समग्र शिक्षा एक आदर्श विचार है। समग्र का अर्थ है लोगों को सशक्त बनाना। इसे जीवन को चुनने की स्वतंत्रता प्रदान करनी चाहिए क्योंकि एक व्यक्ति नेतृत्व करना पसंद करता है, दबाव से मुक्त। समग्रता का अर्थ नागरिकता के मूल्य, सम्मान और सभी व्यक्तियों के साथ समान व्यवहार करना भी है। सभी शिक्षा का उद्देश्य-अनुशासनात्मक और बहु - विषयक शिक्षा-एक समग्र जीवन जीना है। उदार शिक्षा वैज्ञानिक खोज पर आधारित है। वैज्ञानिक प्रगति प्रश्न पूछने, वैकल्पिक परिकल्पना प्रस्तुत करने और परीक्षण से होती है। उदार शिक्षा अढोचनात्मक मस्तिष्क और तर्क करने की क्षमता विकसित करने में मदद करती है। उदार शिक्षा 20 वीं शताब्दी की पहली तिमाही तक ज्ञान के विषय के आधार पर शुरू हुई और बाद में विषय और बहु-विषयक शिक्षा हुई। उदार शिक्षा के बावजूद तर्क शक्ति की ओर अग्रसर होने के

बावजूद, उदार शिक्षा का समग्र शिक्षा के साथ विवादित हो सकता है, क्योंकि यह मानविकी के पृथक हो सकती है।

सामान्य रूप में , उदार शिक्षा को प्रचलित विश्वास पर सवाल उठाना चाहिए और तर्कसंगत जांच से समाज में न्याय होना चाहिए। बहु-विषयक शिक्षा विषयों के संयोजन के साथ होती है। उन समस्याओं का समाधान खोजने का प्रयास, जिन्हें विशिष्ट विषयों की सीमा के भीतर पूरी तरह से समझा नहीं जा सकता है, 20 वीं शताब्दी में विभिन्न रूपों में पहले से ही बहु विषयक शिक्षा का नेतृत्व किया। निस्संदेह, बहुविषयक शिक्षा ज्ञान के नए क्षितिज खोलती है। हालांकि, इस बात की कोई गारंटी नहीं है कि ज्ञान के नए क्षितिज समग्र शिक्षा के लिए भी होंगे जो मानविकी के अनुसार हो। समग्र, उदार और बहु-विषयक के बीच अंतर करने के बाद, जिसे कभी-कभी समान माना जाता है, इसलिए बहु-विषयक शिक्षा को अच्छी तरह से समझना महत्वपूर्ण हैं जो अंतःविषयक और परा- विषयक शिक्षा के साथ और अधिक भ्रमित है। अन्य शब्द जैसे, अंतःविषय और पार-विषयक है। हालांकि, हम बहु-विषयक , अंतःविषयक और पर -विषयक शिक्षा के बीच के अंतर पर ध्यान केंद्रित करेंगे।

बहु-विषयक, अंतःविषयक और परा-विषयक शिक्षा

बहु-विषयक बहु-विषयक शिक्षा विभिन्न विषयों से ज्ञान के किसी भी एकीकरण या संश्लेषण के बिना विषयों का संयोजन है। दो या तीन विषय संबंधित विषयों के विचारों और विधियों के साथ आते हैं जो विचाराधीन समस्या को समझने के लिए उपयोगी हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, अर्थशास्त्र और सांख्यिकी उपयोगी हैं क्योंकि वे अनुभवजन्य परीक्षण आर्थिक सिद्धांत को लागू करने में मदद करते है, जिसके लिए सांख्यिकीय उपकरण उपयोगी होते है कोई नया ज्ञान विकसित नहीं हुआ। एक अन्य उदाहरण में, प्रबंधन के विद्यार्थियों को अर्थशास्त्र के साथ-साथ सांख्यिकी भी पढ़ाया जाता है। एक फर्म के प्रबंधन में अर्थशास्त्र से अधिकतम लाभ प्राप्त का सिद्धांत से संबंधित है और सांख्यिकी बाजार सर्वेक्षण अनुसंधान में मदद करता है। इस उदाहरण में, अर्थशास्त्र और सांख्यिकी प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्रबंधन का पाठ्यक्रम बहु-विषयक शिक्षा का एक उदाहरण है। प्रबंधन विभाग में अर्थशास्त्र और सांख्यिकी के विषय विशेषज्ञों को नियुक्त किया जा सकता या विभाग से बाहर

पढ़ाने जा सकते हैं। विभिन्न विभागों के विषय विशेषज्ञों द्वारा अनेक उदाहरण प्रस्तुत किए जा सकते हैं। सामान्य रूप में बहु-विषयक शिक्षा विभिन्न विभागों में अस्तित्व में अस्तित्व में है।

अंतः विषयक –

अंतःविषयक शिक्षा के अर्थ के साथ-साथ उसकी प्रक्रिया भी जटिल है , और इसे गहन समझ की आवश्यकता है । क्लेन (1990) का अंतःविषयक शिक्षा पर एक दिलचस्प अध्ययन है। अंतःविषय भी विषयों का संयोजन है। हालाँकि, संबंधित विषयों से ज्ञान का एकीकरण या संश्लेषण नए ज्ञान को उत्पन्न करने के लिए होता है जो किसी समाज की समस्या को हल करने में मदद कर सकता है वह समस्या जिसे ज्ञान के विषयात्मक या बहु-विषयक आधार से हल नहीं किया जा सकता है। कुछ उदाहरण अंतःविषयक शिक्षा की अवधारणा को स्पष्ट करते है, विकास अध्ययन को कई विश्वविद्यालयों में पढ़ाए जाने वाले अध्ययन के क्षेत्र के रूप में ले तो, विकास अध्ययन अंतःविषयक है, विधि, मानव विज्ञान, समाजशास्त्र, लैंगिक, अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान और अंतर्राष्ट्रीय संबंध, मानव भूगोल, महत्वपूर्ण ऐतिहासिक अध्ययन, पर्यावरण मानविकी, स्वदेशी अध्ययन, औपनिवेशिक और उत्तर औपनिवेशिक अध्ययन, तकनीकी और प्राकृतिक विज्ञान का संयोजन है, इन विषयों में संयोजन विकास अध्ययन की पद्धतिगत और सैद्धांतिक कठोरता को बढ़ाती है। एक अन्य उदाहरण महिला अध्ययन है, इसमें समाजशास्त्र, नृविज्ञान, अर्थशास्त्र, इतिहास और दर्शनशास्त्र जैसे विभिन्न विषय महिलाओं के जीवन को समझने में आवश्यक है। संयोजन के साथ-साथ विभिन्न विषयों के ज्ञान का एकीकरण महिलाओं की समस्या को प्रभावी ढंग से संबोधित कर सकता है। नीति अध्ययन अंतःविषयक क्षेत्र है जो अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान, लोक प्रशासन, समाजशास्त्र और दर्शनशास्त्र जैसे विषयों से ज्ञान को एकीकृत करता है। अंतःविषयक शिक्षा सभी क्षेत्रों में गहन विश्लेषण का विषय है कि विभिन्न विषयों से ज्ञान समय के साथ कैसे विकसित होता है और अंतःविषयक क्षेत्र को समझने के लिए ज्ञान का संश्लेषण कैसे विकसित होता है। वह प्रक्रिया जिसके माध्यम से अंतःविषयक ज्ञान प्राप्त होता है, एक विषय वस्तु है जिसे विषय शिक्षक स्वयं खोज सकते हैं।

परा-विषयक परा –

विषयक शिक्षा चरम अंतःविषयक है जहां ज्ञान का संश्लेषण व्यक्तिगत विषयों को अधीनस्थ करता है। उदाहरण के लिए, उत्तर आधुनिकतावाद इतिहास, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र और दर्शनशास्त्र से विचार लेता है, और इसका उपयोग कई सामाजिक घटनाओं की पहचान, आवाज, नियंत्रण, पदानुक्रम, शक्ति की व्याख्या करने के लिए किया जाता है जहां विषयक पहचान का संबंध होता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में भारतीय विश्वविद्यालयों में एक अंतःविषय शिक्षा का ढांचा विकसित करने लिए विशेष जोर दिया है। इसलिए, पाठ्यक्रम पुनर्रचना के माध्यम से अंतर्विषयकता को लागू करने के तरीकों को समझना उचित होगा। सबसे उपयुक्त रूप से राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में भारतीय विश्वविद्यालयों में एक अंतःविषय शिक्षा संरचना विकसित करने का एक मजबूत संदेश है। इसलिए, पाठ्यचर्या पुनर्रचना के माध्यम से अंतः विषयकता को लागू करने के तरीकों को समझना उचित होगा।

अंतःविषयक शिक्षा का अभ्यास

जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, बहु-विषयक शिक्षा कई विषयों का संयोजन है और जब अंतःविषयक जुड़ता है तो संयोजन ज्ञान के संश्लेषण में जुड़ जाता है, और एक नए ज्ञान विकसित होता है जिसे किसी विशेष विषय के रूप में नहीं देखा जा सकता है । मूल रूप में, दो या दो से अधिक विषयों से ज्ञान का संश्लेषण हमें समस्या और समाधान के लिए एक नई दिशा देता है। विषय एक जटिल समस्या के संबंध में कृत्रिम सीमाएँ हैं जो स्वाभाविक रूप से परस्पर अंत:निर्भर है। ग्रामीण क्षेत्र में गरीब लड़कियों का स्कूल बीच में छोड़ना एक जटिल समस्या है जिसके लिए अर्थशास्त्र , समाजशास्त्र, भूगोल, मनोविज्ञान के साथ-साथ महिला अध्ययन और सामाजिक कार्य के दृष्टिकोण से देखने की आवश्यकता है। इसलिए, प्रश्न यह है की विश्वविद्यालय इस तरह की जटिल समस्या को समझने के लिए स्वयं को कैसे तैयार कर सकते हैं ? निम्नलिखित में से कुछ दृष्टिकोण उपयोगी हो सकते हैं

एक शोध-परियोजना का चयन : अनुसंधान परियोजना के चयन में किसी महत्वपूर्ण समस्या के निकटता को ध्यान में रखा जाना चाहिए जो भिन्न-भिन्न विषयों को कम करता है। ग्लोबल

वार्मिंग की समस्याएं, प्रदूषण, जातीय संघर्ष, क्षेतत्रीय अनुसंधान, तंत्रिका विज्ञान, प्राकृतिक आपदा, प्रवासन आदि अंतःविषय दृष्टिकोण के क्षेत्र हैं।

सहयोग की रचना : प्रमुख विभाग जो किसी जटिल समस्या के निकटता को ध्यान में रखते हुए एक शोध परियोजना की योजना बना रहा है , उसे टीम के सदस्यों की पहचान करनी चाहिए और समस्या पर चर्चा करने और शोध प्रस्ताव विकसित करने में उनके साथ सहयोग करना चाहिए। अनुसंधान समूह को प्रस्ताव की संकल्पना की गहनता का ध्यान चाहिए, वित्त पोषण एजेंसी के सामने मजबूती से प्रस्तुत करना चाहिए और अंत में अनुसंधान की समयावधि में एक टीम के रूप में काम करना चाहिए।

संयुक्त अनुसंधान: संयुक्त अनुसंधान विचारों के घनिष्ठ संपर्क की एक प्रक्रिया होनी चाहिए, जिसके दौरान प्रत्येक सदस्य विभिन्न विषयों के समूह के सदस्यों पर लागू होने वाले विचार और पद्धति का अनुभव रखता है। संयुक्त अनुसंधान सभी समूह सदस्यों के लिए एक पूरी तरह से नया परिप्रेक्ष्य और सहभागी संस्कृति विकसित करता है जो एक विषय की सीमा से परे है।

संयुक्त शिक्षण : संयुक्त अनुसंधान अनुभव को विश्वविद्यालय के शिक्षण कार्यक्रम का भाग बनाया जाना चाहिए। पाठ्यक्रम का पुनर्गठन किया जाना चाहिए जिसमें जटिल समस्या प्रस्तुत की जा सके और किसी पाठ्यक्रम का संयुक्त शिक्षण शुरू किया जा सके। संयुक्त शिक्षण विभिन्न विषयों के शिक्षकों के बीच नए अंतःविषयक परिप्रेक्ष्य से एक समस्या को समझने पर वापस प्रतिबिंबित करने का अवसर प्रदान कर सकता है।

शिक्षण की संयुक्त समीक्षा : एक पाठ्यक्रम के अंत में, शिक्षकों और छात्रों के साथ संयुक्त समीक्षा अंतः विषयक क्षेत्रों में अनुसंधान और शिक्षण का विस्तार करने का एक उत्कृष्ट अवसर है।

संयुक्त प्रकाशन : अनुसंधान और शिक्षण का संयुक्त अनुभव शिक्षकों के एक समूह को शोध-पत्र प्रकाशित करने का पर्याप्त अवसर प्रदान करता है। समूह अनुसंधान और अध्यापन के कई पुनरावृत्तियों के बाद संकाय सदस्यों द्वारा अंतःविषयक को तेज किया जा सकता है। कहने की जरूरत नहीं है, उपरोक्त योजनाबद्ध प्रारूप न तो अद्वितीय है और न ही पालन करने के लिए

आवश्यक है। इसे अपनाने के विभिन्न तरीके हो सकते हैं, वास्तव में, संयुक्त शिक्षण पहले प्रारंभ होता है , और उसके संयुक्त अनुसंधान और प्रकाशन कर सकते हैं। संयुक्त प्रकाशन से भी अंतःविषयक की शुरुआत की जा सकती है। उच्च शिक्षा में सहयोग की संस्कृति अंतःविषय शिक्षा के नए वातावरण की पूर्व-आवश्यकता है। यह ध्यान रखना भी उतना ही महत्वपूर्ण है कि अंतःविषयक ढांचे का विकास कोई अल्पकालिक घटना नहीं है , विश्वविद्यालयों में अंतःविषयक शिक्षा को एकीकृत करने में वर्षों लग सकते है। उच्च शिक्षा की कई चुनौतियाँ है जैसे, शिक्षकों की कमी, अनुसंधान वित्तपोषण, आधारभूत संरचना, इत्यादि। इसलिए, अंतःविषयक शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए पाठ्यक्रम के पुनर्गठन के लिए विभिन्न मामलों में विश्वविद्यालयों के सहयोग की आवश्यकता होती है, मुख्यतः उच्च स्तर की स्वायत्तता, नौकरशाही की परेशानी कमी और वित्तीय सहायता जिसके बिना अंतःविषयक शिक्षा केवल एक सपना बनकर रह जाएगी।

निष्कर्ष- इस पर्चे में मैंने समग्र उदार और बहु-विषयक शिक्षा के बीच अंतर पर चर्चा की । समग्र शिक्षा एक आदर्श विचार है। यह शिक्षा के साथ छात्र की उच्च क्षमताओं से भी संबंधित है जो एक जीवन जीने के उच्च अवसर के चयन की अनुमति देता है। उदार शिक्षा का उद्देश्य मन की तर्क क्षमता का विकास करना है। बहु-विषयक शिक्षा विषयों का संयोजन है और अंतःविषयता समाज की समस्याओं को हल करने के लिए विषयों के संयोजन से उभरने वाले ज्ञान के संश्लेषण की अनुमति देती है । उच्च शिक्षा के शिक्षकों को संयुक्त अनुसंधान, शिक्षण और प्रकाशन के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए ताकि अंतर अनुशासनात्मकता को बढ़ावा दिया जा सके।

*****

संदर्भ

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020). (2020). समग्र और बहु-विषयक शिक्षा के संदर्भ में शिक्षा का उद्देश्य: भारतीय संदर्भ में शिक्षा के सर्वांगीण विकास पर जोर। भारत सरकार।
- शर्मा, आर. (2021). समग्र शिक्षा और बहु-विषयक दृष्टिकोण: NEP 2020 में शैक्षिक परिवर्तन। *शिक्षा विकास पत्रिका, 15*(3), 45-60.

- गुप्ता, पी. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और शिक्षा के बहुविध दृष्टिकोण। *हिन्दी शिक्षा समीक्षा, 12*(1), 32-41.
- कुमार, एस. (2020). NEP 2020 और बहु-विषयक शिक्षा की आवश्यकता। *शिक्षा और समाज, 18*(2), 78-85.
- भारत सरकार (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: समग्र और बहु-विषयक शिक्षा की दिशा। *नई शिक्षा दृष्टि रिपोर्ट.* नीति आयोग।
- सिंह, डी. (2021). समग्र उदार शिक्षा: NEP 2020 के तहत सुधार। *शैक्षिक सुधार पत्रिका, 22*(4), 102-110.
- शुक्ला, र. (2021). समग्र शिक्षा और सामाजिक विकास: NEP 2020 में एक नई दिशा। *शिक्षा विज्ञान और विकास, 5*(6), 134-140.
- भारत सरकार (2020). NEP 2020 में बहु-विषयक शिक्षा का महत्व: एक समग्र दृष्टिकोण। *शिक्षा नीति विभाग रिपोर्ट.* मानव संसाधन विकास मंत्रालय।
- पांडे, क. (2020). समग्र शिक्षा और सामाजिक बदलाव: NEP 2020 के साथ नई पहल। *शिक्षा और संस्कृतियों की समीक्षा, 9*(2), 23-30.
- शर्मा, ह. (2020). समग्र और बहु-विषयक शिक्षा: NEP 2020 के दृष्टिकोण से बच्चों की शिक्षा पर प्रभाव। *भारत की शिक्षा नीति, 14*(1), 50-58.

This page is intentionally left blank

शिक्षा संवाद
2022, 9 (1-2): 74-79
ISSN: 2348-5558
©2022, संपादक, शिक्षा संवाद, नई दिल्ली

अनुभव

उड़ता जा रहा हूँ!

रामवृक्ष बेनीपुरी

प्राचीन ऋषियों ने कहा था—चरैवेति, चरैवेति—चलते चलो, चलते चलो।
आधुनिक मानव कहता है—उड़ते चलो, उड़ते चलो।
प्राचीन ऋषियों का कहना है—पृथ्वी चल रही है, चंद्रमा चल रहा है, सूर्यदेवता चल रहे हैं, इसलिए तुम भी चलते चलो, चलते चलो।

आधुनिक मानव देखता है—पृथ्वी, चंद्रमा या सूर्यदेवता की दूरी प्रति घंटा लाखों, करोड़ों, अरबों मील है। किंतु उसके पैर की गति अत्यंत परिमित, धीमी है। अतः वह कहता है, चीन ने जो साधन दिए हैं, उनका सहारा लेकर कम से कम पाँच सौ मील प्रति घंटे के हिसाब से तो उड़ते चलो।
प्राचीन ऋषि की दुनिया छोटी थी, वह उसे पैदल चल कर भी पार कर ले सकते थे। आधुनिक मानव का संसार बहुत लंबा-चौड़ा हो गया है। वह कहाँ तक पैरों को घसीटता हुआ वह उड़ेगा, वह उड़ रहा है!

मैं भी यह दूसरी बार उड़ रहा हूँ। चार्ट बताता है, बंबई से पेरिस पौने पाँच हज़ार मील है; फिर बीच में समुद्र-पहाड़ हैं, मरुभूमि है, जंगल हैं। ऋषियों का वचन मानकर पैदल चला जाता,

तो कितने दिन लग जाते! किंतु यह टाइम-टेबुल बताता है, अभी दोपहर को 1 : 40 बजे हम चल रहे हैं, कल सुबह-सुबह ठीक आठ बजे पेरिस की रंगीनियों में डूबते उतारते होंगे!
सांताक्रूज से अभी एक झमा के साथ हमारा यह जहाज़ खड़ा है। ऊपर से बंबई की पूरी झलक भी नहीं लेने पास, कि यह देखिए, नीचे समुद्र लहरा रहा है और ऊपर हम उड़े जा रहे हैं।

पथ-पुस्तिका में उन स्थानों के रंगीन चित्र देख रहा हूँ जो हमारे नीचे आएँगे—तरह-तरह के द्वीप, तरह-तरह के रंग, तरह-तरह के जीव-जंतु! अपने स्वाद से जीभ को पानी-पानी कर देने वाली समुद्री मछलियाँ, अपने मोती से हमारे गलों को जगमगाने वाली सीपियाँ, अपने आँसू की लड़ियों से मुकायें बनाने वाली जल-परियाँ। वह द्वीप जहाँ क़ैदियों को गले में तख़्ता पहना पर छोड़ दिया जाता था, वह द्वीप जहाँ लदस्युओं के अड्डे रहते थे। क़ालीनों का बंदरगाह मझट, मार्कोपोलो की प्रसिद्ध सराय, हरमुज़, संसार की सबसे गर्म जगह रास मसंदम, खजूरों की भूमि नज़्द। जिनमें सबसे पहले मक्खन तैयार हुआ बेदुइनों के वे चलते-फिरते घर, ऊँचें के कारवान, अरबी घोड़ों के झुंड! जब हम और चले जाए हैं, नीचे हम क्या क्या न छोड़ते जाएँगे! निस्संदेह हम पैदल चलते, तो इन सबको देखते; किंतु, इनमें से कितने को देख पाते!
नहीं-नहीं, उड़ते चलो, उड़ते चलो! बंबई से काहिरा, काहिरा से पेरिस—सिर्फ़ दो हुक्के और हम अपने मंतव्य स्थान को पा लेंगे।

अहा! हम उड़ते जा रहे हैं, देखते जा रहे हैं और लिखते भी जा रहे हैं—यह सुख तो ऐरोलेन पर ही मिल सकता है।

पिछली बार की तरह इस बार की यह यूरोप-यात्रा भी आकस्मिक ही रही। उस दिन पटना रेडियो स्टेशन पर संगीत सभा हो रही थी। रात में, वहीं जाने के लिए में तैयार हो रहा था कि एक तार मिला—पेरिस में होने वाली सांस्कृतिक स्वाधीनता काँग्रेस के साहित्यिक-समारोह में सम्मिलित होने के निमंत्रण पर क्या विचार कर सकोगे?

तार भेजने वाले का नाम स्पष्ट नहीं था; किंतु स्थान का नाम बंबई स्पष्ट था। मैं सोचने लगा, यह अचानक निमंत्रण कैसा? किससे?

साथ में सियाराम था। मैंने उससे कहा, चलो, पेरिस चलें। पेरिस का मतलब उसने संगीत सभा समझ लिया। कोई बुरा तो नहीं समझा? उसने हाँ भर दी। मैं रेडियो स्टेशन की ओर तेज़ी से आप खाना बाना बुन रहा था।

चुनाव के बाद की थकान थी, कुछ अधूरे काम थे। सोचा था, कुछ दिनों घर पर ही रह कर उन कामों को पूरा कर लूँगा। पेरिस जाऊँ, तो फिर वही दौड़-धूप; फिर काम अधूरे के रह जाएँगे!

रेडियो-स्टेशन पर एक-दो मित्रों को वह तार दिखलाया, फिर उसे जेब में रख दिया, सो तीन दिनों तक वह वहीं पड़ा रहा। मेरा मन असमंजस में था। किंतु धीरे-धीरे मित्रों को इसकी ख़बर होती जाती थी और उन सबका आग्रह कि ज़रूर जाओ। अंततः प्यारे गंगा ने सारे तर्क-वितर्क को शांत कर दिया—नहीं, तुम्हें जाना ही चाहिए। ये काम दो महीने बाद भी हो जाएँगे और यूरोप की आबोहवा में थकान भी भूल जाएगी! ...और प्रोफ़ेसर कपिल ने अपने ही हाथों से स्वीकृति का तार भाई मसानी के पास भेज दिया। तार के प्रेक्षक वही थे, दूसरे दिन, दिन की रोशनी में स्पष्ट हो गया था।

उधर मसानी के तार पर तार आने लगे, इधर बेमन की तैयारियाँ भी होने लगीं। किंतु बीच में एक ऐसा भी अवसर आया कि मैंने तय किया, अब जाना रोक ही देना है। किंतु फिर मित्रों ने कहा, जाइए ही, यहाँ हम सब सम्हाल लेंगे। किंतु इन झंझटों का यह असर कि जा रहा हूँ, पर मेरे पास मेडिकल सर्टिफिकेट भी अधूरे ही हैं। कभी-कभी चिंता होती है, न जाने इसके चलते क्या हो? किंतु, चलते समय एयर इंडिया के मि० दस्तूर ने विश्वास दिलाया—है चिंता न कीजिए सब ठीक रहेगा!

हाँ, इस बार एयर इंडिया इंटरनेशनल के प्लेन पर जा रहा हूँ—अपने देश के प्लेन पर! पिछली बार बी० ओ० ए० सी० के प्लेन पर गया था। प्लेन का रंगरूप तो एक ही है, किंतु निस्संदेह ही इसके भीतर भारतीय वातावरण लगता है!

यह हमारे सामने के थैले में जो पंखा है, उसपर एक नृत्यशील भारतीय लड़की का चित्र है। भारतीय कला इससे छलकी पड़ती है। जो बैग हमें छोटे सामानों को रखने के लिए मिला है, उसपर एक भारतीय पग्गड़धारी चपरासी का चित्र है, जो हमें सलाम करता-सा दीखता है। जो होस्टेस अभी रूई और पिपरमिंट की पुड़िया दे गई है, वह एक पारसी लड़की है।
प्लेन में अधिकांश यात्री भारतीय हैं। कैसा संयोग, इसी प्लेन से पेरिस के भारतीय राजदूत मि० मल्लिक भी जा रहे हैं—दाढ़ी और पगड़ी वाले बूढ़े सज्जन!

यह कल्पना करके बार-बार पुलक होती है कि हम एक भारतीय हवाई जहाज़ से सफ़र कर रहे हैं। किंतु, सोचता हूँ, हमलोग अपने देश में अपने हवाई जहाज़ बनाना कब तक शुरू करेंगे? वह भी होकर रहेगा, शीघ्र ही होना चाहिए।
उड़ा जा रहा हूँ, किंतु अजीव सूना-सूना लग रहा है, यद्यपि पिछली बार की अपेक्षा इस बार की यात्रा निस्संदेह ही महत्वपूर्ण है। इस कांग्रेस की ओर से इस साहित्य-समारोह के अतिरिक्त बीसवीं सदी की सर्वोत्तम कलाकृतियों का प्रदर्शन भी होने जा रहा है। एक साथ, एक ही जगह, यूरोप के संगीत, नृत्य, कला, साहित्य सबकी बानगी देखने-सुनने का सुअवसर प्राप्त होगा!

इस बार के साथी भी अच्छे मिले हैं। मित्रवर मसानी के पिता सर रुस्तम भसानी हमारे दल के नेता है। सर रुस्तम बंबई के प्रसिद्ध शिक्षा-प्रेमी ही नहीं हैं, एक उच्च कोटि के लेखक भी हैं। बंबई विश्वविद्यालय के वह वाइस चांसलर रह चुके है और उनकी लिखी दादा भाई नौरोजी की जीवनी उत्कृष्ट कोटि की जीवनी मानी जाती है। उनकी कुछ रचनाओं का अनुवाद फ्रेंच में भी हो चुका है!
अभी आए थे, मेरी बग़ल में बैठे और बड़े प्रेम से बातें की, जैसे कोई पिता अपने बच्चे की मिजाज़पुरशी कर रहा हो।

पी० वाई० देशपांडे मेरे पुराने परिचितों में से हैं। जब सोशलिस्ट पार्टी का जन्म हुआ, वह भी शामिल थे। मराठी के सुप्रसिद्ध लेखक : 'नागपुर टाइम्स' के संचालकों में। वह भी आकर इस बार की यूरोप-यात्रा के खाके के बारे में बातें कर गए हैं। वह पहली ही बार यूरोप जा रहे हैं।
चौथे-पाँचवें सज्जन हैं, फिलिप स्मैट और का० ना० सुब्रह्मण्यम्। फिलिप स्मैट—सुप्रसिद्ध 'मेरठ षडयंत्र' के अभियुक्त। अँग्रेज़ हैं, किंतु अब भारत को ही घर बना लिया है। एक भारतीय महिला से शादी की है। मैसूर से 'मिस इंडिया' नामक पत्रिका निकालते हैं। शांत चेहरा मौन स्वभाव! सुब्रह्मण्यम् मद्रासी हैं, तेलगु के नामी लेखक! घड़ल्ले से बोले जा रहे हैं।

और, मेरे सामने हैं, मेरे दो आत्मीय—शिवाजी और उनकी पत्नी शीला। जब मुझे निमंत्रण मिला, शिवाजी ने भी साथ देने की इच्छा प्रकट की। मैंने मसानी को लिखा और वह भी प्रतिनिधि की हैसियत से जा रहे हैं। उनकी पत्नी शीला ने उनका साथ देकर बिल्कुल घरेलू वातावरण बना दिया है!
प्लेन उड़ा जा रहा है। हम संध्या को चले हैं, नीचे समुद्र लहरा रहा है; ऊपर हम आगे बढ़े जा रहे हैं—अपनी मातृभूमि से दूर! कितनी दूर?—अभी कप्तान का सूचना पत्रक नहीं मिला है।

बम्बई में दो दिन रहा, वहाँ के मित्रों के चेहरे और स्वागत सत्कार के दृश्य आँखों के सामने घूम रहे हैं।
बम्बई स्टेशन पर उतरकर जब बाहर हो रहा था, इस काँग्रेस की भारतीय शाखा के श्री बरखेदकर मिले। उन्होंने मेरी कोटवाली तस्वीर देखी थी, अतः हिचकिचा रहे थे, किंतु मेरे मोटे चश्मे ने उनकी झिझक दूर की। उन्होंने मसानी का सलाम कहा, किंतु मैं तो पहले से ही तय कर चुका था, मैं पृथ्वीराजजी के साथ ठहरूँगा। अतः सीधे भाटूँगा!

पृथ्वीराज जी, उनकी धर्मपत्नी रमाजी, बेटे शमी और शशि और बेटी उसी के स्नेह से अब भी अभिभूत हो रहा हूँ। शमी ने अपने स्वाभाविक नाटकीय ढंग से कहा था—चाचाजी, वहाँ एक चपरासी भी लेते चलिए!

जब मसानी से उनके दफ़्तर में मिला, हिंदी में ही बातें शुरु हुई! हमलोग सदा हिंदी में ही बातें करते आए हैं, तब भी, जब वह मुश्किल से हिंदी में बोल सकते थे।

हमारी विदाई के लिए जो समारोह हुआ था, उसमें अशोक और पुरुषोत्तम आए थे। पुरुषोत्तम ने उलहूना दिया—मेरे यहाँ नहीं ठहरे! और अशोक के सिर पर पूरी बम्बई पार्टी कीहमारी बिदाई के लिए जो समारोह हुआ था, उसमें अशोक और पुरुषोत्तम आए थे। पुरुषोत्तम ने उलहना दिया—मेरे यहाँ नहीं ठहरे! और अशोक के सिर पर पूरी बम्बई पार्टी की ज़िम्मेवारी; तो भी, मेरे ही कारण वहाँ आए थे, ऐसा उन्होंने स्नेह से कहा!

देवेंद्र मेरे साथ गया था, पीछे वीरेंद्र भी गए थे। शीला को पहुँचाने बालाजी आए थे। शिशिर आजकल बम्बई में ही हैं, कल से ही साथ में लगे हैं। देवघर का इंद्रनारायण सम्मेलन में काम करता था; अख़बारों में आज भोर को मेरे; जाने की सूचना पढ़ी थी। वह अपने साथ एक सज्जन को लेते आया था। उसी सज्जन, श्री मुकुन्द गोस्वामी के मगही पान के बीड़े चाभता उड़ा जा रहा हूँ।

किंतु, यह पान कब तक चलेगा, कहाँ तक चलेगा? ज़्यादा से ज़्यादा काहिरा तक तो क्यों नहीं सिगरेट शुरु कर दूँ। पिछले छः सात महीनों से सिगरेट छोड़ रखा था, और पान पर ही काटे जा रहा था। किंतु यूरोप में पान कहाँ? अतः बम्बई में ही दो दिन सिगरेट के ख़रीद लिए। किंतु, यह क्या? सिगरेट जलाता हूँ, तो मुँह में अजीब स्वाद लगता है! कुछ मज़ा नहीं आ रहा है। लेकिन, आएगा, आएगा! पुरानी चीज़ भी नया अभ्यास खोजती है न?

अंधकार फैल रहा है। प्लेन की बत्तियाँ जल रही हैं। उधर होस्टेस खाने के लिए हर सीट के सामने सँकरा टेबुल सजा रही है। चलो बेनीपुरी, हाथ-मुँह धोओ, खाओ-पीओ और सोओ। बहुत थके हों! पेरिस घूँघट उठाए तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही होगी; फिर वहाँ विश्राम कहाँ? हाँ, शांति और क्लान्ति भी नहीं होगी वहाँ; किंतु उस रास-हास के लिए भी तो शक्ति-संचय आवश्यक है!

*****

स्रोत : पुस्तक : उड़ते चलो उड़ते चलो (पृष्ठ 1) रचनाकार : रामवृक्ष बेनीपुरी प्रकाशन : प्रभात प्रेस लिमिटेड, पटना संस्करण : 1954

शिक्षा संवाद
2022, 9 (1-2): 80-89
ISSN: 2348-5558
©2022, संपादक, शिक्षा संवाद, नई दिल्ली

कविता

किरोव हमारे साथ है

निकोलाई तिखोनोव

गहन उदासी धुँधले हुए घरों की

दिखे नींद में किसी अशुभ सपने-सी
निर्दय अँधियारा लेनिनग्राद का

लेता झपकी
गहरा सन्नाटा डाल रहा है घेरा

नीरवता को एक कराह कँपा जाती है
बजा सायरन

हमें तुरत चलना है
नदी तीर पर फटते गोले

हो-हल्ला है
अर्ध निशा में गोले ज्यों ही पगलाते हैं

अर्ध निशा में गोले ज्यों ही कान भेद
नीचे आते हैं

लेनिनग्राद की कठिन रात में
किरोव घूमता है नगरी में

जब वह रेजीमेंट पहुँचता
इतने शांत भाव से चलता

जैसे कोई नहीं शीघ्रता
जब वह युद्धभूमि में आता

टोपी का तारा लाल दहकता
आँखें ज्वाला-कण बरसातीं

जनता के प्रति मन में करुणा
गर्व भरा उसके साहस का

लेनिनग्राद की नाविक एक चौकसी करता
देख रहा है सरिता के नियमित बहाव को

उसके चेहरे पर पढ़ता अपना किरोव है वही कहानी
जो कि जाननी उसने चाही

करके याद
अपने कैस्पियन बेड़े पर तैनात नाविकों की

जो लड़े कभी थे अस्त्राखान के मैदानों में
और वोल्गा के विस्तीर्ण ढलानों पर

किरोव देखता है उसमें
फिर वही अनिर्वचनीय आग

फिर वही वीरता भरे अंग
अँधकार से उभर सर्चलाइट आती है

उस नाविक की टोपी तभी चमक जाती है
तेज़ रोशनी में किरोव है

जिसका नाम विजय है
फटकर गिर पड़ती महराबें

घर दीवारें भूमि चूमते
लेनिनग्राद की कठिन रात में

किरोव घूमता है नगरी में
एक भयंकर सच्चा योद्धा

चुपचुप फिरता है नगरी में
बहुत रात तक कड़ी बर्फ़ पर धीरे-धीरे

जैसे थका हुआ हो किसी क़िलेबंदी के श्रम से
यहाँ नहीं अब पारी चलतीं

यहाँ नहीं आराम रहा है
नींदें ग़ायब

लोगों के दिल धड़का करते
किंतु न भय से

बूँद पसीने की दुखती पलकों पर गिरतीं
सिर के ऊपर घहराकर गोले फटते हैं

किंतु आत्मा की पुकार पर
लोग काम करते रहते हैं

भूल थकावट भय को
डर केवल पलभर रहता है

सुनो ज़रा यह
भूरे बालों वाला बूढ़ा क्या कहता है

अपने सच्चे दिल से
चाहे शोरबा में ज़्यादा पानी मिल जाए

रोटी की क़ीमत चाहे सोने-सी हो जाए
अडिग रहो ऐसे जैसे फ़ौलाद ढले हम

बनो बहादुर
इस थकान को कभी बाद में हम देखेंगे

गर्वित दुश्मन
हमें कुचलने में अब तक नाकाम रहा है

भूखा हमें मार देने की
अब उसने यह चाल चली है

लेनिनग्राद को अलग काट कर रखे रूस से
बंदी बना सभी को डाले

लेकिन नेवा के पवित्र तट
शपथ तुम्हारी

रूसी मज़दूरों को पंक्ति तोड़ते
या दुश्मन के आगे अपना शीश झुकाते

पूरी ताक़त से हथियार नए ढालेंगे
दुश्मन का घेरा तोड़ेंगे

अपने दुर्दमनीय कर्म से
ठीक कह रहे हैं वे :

हम किरोव का नाम गर्व से अपनाए
लेनिनग्राद की कठिन रात में

किरोव घूमता है नगरी में
ख़ुश होता है

उसके लोग नहीं हारे हैं
खड़े हर जगह मज़बूती से

मातृभूमि की रक्षा करते
घेरा डाल गरजती तोपें

घातक विस्फोट पास में होते
थोक भाव से गिरते गोले

घिरा धुएँ से
डगमग करता

गिरा एक घर है धड़ाम से
तभी एक लड़की अपनी टुकड़ी को लेकर

बिना शिकन लाए माथे पर
करने मदद पहुँच जाती है

परवा नहीं कि कड़ियाँ गिरतीं
या दीवारें

ईंटे धसक ज़मीं पर आतीं
बिना मृत्यु भय के फ़ुर्ती से वह चढ़ जाती

वक्त गुज़रने से पहले ही दबे हुओं को
मलबे से बाहर ले आती

यहाँ तरुणता
यहाँ हर्ष और भय है

नियति क्रुद्ध है
फिर भी अपराजेय हृदय है

लेनिनग्राद की कठिन रात में
किरोव घूमता है नगरी में

नेता और सैनिक
हाँक लगाने वाले इस सोवियत काल के

उसने देखे
हिम-आच्छादित काज़वेक पर्वतमाला पर

या अँधकार में छिपे हुए संघर्ष निरत
उसने देखी

लंबी रातें स्टेपी की
अस्त्राखान की आग भयंकर नीली-नीली

सारे पथ पर ऐसी लगती जैसे तेग मचलती
वे ख़ून ख़राबी के दिन उसने देखे

उसका मन कोमल-कठोर था
उसने कितने ही पथ जीते

उसकी थी उपलब्धि—
युद्ध पीड़ा निस्सीम गगन ख़तरे चिताएँ सब

उसका आत्म बोलशेविक था
वह महान् के महा तत्त्व का अनुरागी था

इस महान् मेहनतकश लेनिनग्राद नगर को
उसने सबसे ज़्यादा चाहा

उसका अंतिम प्यार यही था
किंतु शीघ्र ही उसका आख़िरी दिन आया

गोली एक बुला लाई जाकर मृत्यु को
यहीं मक़बरे में उसको हमने दफ़नाया

नेता मित्र पिता सबने उसकी जय-जय की
अपना काम पूर्ण मेधा से

और वीरता से
उसने संपन्न किया था

उसके केवल नाममात्र से
बाहों में प्राणों में शक्ति-स्फुरण होता

अब भी वह
प्रत्येक गली के अवरोधों तक

खाई खंदक द्वारों
और नगर-पार की सीमाओं तक

लेनिनग्राद की कठिन रात में जाता
देखा करता है रुक-रुक कर

झिलमिल करते राकेटों को
निशि के प्रथम पहर की गोलाबारी

जर्मन सेना की छिपी खंदकों
और कैंपों को

जहाँ भरी उनकी सामग्री
स्वचालित हथियारों में से

चाक़ू जैसी लपट निकलती
कवच सरीखे टैंक पड़े छितराए

क्या अपना वीरत्व छोड
घर ख़ाली कर

दुश्मन का पेट भरोगे
उसकी इच्छा पर

अपनी बेटी उसके बिस्तर पर भेजोगे
पहन स्त्रियों के लूटे फर

घातक हथियारों से सज्जित
रौंदे खेतों में से होकर

गंध तुम्हारे चूल्हे की
लेने आता है दुश्मन

सुनते ही उसकी पुकार को
तुरत हमारे लोग मार्ग अवरुद्ध बनाते

एक वृद्ध लँगड़ाता लेता है हथगोला
अकेला वह सबसे निपटेगा

मैदानों में जहाँ बर्फ़ के ढेर लगे हैं
बढ़ जाते हैं टैंक

युद्ध का जहाँ मोर्चा
एक बुर्ज से स्वर आता है मातृभूमि का

और दूसरे पर किरोव दिखलाई पड़ता
तस्कर गोलाबारी की दारुण रातों में

अधम जर्मनों के घेरे को खंडित करने
दृढ़ संकल्पी लेनिनग्राद निवासी जाते लड़ने

ऊपर लाल ध्वजा फहराती
है विजयी तोरण-सी

प्रेरित करता है
किरोव का नाम भयंकर

लेनिनग्रादी सेनाएँ आगे को बढ़तीं।

*****

स्रोत : पुस्तक : एक सौ एक सोवियत कविताएँ (पृष्ठ 121) रचनाकार : निकोलाई तिखोनोव प्रकाशन : नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली संस्करण : 1975

This page is intentionally left blank

संपर्क
शिक्षा संवाद
RZ-673/135, गली न. 19A, साध नगर, पार्ट -2, पालम कालोनी, नई दिल्ली 110045.
दूरभाष - 09868210822. (सम्पादक),
ई मेल - SHEAKSHIKSAMWAD@GMAIL.COM